https://www.studiestoday.com

कक्षा-10

मन्थनम्

द्वितीयो भागः

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : ₹ 38.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना – 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा बब्लू बाईंडिंग हाउस, पटना कोल्ड स्टोरेज, पटना-800006 द्वारा 5000 प्रतियाँ मुद्रित ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल 2013 से राज्य के कक्षा IX एव X हेतु ऐच्छिक विषयों का पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस संदर्भ में एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना द्वारा विकसित प्रस्तुत पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की जा रही है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री जीतन राम मांझी, शिक्षामंत्री, श्री वृशिण पटेल एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री आर०के० महाजन के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना के निदेशक के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया ।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके ।

दिलीप कुमार, आई०टी०एस०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०,

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

संस्कृत पाठ्यचर्या निर्माण समिति

1. अमरजीत सिन्हा : प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना
2. राहुल सिंह : राज्य परियोजना निदेशक, बिहार माध्यमिक शिक्षा परिषद्, बिहार, पटना
3. हसन वारिस : निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना
4. डॉ॰ सैय्यद अब्दुल मुईन : विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना
5. डॉ॰ ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी : सदस्य, पाठ्यक्रम सह पाठ्य-पुस्तक विकास समिति, बिहार, पटना

अध्यक्ष – डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
(राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)

समन्वयक – डॉ. रीता राय, व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना

लेखक सदस्य :

1. **डॉ. मधु बाला सिन्हा**
   सहायक प्रोफेसर (संस्कृत), राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, काजीपुर, पटना ।
2. **श्री शंभू राय**
   सहायक शिक्षक (संस्कृत), राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलजारबाग, पटना सिटी, पटना –7
3. **डॉ. शहिद आलम**
   राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सुन्दरपट्टी, पकड़ीदयाल, पूर्वी चम्पारण ।
4. **डॉ. बिभाष चन्द्र**
   सहायक शिक्षक (संस्कृत), शहीद राजेन्द्र प्रसाद सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, (पटना हाई स्कूल), गर्दनीबाग, पटना–2
5. **श्रीमती प्रियंका**
   सहायक शिक्षिका (संस्कृत), अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय, उसफा, पटना ।

संस्कृत पाठ्य-पुस्तक समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

डॉ. रामगुलाम मिश्र
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अशोक कुमार
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पुरोवाक्

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं चैव संस्कृतिः

पुस्तकमिदं राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः रूपरेखां (2005 ई०) किञ्च बिहारपाठ्यचर्यायाः रूपरेखां (2008 ई०) मनसिकृत्य नवीनं पाठ्यक्रमम् आश्रित्य प्रस्तुतं वर्तते । पुस्तकनिर्माणे शिक्षायाः निम्नांकितं तात्पर्यं सम्यक् विचारितमस्ति । तथाहि – शिक्षायाः मौलिकः अर्थः विद्यालयशिक्षार्थिनां तादृशं क्षमत्वं वर्तते यत् ते स्वजीवनस्य यथार्थम् उद्देश्यं जानीयुः, स्वस्य सकलयोग्यतानां समुचितं विकासं कुर्युः, जीवनस्य लक्ष्यं निरूपयेयुः तथा तल्लब्धुं यथाशक्यं सार्थकं प्रभावकं च प्रयासं कुर्युः । अपि च इदमपि ज्ञातु क्षमाः स्युः यत् समाजस्य अन्येऽपि जनाः तादृशमेव कर्तुं पूर्णमधिकारं धारयन्ति । उपर्युक्तं रूपरेखाद्वयम् अस्मान् ज्ञापयति यत् शिक्षार्थिनः विद्यालयजीवने बहिरङ्गजीवने च न भवेत् किमपि अन्तरालम् । पुस्तकसंसारः बाह्यसंसारश्च परस्परं ग्रथितौ स्याताम् ।

पुस्तकेऽस्मिन् शिक्षार्थिनां कल्पनाशक्तिविकासः, तेषां गतिविधीनां रचनाशीलता, प्रश्नान् कर्तुम् उत्तराणि च प्राप्तुं तेषां मौलिकाधिकारस्य समुचितं संरक्षणं, तांश्च रचनात्मिकां दिशं प्रवर्तयितुं सुतरां प्रयासः वर्तते । नूनमस्मिन् शिक्षार्थिभिः सह शिक्षकाणामपि संलग्नता भवेत् । छात्रान् प्रति संवेदना-सहानुभूतिभ्यां सह तैरपि पुस्तके सक्रियः सहभागो वर्तनीयः ।

साम्प्रतं संस्कृतभाषायाः तस्यां रचितस्य वाङ्मयस्य च महत्त्वं सर्वत्र स्वीक्रियते । ज्ञानविज्ञानक्षेत्रेषु असंख्याः ग्रन्थाः तस्यां विराजन्ते । अस्मिन् विज्ञानप्रवाहमण्डितेऽपि काले

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

संस्कृतस्य महत्त्वं न न्यूनीकृतमस्ति, यतः इयमेव प्राचीनतमा भाषा नवीनानपि विषयान् आलिङ्ग्य निरन्तरं प्रवर्तते । अस्याः भाषायाः व्यापकत्वं संगणकयुगे सुतराम् अनुभूयते, यतः कोटिशः पारिभाषिकान् शब्दान् जनयितुं सामर्थ्यम् अस्यामेव भाषायां वर्तते नान्यत्र ।

संस्कृतभाषायाः शिक्षणं भारते वर्षे विविधैः प्रकारैः भवति । प्रायशः सर्वेषु भारतीयराज्येषु विद्यालयस्तरेण संस्कृतभाषायाः शिक्षणं दृश्यते । किन्तु विषयवस्तुनिरूपणे पाठ्यक्रमस्य छात्र-परिवेशस्य च अन्तरालं विपुलमासीत् इति राष्ट्रियपाठ्यचर्यायां तस्य निराकरणं प्रतिज्ञातम् । तदाश्रितानि पाठ्यपुस्तकानि परिवेशस्य संग्रहणमपि स्वीकुर्वन्ति । संस्कृतविषयस्य अनुशीलने बिहारराज्येऽपि राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः अनुसरणं भवेदिति अस्माकं संकल्पः । ततः छात्रकेन्द्रिता शिक्षाव्यवस्था अत्रापि प्रवर्तते ।

अस्माकं प्रयासः तदैव संफलीभवेत् यदा विद्यालय-प्राचार्याः शिक्षकाः अभिभावकाश्च विषयेऽस्मिन् सहयोगिनः स्युः । एते सर्वेऽपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाविकासाय, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रेरयेयुः । यदि च अनुकूला सुरुचिपूर्णा पाठसामग्री प्रस्तूयेत, तदा छात्राः परिवारस्य अग्रजैः अभिभावकैः, विद्यालयस्य च शिक्षकैः प्रदत्तस्य स्वानुभूतज्ञानेन आत्मनः पूर्वार्जितं ज्ञानं संयोज्य किमपि योग्यतरं नवीनं ज्ञानं प्राप्नुयुः । एवमेव परीक्षायाः आधारोऽपि व्यापकः स्यात् । पुस्तकाधारितं ज्ञानमेव न पर्याप्तं प्रत्युत छात्रस्य सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च विकासः अपि तत्र अनिवार्यतया ग्रहणीयः । अनेन क्रमेण शिक्षणप्रक्रियायां छात्राः अपि प्रतिभागिनः भवन्ति इति न सन्देहः ।

राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य विशेषस्थितेश्च दृष्ट्या तथाभूतानि पाठ्यपुस्तकानि

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अस्माभि: निर्मितानि यत्र उपर्युक्त: सर्वोऽपि कार्यक्रम: अङ्गीभूत: । संस्कृतशिक्षाया: नवमकक्षाया: कृते ऐच्छिक-विषयरूपेण पाठ्यपुस्तकमिदं छात्रेभ्य: चिन्तनस्य उत्सुकतावृद्धे: लघुसमूहेषु वार्ताया: कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च पर्याप्तम् अवसरं प्रदास्यति । यथापूर्वम् इहापि द्रुतवाचनाय अनुपूरकसामग्री प्रदत्ता ।

बिहारराज्यशैक्षिकानुसन्धान प्रशिक्षण-परिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृतपाठ्यपुस्तक-विकाससमिते: अध्यक्षाय विद्वद्वरेण्याय डा. उमाशंकरशर्मणे तत्सहायकेभ्य: प्रतिभागिभ्यश्च भूरिश: साधुवादं वितरति स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति ।

प्रवर्ततां पुस्तकमिदं संस्कृतहिताय ।

हसन वारिस

निदेशक:

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार:

• • •

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भूमिका

आज संसार की समस्त उपलब्ध भाषाओं में सर्वाधिक प्राचीन तथा सबसे लम्बी ऐतिहासिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परम्परा की भाषा संस्कृत ही है। ऋग्वेद के समय से अद्यावधि निरन्तर इसका वाचिक-साहित्यिक प्रयोग होता रहा है। भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं का वहन इसके ग्रन्थों द्वारा होता रहा है। भारतीयों के हृदय में श्रद्धा तथा आदर का भाव धारण करने वाली यह भाषा विदेशी विद्वानों के द्वारा भी पर्याप्त समादृत हुई है। संस्कृत के पठन-पाठन की व्यवस्था भारत के प्रायः सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में वर्तमान है तथा विदेशों में भी प्राच्य विद्या या भारतीय विद्या के अन्तर्गत इसके अनुशीलन की मौलिक व्यवस्था है। भारत की बंगला, उड़िया, असमिया, हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, डोगरी, नेपाली आदि भाषाएँ संस्कृत से साक्षात् निकली हैं। दक्षिण भारतीय भाषाएँ भी अपनी शब्द-सम्पत्ति के लिए संस्कृत पर विपुल रूप से आश्रित हैं।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में संस्कृत का भाषाशास्त्रीय उपयोग व्यापक रूप से दिखाई पड़ता है। ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय भाषाएँ उनके सिद्धान्तों की व्याख्या करती हैं जबकि पारिभाषिक शब्दावली के लिए उनमें संस्कृत का आधार ही आलोकस्तम्भ है। भारत की बहुभाषिकता में विभिन्न भाषाओं के मौलिक सेतु के रूप में संस्कृत ही एक मध्यस्थ भाषा का काम करती है। भाषाओं के बीच अनुवाद का कार्य संस्कृत को आधार बनाने से सरल हो जाता है।

संस्कृत में शब्द-निर्माण की क्षमता संसार की सभी भाषाओं से अधिक है। हजारों

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

धातुओं, प्रत्ययों, उपसर्गों तथा उनसे सम्बद्ध अर्थों की व्यवस्था इसमें इतनी वैज्ञानिक है कि कोई भी नवशिक्षार्थी अपनी सुविधा के अनुसार हजारों नवीन शब्दों की रचना कर सकता है । इसलिए आज विश्वभर में पारिभाषिक शब्दावली के लिए भविष्य का विज्ञानजगत् संस्कृत की ओर उन्मुख है । उपसर्गों और प्रत्ययों के योग से एक-एक धातु से सैकड़ों शब्द बन सकते हैं । फिर भी आज के भौतिकता-प्रधान बाजारवाद से प्रभावित युग में संस्कृत को पहले की अपेक्षा अनेक संघर्ष और प्रतिघात झेलने पड़ रहे हैं । किन्तु इसकी मौलिक जीवनी शक्ति इतनी प्रबल है कि नयी-नयी साहित्यिक-शास्त्रीय रचनाओं के अंकुर तथा प्रवाल निरन्तर फूटते रहते हैं । पिछले एक सौ वर्षों में जितनी संस्कृत रचनाएँ हुई हैं वे इसका मुखर प्रमाण हैं । भारत के सभी राज्यों में संस्कृत रचनाएँ हो रही हैं, यह संस्कृत शिक्षा का सर्जनात्मक परिणाम है । पूरे राष्ट्र का (केवल एक क्षेत्र या प्रान्त का नहीं) प्रतिनिधित्व संस्कृत भाषा के ही द्वारा सम्भव है । हमें ज्ञात है कि संस्कृत भाषा में लिखे गये पुराणों ने सम्पूर्ण भारत-राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता का व्यापक प्रमाण दिया है जिससे भारत की सांस्कृतिक एकता आज भी सुरक्षित है अन्यथा राजनीति और क्षेत्रीय स्वार्थवश भारत अनेक खण्डों में रह जाता ।

किसी भी आधुनिक सम्पन्न भाषा में जो विशेषताएँ, जैसा साहित्यसर्जन और जिस प्रकार वैविध्य हो सकता है वह सब संस्कृत में विद्यमान है । विद्वानों का एक समृद्ध वर्ग स्वीकार करता है कि संगणक (Computer) के लिए भावी भाषा के रूप में संस्कृत में अपार सम्भावनाएँ हैं । परिणामतः भौतिकवादी युग भी संस्कृत के महत्त्व की उपेक्षा नहीं कर सकता । प्राचीनता और आधुनिकता का समन्वय संस्कृत में बहुत तेजी से हो

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रहा है । संस्कृत द्वारा हम अपनी प्राचीन संस्कृति के गौरव को तो जान ही सकते हैं आधुनिक विषयों को भी इसके द्वारा आत्मसात् कर सकते हैं । अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा की अपेक्षा यह अपने देश की प्राचीनतम सांस्कृतिक भाषा है । अत: इसके अनिवार्य अनुशीलन की आवश्यकता है ।

ऊपर कहा गया है कि भारत की बहुभाषिकता की दृष्टि से संस्कृत का उपयोग है । बिहार राज्य के सन्दर्भ में यह बहुभाषिकता मैथिली, भोजपुरी, मगही एवं उनकी अंगरूप (अँगिका वज्जिका आदि) भाषाओं तक सीमित है । ये भाषाएँ संस्कृत से तद्भव रूप में ही सही, अपनी शब्दसम्पत्ति, व्याकरण तथा वाक्यरचना को साक्षात् ग्रहण करती हैं । इसलिए बिहार के परिवेश में संस्कृत के अनुशीलन का अत्यधिक महत्त्व है ।

संस्कृत का नवीन पाठ्यक्रम राष्ट्रिय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005 ई.) के आलोक में ही हमलोगों ने प्रस्तुत किया है जिसमें शिक्षा को मुख्यत: आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में प्रस्तुत करना प्रतिज्ञात है तथा कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हट कर छात्रों को स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित करने का उद्देश्य रखा गया है । नवम कक्षा में ऐच्छिक विषय के रूप में जो संस्कृत रखी गयी है वह विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक है । मुख्य संस्कृत विषय के समान इसमें भी प्रत्येक पाठ विविध उपकरणों से समन्वित है जैसे शब्दार्थ, व्याकरण, लिखित तथा मौखिक अभ्यास एवं योग्यता-विस्तार ।

दशम कक्षा के लिए प्रस्तुत संस्कृत (ऐच्छिक) की यह पुस्तक भी नवम कक्षा के समान आठ मूल पाठों से युक्त है किन्तु इसमें द्रुतवाचन के लिए तीन पाठ दिये गये

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हैं । मूल पाठों में चार गद्यात्मक तथा चार पद्यात्मक हैं । इन पाठों में विभिन्न रुचियों तथा विषयों का समाकलन हुआ है । गद्य पाठों में प्रथम **प्रजातन्त्रम्** है जो आज की प्रसिद्ध शासन-पद्धति का परिचय देता है । दूसरा पाठ **लक्ष्यैकदृष्टिः** है जिसमें एक मण्डूक की कथा द्वारा यह संदेश दिया गया है कि जीवन के किसी काम में लक्ष्य पर ध्यान रखने से सफलता मिलती है । तीसरा गद्य पाठ नाटकात्मक है जिसका शीर्षक **वणिग्वैद्ययोः वार्तालापः** है । इसमें दिखाया गया है कि लोक में जो प्रवाद फैलता है, वास्तविकता वैसी नहीं होती । सुख-दुःख में सभी सहभागी और समान हैं । चौथा गद्य पाठ भारत के प्रथम राष्ट्रपति के जीवन-परिचय से सम्बद्ध **डॉ॰ राजेन्द्र प्रसादः** है ।

पद्य पाठों में **सुभाषितानि** संस्कृत के कुछ सुभाषित श्लोकों का संग्रह है जो जीवन के विभिन्न स्तरों में मार्गदर्शक हैं । दूसरा पद्य पाठ **वनस्पति-परिचयः** है जिसमें सात लाभदायक वनस्पतियों का सरल श्लोकों में वर्णन है । तीसरा पद्य पाठ **दिवास्वप्नः** है जिसमें पञ्चतन्त्र की एक प्राचीन कथा का पद्य में पुनः पाठ प्रस्तुत किया गया है । इसमें सन्देश है कि अनर्गल तथा असंभव चिन्तन न करके संभाव्य विषयों पर ही ध्यान केन्द्रित करें । अन्तिम पद्य पाठ **विभक्तिश्लोकाः** है जिसमें प्रथमा से लेकर सप्तमी विभक्ति तक के शब्दों का एक-एक श्लोक में संचयन किया गया है । यह छात्रों के लिए मनोरंजक होगा ।

द्रुतवाचन के अन्तर्गत तीन पाठों में राजगृह का परिचय, हास्यपूर्ण कथानक एवं छात्रों की दिनचर्या से सम्बद्ध मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री दी गयी है ।

व्याकरण एवं रचना भाग में नवम कक्षा से विषयवस्तु को आगे बढ़ाते हुए

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सन्धि, शब्दरूप, धातुरूप, कारक तथा विभिन्न प्रत्ययों का परिचय दिया गया है। पुनः कुछ आदर्श निबन्ध और पत्रलेखन के ढाँचे भी दिये गये हैं जिनसे छात्र अपनी रचनात्मक शक्ति का विकास कर सकें।

पाठ्यपुस्तक को यथासाध्य उपयोगी बनाया गया है। विभिन्न कार्यशालाओं में प्रतिभागियों ने परिश्रमपूर्वक सामग्री का चयन, लेखन तथा परिष्कृति का सफल प्रयास किया है। छात्रों की रुचि संस्कृत में बढ़े इसका पूरा ध्यान रखा गया है। यदि इससे छात्रों में संस्कृत समझने, बोलने और लिखने की प्रवृत्ति बढ़े तो हम अपना प्रयास सार्थक समझेंगे।

उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
अध्यक्ष
संस्कृत पाठ्य-पुस्तक विकास-समिति

***

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विषयानुक्रमणिका

क्र:	पाठ:	पृष्ठाङ्काः
	(क) प्रस्तावना	3-7
	(ख) भूमिका	8-13
	(ग) मङ्गलम्	14-15
1.	प्रजातन्त्रम्	16-28
2.	सुभाषितानि	29-40
3.	लक्ष्यैकदृष्टिः	41-53
4.	वनस्पतिपरिचयः	54-63
5.	वणिग्वैद्ययोः वार्त्तालापः	64-82
6.	दिवास्वप्नः	83-94
7.	डॉ. राजेन्द्रप्रसादः	95-109
8.	विभक्तिश्लोकाः	110-119
	द्रुतवाचनम्	**120-153**
1.	राजगृहम्	120-127
2.	हास्यकणिकाः	128-140
3.	छात्रचर्या	141-153
	व्याकरणं रचना च	**154-181**
(क)	सन्धिः – हल्सन्धिः, विसर्गसन्धिः	154-160
(ख)	शब्दरूपाणि	161-164
(ग)	धातुरूपाणि	165-171
(घ)	कारकाणि	172-174
(ङ)	प्रत्ययाः	175-181
	निबन्धाः /पत्रलेखनम्	**182-192**

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मङ्गलम्

1. यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः ।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ॥ (अथर्ववेद 12.1.3)

2. यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः ।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु ॥2॥ (अथर्ववेद 12.1.4)

3. जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम् ।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥3॥ (अथर्ववेद 12.1.45)

1. जिस (भूमि) में महासागर, नदियाँ और जलाशय (झील, सरोवर आदि) विद्यमान हैं, जिसमें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ उपजते हैं तथा कृषि, व्यापार आदि करनेवाले लोग सामाजिक संगठन बना कर रहते हैं (कृष्टयः सं बभूवुः), जिस (भूमि) में ये साँस लेते (प्राणत्) प्राणी चलते-फिरते हैं, वह मातृभूमि हमें प्रथम भोज्य पदार्थ (खाद्य-पेय) प्रदान करे ।

2. जिस भूमि में चार दिशाएँ तथा उपदिशाएँ अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ (फल, शाक आदि) उपजाती हैं, जहाँ कृषि-कार्य करने वाले सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं, (कृष्टयः सं बभूवुः), जो (भूमि) अनेक प्रकार के प्राणियों (साँस लेने वालों) तथा चलने-फिरने वाले जीवों को धारण करती है, वह मातृभूमि हमें जौ आदि लाभप्रद पशुओं तथा खाद्य पदार्थों के विषय में सम्पन्न बना दे ।

3. अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले तथा अनेक धर्मों को मानने

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वाले जन-समुदाय को, एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान, धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने देनेवाली (अनपस्फुरन्ती) स्थिर - जैसी यह पृथ्वी हमारे लिए धन की सहस्रों धाराओं का उसी प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती हो ।

◆◆◆

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रथमः पाठः

प्रजातन्त्रम्

[किसी देश के शासन को चलाने के लिए एक पद्धति या व्यवस्था होती है। बहुत पहले सर्वत्र राजा ही शासक होता था किन्तु वह वंशानुगत होने के कारण यदा-कदा दुर्बल और कभी तानाशाह भी हो जाता था। आज की स्थिति में प्रायः सभी देशों में प्रजातन्त्र शासनपद्धति प्रचलित है जहाँ जनता के प्रतिनिधि राज्य की व्यवस्था करते हैं। भारत में भी यही पद्धति हमारे संविधान के अनुसार स्वीकृत है। जनता के प्रतिनिधि के रूप में केन्द्र में "संसद" तथा राज्यों में 'विधानसभा' होती है। इनका निर्वाचन नियत समय पर होता है। प्रजातन्त्र सभी शासनपद्धतियों से श्रेष्ठ माना गया है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने प्रजातन्त्र का लक्षण दिया था कि जो सरकार जनता की, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा बनाई जाए वही प्रजातन्त्र है।]

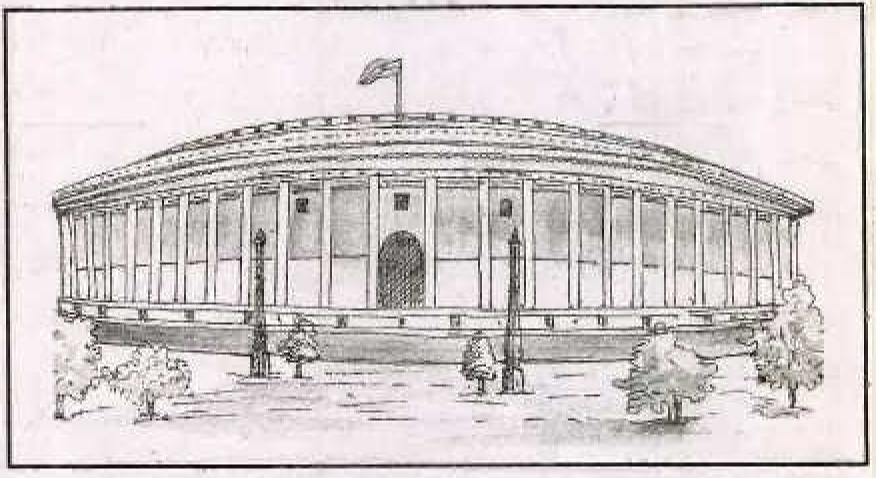

प्रजातन्त्रं लोकतन्त्रं जनतन्त्रं वापि कथ्यते। प्रजाभिः प्रजानां प्रजार्थं च शासनम् एव प्रजातन्त्रम्। आधुनिककाले प्रजातन्त्रस्य अतीव विकसितं स्वरूपं दृश्यते। प्रजातन्त्र-

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विधानस्य विकासः प्रधानतः इंग्लैण्डदेशवासिभिः मध्ययुगे सम्पादितः । किन्तु संसारस्य प्रायशः सर्वेषु देशेषु पुरापि प्रजातन्त्रं बीजरूपेण ईषद्विकसितरूपेण वा प्रतिष्ठितम् आसीत् । पुरा जनाः क्वचित् क्वचित् प्रजातन्त्रविधिना स्वसमूहस्य समाजस्य वा शासनं कुर्वन्ति स्म । अधुनापि वनप्रदेशवासिनः ग्रामवासिनः शिल्पव्यवसायिनश्च प्रजातन्त्र-विधिना अंशतः स्वकीयं शासनं स्वतः कुर्वन्ति ।

प्रजातन्त्रे बहवः गुणाः सन्ति । तस्मिन् कोऽपि योग्यः जनः सर्वोच्चपदं प्राप्तुमर्हति । अतएव स्वस्मिन् योग्यता आधेया इति विचारः सर्वेषामभ्युदयाय वर्तते । अन्येषु शासन-तन्त्रेषु शासनसत्ताधिकारिणो भयकारणं भवन्ति । प्रजातन्त्रे तु तथा न भवति । शासनाधिकारी मया निर्वाचितः इति विचारेण तस्माद् भयं न भवति । ते निरर्थकं शासनात् न बिभ्यति । वयमेव स्वकीये देशे सुशासनस्य व्यवस्थापका इति हर्षः भवति । कुशासनं चेद् भवेत् वयमेव कारणमस्येति तस्य दूरीकरणं जनैः कर्तुं शक्यते ।

प्रजातन्त्रं बहुजनैः कृतं शासनं भवति । प्रजानां प्रतिनिधयः तासां सुखार्थं सम्यक् चेष्टन्ते । प्रजानामावश्यकताः साक्षात् जानन्तः ते यथोचितं साधयन्ति । जनप्रतिनिधयः सभासु सम्यग् विविच्य प्रजाकल्याणं निरूपयन्ति । यदा विरोधिदलसदस्याः समालोचनां कुर्वन्ति तदा तत्त्वतः सत्यमार्गस्यानुसन्धानं भवति ।

प्रजातन्त्रशासने केचिद् दोषाः अपि सन्ति । प्रथमं तावत् अत्यधिकं व्ययसाध्यं भवति प्रजातन्त्रशासनस्य निर्वहणम् । प्रतिनिधीनां निर्वाचने, तेषां वेतने, यात्रादि-व्ययप्रदाने च प्रभूतः धनव्ययो भवति । अचिरस्थायि भवति प्रजातन्त्रशासनसूत्रम् । अर्धशिक्षितदेशेषु तु प्रजातन्त्रं नाममात्रेण भवति । मिथ्याप्रचारेण भ्रान्ताः प्रजाः प्रायेण अयोग्यान् प्रतिनिधीन् चिन्वन्ति ।

भारतमेव एकः देशो यत्र विश्वस्य सर्वाधिकाः जनाः प्रजातन्त्रशासनसूत्रेण निबद्धाः सन्ति । अतः प्रजातन्त्रशासनस्य साफल्यमस्मिन् देशे विशिष्टं महत्त्वं भजते ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थाः

कथ्यते	=	कहा जाता है
प्रजाभिः	=	प्रजा के द्वारा
प्रजानाम्	=	प्रजाओं का
प्रजार्थम्	=	प्रजा के लिए
प्रजातन्त्रम्	=	जनता के द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों से बनी शासन व्यवस्था
अतीव	=	बहुत अधिक
दृश्यते	=	दिखाई देता है
प्रजातन्त्रविधानस्य	=	प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का
सम्पादितः	=	किया गया
सर्वेषु देशेषु	=	सभी देशों में
पुरापि	=	प्राचीन काल में भी
ईषद्विकसितरूपेण	=	कुछ विकसित रूप में
प्रतिष्ठितम्	=	स्थापित
क्वचित् क्वचित्	=	कहीं-कहीं
स्वसमूहस्य	=	अपने समूह का
अधुनापि	=	आजकल भी
वनप्रदेशवासिनः	=	वनक्षेत्र में निवास करने वाले

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शिल्पव्यवसायिनः= शिल्पजीवी

स्वकीयं शासनम् = अपना शासन

स्वतः = अपने आप, स्वयं

बहवः = अनेक

तस्मिन् = उसमें

कोऽपि = कोई भी

प्राप्तुमर्हति = पा सकता है

अतएव = इसीलिए

स्वस्मिन् = अपने में

आधेया = धारण करना चाहिए

सर्वेषामभ्युदयाय = सभी के उत्थान, विकास के लिए

अन्येषु शासनतन्त्रेषु = दूसरी शासनव्यवस्थाओं में

शासनसत्ताधिकारिणः = शासन-सत्ता (व्यवस्था) के अधिकारी

भयकारणम् = भय का कारण

भवन्ति = होते हैं

तु = तो

तथा = वैसा

मया निर्वाचितः = मेरे द्वारा चुना गया

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

इति	=	ऐसा, ऐसे
विचारेण	=	विचार, सोच से
तस्माद्	=	उससे
निरर्थकम्	=	बेकार, व्यर्थ
शासनात्	=	शासन से
न बिभ्यति	=	नहीं डरते हैं
वयमेव	=	हमलोग ही
स्वकीये देशे	=	अपने देश में
सुशासनस्य	=	अच्छे शासन का
हर्षः	=	प्रसन्नता
कुशासनम्	=	बुरा, खराब शासन
दूरीकरणम्	=	हटाने का कार्य
जनैः	=	लोगों के द्वारा
कर्तुं शक्यते	=	किया जा सकता है
बहुजनैः	=	अनेक लोगों के द्वारा
कृतम्	=	किया गया
प्रतिनिधयः	=	प्रतिनिधि, किसी के बदले में आनेवाले
तासाम्	=	उनके, उनकी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सुखार्थम्	=	सुख के लिए
सम्यक्	=	ठीक से, अच्छे ढंग से
चेष्टन्ते	=	प्रयास करते हैं
साक्षात्	=	प्रत्यक्ष
जानन्तः	=	जानते हुए
यथोचितम्	=	जहाँ तक हो सके
साधयन्ति	=	पूर्ण करते हैं
सभासु	=	सभाओं में
विविच्य	=	विचार करके
निरूपयन्ति	=	निर्धारित करते हैं
विरोधिदलसदस्याः	=	विपक्षी दल के सदस्य
तत्त्वतः	=	यथार्थ, वस्तुतः
व्ययसाध्यम्	=	बहुत धन से पूरा होनेवाला
निर्वहणम्	=	निर्वाह
तेषाम्	=	उनके
अचिरस्थायि	=	कम समय तक रहनेवाला
अर्धशिक्षितदेशेषु	=	अर्ध (कम) शिक्षित देशों में
मिथ्याप्रचारेण	=	झूठे प्रचार से

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भ्रान्ताः	=	दिशाहीनता को प्राप्त
अयोग्यान्	=	अयोग्य लोगों (को)
प्रतिनिधीन्	=	प्रतिनिधियों को
चिन्वन्ति	=	चुनते हैं
यत्र	=	जहाँ
सर्वाधिकाः	=	सबसे अधिक
निबद्धाः	=	बँधे हुए
साफल्यम्	=	सफलता
भजते	=	धारण करता है

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः पदविच्छेदः वा -

ईषद्विकसितरूपेण	=	ईषत् + विकसितरूपेण (व्यञ्जनसन्धिः)
अधुनापि	=	अधुना+अपि (दीर्घसन्धिः)
शिल्पव्यवसायिनश्च	=	शिल्पव्यवसायिनः+ च (विसर्गसन्धिः)
कोऽपि	=	कः +अपि (विसर्गसन्धिः, पूर्वरूपसन्धिः)
सर्वोच्चपदम्	=	सर्व + उच्चपदम् (गुणसन्धिः)
प्राप्तुमर्हति	=	प्राप्तुम् + अर्हति
सर्वेषामभ्युदयाय	=	सर्वेषाम् + अभ्युदयाय
कारणमस्येति	=	कारणम् + अस्य + इति (संहिता, गुणसन्धिः)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रजानामावश्यकता = प्रजानाम् + आवश्यकता

यथोचितम् = यथा + उचितम् (गुणसन्धिः)

सत्यमार्गस्यानुसन्धानम् = सत्यमार्गस्य + अनुसन्धानम् (दीर्घसन्धिः)

साफल्यमस्मिन् = साफल्यम् + अस्मिन्

पकृति–प्रत्यय–विभागः

कथ्यते = √कथ + कर्मवाच्य, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

दृश्यते = √दृश् + कर्मवाच्य, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

सम्पादितः = सम् + √पद् + णिच् + क्तः पुं., एकवचनम्

आसीत् = √अस् , लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

कुर्वन्ति = √कृ , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

सन्ति = √अस् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

अर्हति = √अर्ह , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

आधेया = आ + √धा + यत्, स्त्री०, एकवचनम्

वर्तते = √वृत् , आत्मनेपदी, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

निर्वाचितः = निर् + √वच् +णिच् + क्तः पुं., एकवचनम्

भवति = √भू , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

बिभ्यति = √भी , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

शक्यते = √शक् + भाववाच्य, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

चेष्टन्ते = √चेष्ट् , आत्मनेपदी, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

साधयन्ति = √साध् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विविच्य = वि + √विच् + ल्यप्

निरूपयन्ति = नि + √रूप् + णिच्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

निर्वहणम् = निर् + √वह् + ल्युट्

चिन्वन्ति =√चिञ्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

भजते = √भज् , आत्मनेपदी, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. निम्नलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत -

प्रजातन्त्रम्, लोकतन्त्रम्, प्रजार्थम्, प्रजातन्त्रविधानस्य, इंग्लैण्डदेशवासिभिः, वनप्रदेशवासिनः, ग्रामवासिनः, स्वकीयम्, शासनसत्ताधिकारिणी, सर्वेषामभ्युदयाय ।

2. निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत -

प्रजाभिः, प्रजानाम्, प्रजार्थम्, प्रायशः, अधुनापि, स्वतः, बहवः, अतएव, हर्षः, सुखार्थम्, साक्षात् ।

लिखितः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् लिखत -

(क) प्रजातन्त्रविधानस्य विकासः प्रधानतः कैः सम्पादितः ?

(ख) प्रजातन्त्रशासने के दोषाः सन्ति ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग) प्रजातन्त्रे के गुणाः सन्ति ?

(घ) प्रजातन्त्रे कोऽपि योग्यः जनः किं प्राप्तुमर्हति ?

(ङ) आधुनिककाले प्रजातन्त्रस्य कीदृशं स्वरूपं दृश्यते ?

(च) प्रजातन्त्रं किं कथ्यते ?

(छ) केषां प्रतिनिधयः जनानां सुखार्थं सम्यक् चेष्टन्ते ?

2. सन्धि-विच्छेदं कुरुत

(क) अधुनापि = ... + ... ।

(ख) कोऽपि = ... + ... ।

(ग) पुरापि = ... + ... ।

(घ) यथोचितम् = ... + ... ।

(ङ) प्राप्तुमर्हति = ... + ... ।

(च) अत्यधिकम् = ... + ... ।

3. कोष्ठात् चित्वा उचितपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत -

[प्रजातन्त्रस्य, बहवः, बहुजनैः, कतिपये, अचिरस्थायि, लोकतन्त्रम्, प्रजातन्त्रम्]

(क) प्रजातन्त्रं .... जनतन्त्रं वापि कथ्यते ।

(ख) आधुनिककाले .... अतीव विकसितं स्वरूपं दृश्यते ।

(ग) प्रजातन्त्रे .... गुणाः सन्ति ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(घ) भारतवर्षे .... अस्ति ।

(ङ) प्रजातन्त्रं .... कृतं शासनं भवति ।

(च) प्रजातन्त्रशासने .... दोषाः अपि सन्ति ।

(छ) .... प्रजातन्त्रे भवति शासनसूत्रम् ।

4. प्रजातन्त्र के विषय में हिन्दी में पाँच वाक्य लिखें ।

5. निम्नलिखितपदानाम् प्रकृति-प्रत्ययविभागं कुरुत -

कर्त्तुम्, प्राप्तुम्, सन्ति, दृश्यते, भजते ।

6. अधोलिखितानां पदानां साहाय्येन वाक्यनिर्माणं कुरुत -

बहवः, पुरा, प्रजातन्त्रम्, यदा, दोषाः

7. पाठानुसारेण एतेषु किं सत्यम् असत्यम् वा लिखत -

(क) प्रजातन्त्रं लोकतन्त्रं कथ्यते । (....................)

(ख) प्रजातन्त्रे बहवः गुणाः सन्ति । (....................)

(ग) प्रजातन्त्रशासने कोऽपि दोषः न अस्ति । (....................)

(घ) भारतवर्षे राजतन्त्रशासनम् अस्ति । (....................)

(ङ) प्रजातन्त्रं बहुजनैः कृतं शासनं न भवति । (....................)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

योग्यता-विस्तार:

राज्य का शासन चलाने वाली पद्धतियों का विकास युगों से होता रहा है । प्राचीन काल में जब कबीले रहते थे तो उनके बीच सामंजस्य बनाने के लिए या झगड़ा-झंझट का समाधान करने के लिए मुखिया या दलपति होता था । वह अपने वर्ग का सबसे शक्तिशाली होता था जिसका प्रभाव दल के एक-एक व्यक्ति पर था । दल में दलपति का चुनाव आपसी सहमति से होता था । क्रमश: पूरे गाँव का मुखिया 'ग्रामणी' होने लगा और व्यापक जनसमुदाय होने पर राजा की कल्पना हुई । कुछ क्षेत्रों में, भारत में भी विभिन्न गणों के अध्यक्षों का चुनाव होने पर तथाकथित गणतन्त्र शासन की व्यवस्था प्रचलित हुई । भारतीय इतिहास में वैशाली गणतन्त्र प्रमुख था जो एक प्रकार से प्राचीनतम जनतन्त्र शासन का रूप था ।

जनतन्त्र की आधुनिक पद्धति पाश्चात्य जगत् से ली गयी क्योंकि इसकी भारतीय परम्परा लुप्त हो चुकी थी, रही भी थी तो ग्राम तक ही सीमित थी । राजतन्त्र का समर्थन कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में किया है जहाँ राज्य के सात अंगों का उल्लेख है – स्वामी (राजा), अमात्य (मन्त्री या मन्त्रिपरिषद्), जनपद (भूमि या क्षेत्र), कोश (खजाना), दण्ड (सेना), दुर्ग (राजधानी) तथा मित्र (सहायक राज्य) । इन सातों में राजा केन्द्रस्वरूप था । उसी के चतुर्दिक् सभी अंग व्यवस्थापित थे । प्राय: राजा वंशानुगत होता था जिसके कारण कोई दुर्बल राजा निकल जाता था तो उसे मार कर सेनापति या मन्त्री राजा बन जाता था । दूसरा राजवंश चलने लगता था । कुछ राजा प्रजापीड़क एवं स्वेच्छाचारी होते थे जिन्हें हटाना बहुत कठिन था । कश्मीर की रानी दिद्दा ऐसी ही स्वेच्छाचारी शासक थी जिसने स्वार्थवश अपने पति और पुत्र को भी मार दिया था ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राजतन्त्र शासन पद्धति अब कहीं-कहीं नाममात्र को रह गयी है । इसका स्थान जनतन्त्र या प्रजातन्त्र ने ले लिया है । प्रजातन्त्र वह शासन है जिसमें जनता अपने ऊपर शासन के लिए अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है । प्रतिनिधियों की संख्या राज्य के आकार-प्रकार पर आश्रित होती है । कुछ राज्य संघात्मक होते हैं अर्थात् विभिन्न राज्यों का संघ बना कर एक केन्द्रीय शासन-व्यवस्था करते हैं । राज्य की शक्तियाँ केन्द्र और राज्यों में विभक्त रहती हैं ।

कहीं-कहीं जनतन्त्र के साथ गणतन्त्र की व्यवस्था भी होती है । गणतन्त्र में राज्य का मुखिया भी चुना जाता है । जैसे भारत में राष्ट्रपति देश का मुखिया होता है । उसका भी चुनाव होता है । जनतन्त्र की व्यवस्था संसद तथा विधानसभाओं के चुनाव में देखी जा सकती है । संसद का नेता प्रधानमन्त्री बनता है जो मन्त्रिपरिषद् का गठन करता है । इसी प्रकार विधानसभा का नेता मुख्यमन्त्री होता है जो प्रान्तीय मन्त्रिपरिषद् बनाता है । भारतवर्ष का संविधान इसे लोकतन्त्रात्मक गणतन्त्र (Democratic Republic) कहता है जहाँ संसद या विधानसभा का चुनाव होने से लोकतन्त्र (प्रजातन्त्र, जनतन्त्र) की पद्धति है और राष्ट्रपति के बदले जाने की व्यवस्था से गणतन्त्र भी है ।

• • •

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

द्वितीयः पाठः

सुभाषितानि

[संस्कृत भाषा में सामान्य नीति पर बहुत बल दिया जाता है । नीति मानव को सत्पथ पर ले जाती है तथा निन्दित मार्ग से बचाती है । नीति से सम्बद्ध कई पद्यग्रन्थ संस्कृत वाङ्मय के रत्न हैं जैसे विदुरनीति, चाणक्यनीति तथा भर्तृहरि का नीतिशतक । इनके अतिरिक्त भी विभिन्न साहित्यिक ग्रन्थों में प्रयुक्त नीतिश्लोक संस्कृत विद्वानों की जिह्वा पर रहते हैं । कश्मीरी आचार्य क्षेमेन्द्र ने भी अपने काव्यग्रन्थों या व्यङ्ग्यपरक ग्रन्थों में मानव जीवन के संचालनार्थ, नीतिश्लोक प्रस्तुत किए हैं जो उन प्रसंगों से सम्बद्ध होने पर भी सार्वकालिक महत्त्व के हैं ।]

येषां न विद्या न तपो न दानं न चापि शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥1॥

(चाणक्यनीति 10.7, नीतिशतक 13)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ॥2॥

(चाणक्यनीति 12.19)

दाने तपसि शौर्ये वा विज्ञाने विनये नये ।

विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ॥3॥

(चाणक्यनीति 14.8)

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति,

प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च ।

पराक्रमश्चाबहुभाषिता च,

दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ॥4॥

(विदुरनीति 1.104)

जरा रूपं हरति धैर्यमाशा

मृत्युः प्राणान् धर्मचर्यामसूया ।

कामो ह्रियं वृत्तमनार्यसेवा

क्रोधः श्रियं सर्वमेवाभिमानः ॥5॥

(विदुरनीति 5.8)

अकीर्तिं विनयो हन्ति हन्त्यनर्थं पराक्रमः ।

हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधमाचारो हन्त्यलक्षणम् ॥6॥

(विदुरनीति 7.42)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लोभश्चेदगुणेन किं, पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः,

सत्यं चेत्तपसा च किं, शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ।

सौजन्यं यदि किं गुणैः, सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः

सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना ॥7॥

(नीतिशतकम् 55)

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुर्यं कृत्वा नावसीदति ॥8॥

(नीतिशतकम् 86)

शब्दार्थाः

विद्या	=	शास्त्रज्ञान
तपः	=	तपस्या, साधना
ज्ञानम्	=	विवेक, अच्छे-बुरे को समझने की क्षमता
शीलम्	=	श्रेष्ठ स्वभाव, आदत
मर्त्यलोके	=	मानव जगत् में
भुवि	=	भूमि पर
भारभूताः	=	भारस्वरूप (बहुवचन), बोझ के रूप में
मृगाः	=	पशु, जानवर
निपातेन	=	गिराने से, डालने से
पूर्यते	=	भरा जाता है

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हेतुः	=	कारण, प्राप्ति की प्रक्रिया
शौर्ये	=	शूरता (वीरता) दिखाने में
विनये	=	विनम्रता के क्षेत्र में
नये	=	न्याय या नीति के विषय में
विस्मयः	=	आश्चर्य
कर्त्तव्यः	=	करना चाहिए, करें
बहुरत्ना	=	जिसमें अनेक (एक से बढ़कर एक) रत्न (नमूने) भरे हैं
वसुन्धरा	=	पृथ्वी
दीपयन्ति	=	प्रकाशित करते हैं, चमकाते हैं, श्रेष्ठ बनाते हैं
प्रज्ञा	=	बुद्धि
कौल्यम्	=	कुलीनता, अच्छे वंश का संस्कार होना
दमः	=	इन्द्रिय-संयम
श्रुतम्	=	शास्त्रज्ञान
पराक्रमः	=	शक्ति तथा उत्साह से कार्य-सम्पादन
अबहुभाषिता	=	अधिक न बोलना, मितभाषी होना
यथाशक्ति	=	अपनी शक्ति के अनुसार
कृतज्ञता	=	अपने प्रति हुए उपकार को स्मरण रखना
जरा	=	वृद्धावस्था, बुढ़ापा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हरति	=	नष्ट करता है/करती है
धैर्यम्	=	धीरता को
आशा	=	प्रतीक्षा, उम्मीद
धर्मचर्याम्	=	धर्म के आचरण की
असूया	=	छिद्रान्वेषण, गुणों में दोष ढूँढ़ना
कामः	=	इच्छा, विषयासक्ति
ह्रियम्	=	लज्जा को
वृत्तम्	=	सदाचरण को, अच्छे कार्यों को
अनार्यसेवा	=	नीच पुरुषों की सेवा करना
श्रियम्	=	सम्पत्ति
अभिमानः	=	अहंकार, अपने को बड़ा मानना
अकीर्तिम्	=	अपयश को, लोकापवाद को
हन्त्यनर्थम् (हन्ति + अनर्थम्)	=	गड़बड़ी या उपद्रव को नष्ट कर देता है
नित्यम्	=	सदैव, हमेशा
आचारः	=	सदाचरण, नियमों के अनुकूल चलना
हन्त्यलक्षणम् (हन्ति + अलक्षणम्)	=	कुलक्षण समाप्त कर देता है
लोभश्चेत् (लोभः + चेत्)	=	यदि लोभ (लालच) दोष रहे
किम्	=	क्या आवश्यकता है, व्यर्थ है
पिशुनता	=	चुगली करने की प्रवृत्ति, निन्दा-वृत्ति

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पातकैः किम् = पापों की आवश्यकता क्या है

शुचि मनः = पवित्र चित्त, शुद्ध मन

यद्यस्ति (यदि + अस्ति) = यदि वर्तमान है

सौजन्यम् = सज्जनता

सुमहिमा = अच्छी कीर्ति, लोकप्रियता

मण्डनैः किम् = आभूषण धारण करने की क्या आवश्यकता है

शरीरस्थः = शरीर में रहने वाला, आन्तरिक

रिपुः = शत्रु, वैरी

नास्त्युद्यमसमः = उद्योग के समान नहीं है
(न+अस्ति+उद्यमसमः)

बन्धुः = मित्र, सम्बन्धी, परिवारजन

कृत्वा (कृ+क्त्वा) = करके

नावसीदति = दुःखी नहीं होता, पछतावा नहीं होता
(न+अवसीदति)

व्याकरणम्

सन्धिः

चापि = च + अपि (दीर्घसन्धिः) ।

मृगाश्चरन्ति = मृगाः + चरन्ति (विसर्गसन्धिः)।

पराक्रमश्चाबहुभाषिता = पराक्रमः+च+अबहुभाषिता (विसर्गसन्धिः, दीर्घसन्धिः)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हन्त्यनर्थम् = हन्ति + अनर्थम् (यण्सन्धिः)

हन्त्यलक्षणम् = हन्ति + अलक्षणम् (यण्सन्धिः) ।

लोभश्चेदगुणेन = लोभः+चेत्+अगुणेन (विसर्गसन्धिः, व्यञ्जनसन्धिः)।

यद्यस्ति = यदि + अस्ति (यण्सन्धिः) ।

नास्त्युद्यमसमः = न+अस्ति (दीर्घसन्धिः)+उद्यमसमः (यण्सन्धिः)

बन्धुर्यम् = बन्धुः + यम् (विसर्गसन्धिः)

नावसीदति = न + अवसीदति (दीर्घसन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

कर्तव्यः = कृ + तव्य, पुं०, एकवचनम् ।

हरति = √हृ + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् ।

चरन्ति = √चर् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् ।

कृत्वा = √कृ + क्त्वा ।

अस्ति = √अस् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् ।

हन्ति = √हन् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् ।

अवसीदति = अव + √सद् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् ।

दीपयन्ति = √दीप् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अगुणेन किम् - किम् शब्द व्यर्थता या असाध्य होने की सूचना देता है, अतः इसके योग में तृतीया विभक्ति है । यदि किसी के पास लोभ की वृत्ति है तो किसी अन्य दोष (अगुण) की जरूरत नहीं । अन्य दोष व्यर्थ हैं । लोभ ही पर्याप्त है । इसी प्रकार पातकैः, तपसा, तीर्थेन, गुणैः, मण्डनैः, धनैः और मृत्युना में तृतीया विभक्ति का प्रयोग है ।

पद्यानाम् अन्वयः

1. येषां (जनानां) न विद्या (अस्ति), न तपः, न दानम् अपि च न शीलम् (अस्ति), न गुणः, न धर्मः (अस्ति), ते (जनाः) मर्त्यलोके भुवि भारभूताः (सन्ति), मनुष्यरूपेण मृगाः चरन्ति ।
2. जल-बिन्दु-निपातेन क्रमशः घटः पूर्यते । स हेतुः (क्रमः एव) सर्वविद्यानाम्, धर्मस्य, धनस्य च (विषये अस्ति) ।
3. दाने, तपसि, शौर्ये, विज्ञाने, विनये, नये वा विस्मयः न कर्तव्यः, हि (यतः) वसुन्धरा बहुरत्ना (अस्ति) ।
4. अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति - प्रज्ञा च, कौल्यं च, दमः, श्रुतं च, पराक्रमः च, अबहुभाषिता च, यथाशक्ति दानम्, कृतज्ञता च ।
5. जरा रूपं हरति, आशा धैर्यं (हरति), मृत्युः प्राणान् (हरति), असूया धर्मचर्यां (हरति), कामः ह्रियं (हरति), अनार्यसेवा वृत्तं (हरति), क्रोधः श्रियं (हरति), अभिमानः (तु) सर्वमेव (हरति) ।
6. विनयः अकीर्तिं हन्ति, पराक्रमः अनर्थम् (हन्ति), क्षमा नित्यं क्रोधम् (हन्ति),

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आचारः अलक्षणम् (हन्ति) ।

7. लोभः चेत् अगुणेन किम् ? यदि पिशुनता अस्ति पातकैः किम् ? सत्यं च (अस्ति) चेत् तपसा किम् ? यदि मनः शुचि अस्ति (तदा) तीर्थेन किम् ? यदि सौजन्यम् (अस्ति तदा) गुणैः किम् ? यदि सुमहिमा अस्ति, (तदा) मण्डनैः किम् ? यदि सद्विद्या (अस्ति तदा) धनैः किम् ? यदि अपयशः अस्ति (तदा) मृत्युना किम् ?

8. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थः महान् रिपुः (अस्ति) । उद्यमसमः बन्धुः न अस्ति, यम् (उद्यमम्) कृत्वा (मनुष्यः) न अवसीदति ।

अभ्यासः

मौखिकः

1. अस्य पाठस्य कानिचन चत्वारि सुभाषितानि श्रावयत ।
2. निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत -

   शुचि, दीपयन्ति, निपातेन, शीलम्, श्रियम्, रिपुः, पिशुनता, नित्यम्, यद्यस्ति, सुमहिमा

3. सन्धिविच्छेदं वदत -

   चापि, यद्यस्ति, मृगाश्चरन्ति, बन्धुर्यम्, नावसीदति ।

4. अधोलिखितेषु पदेषु मूलधातुं वदत -

   दीपयन्ति, हन्ति, अस्ति, अवसीदति, हरति ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लिखितः

1. 'क' स्तम्भस्य वाक्यानि 'ख' स्तम्भस्य वाक्यैः सह मेलयत -

'क'	'ख'
(क) येषां न विद्या	(i) बहुरत्ना वसुन्धरा ।
(ख) आलस्यं हि मनुष्याणां	(ii) क्रोधमाचारो हन्त्यलक्षणम् ।
(ग) हन्ति नित्यं क्षमा	(iii) शरीरस्थो महान् रिपुः ।
(घ) विस्मयो न हि कर्तव्यो	(iv) धर्मस्य च धनस्य च ।
(ङ) स हेतुः सर्वविद्यानां	(v) न तपो न दानम् ।

2. पाठं पठित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

(क) .... गुणाः पुरुषं दीपयन्ति ।

(ख) मृत्युः .... धर्मचर्यामसूया ।

(ग) ते मर्त्यलोके भुवि .... ।

(घ) मनुष्याणां शरीरस्थो .... रिपुः ।

(ङ) अकीर्तिं .... हन्ति ।

3. एकपदेन उत्तरत -

(क) विद्यादिरहिताः जनाः भुवि कीदृशाः ?

(ख) मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः कः ?

(ग) कति गुणाः पुरुषं दीपयन्ति ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(घ) बहुरत्ना का वर्तते ?

(ङ) उद्यमसमः कः न अस्ति ?

4. पाठानुसारेण सत्यम् (√) असत्यं (×) वा निर्दिशत -

(क) अष्टगुणाः पुरुषं दीपयन्ति । ( )

(ख) जरा रूपं हरति । ( )

(ग) अनार्यसेवा वृत्तं हरति । ( )

(घ) मृत्युः प्राणान् न हरति । ( )

(ङ) मनुष्यरूपेण अश्वाः चरन्ति । ( )

5. अधोलिखितानां पदानां विभक्तिनिर्णयं कुरुत -

येषाम्, गुणेन, धनैः, तपसि, भारभूताः, प्रज्ञा, दानम्, क्रोधः

6. निम्नलिखितानां शब्दानां प्रयोगेण संस्कृतभाषायां वाक्यनिर्माणं कुरुत -

यदि, क्षमा, पराक्रमः, विनयः, आलस्यम्, महान्, पुरुषाः

7. प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत -

चरन्ति, हन्ति, दीपयन्ति, हरति, अस्ति

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

योग्यता-विस्तारः

यद्यपि सभी भाषाओं में गद्यपद्यमय सुभाषित वाक्य प्राप्त होते हैं तथापि संस्कृत भाषा इस क्षेत्र में विलक्षण है। एक तो यहाँ सभी सुभाषित श्लोकरूप या श्लोकांशरूप हैं और दूसरे, जीवन के व्यापक क्षेत्र का दिग्दर्शन कराते हैं। पद्यात्मक होने से इन्हें स्मरण रखना सरल है तथा उचित अवसर पर इनकी प्रस्तुति अत्यधिक आकर्षक होती है। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिस पर संस्कृत कवियों की दृष्टि नहीं गयी है। सुभाषितों का संकलन भी बहुत प्राचीन समय से संस्कृत में होता रहा है। सुभाषितरत्नभाण्डागार नामक आधुनिक संकलन बहुत लोकप्रिय है जिसमें दस हजार से अधिक सुभाषित श्लोक तथा हजारों सूक्तियाँ भी संकलित हैं। इसी प्रकार सूक्तिमुक्तावली, सुभाषितरत्नकोश, शाङ्र्गधरपद्धति आदि प्राचीन सुभाषितसंग्रह भी प्रकाशित हैं। पञ्चतन्त्र, हितोपदेश जैसे कथाग्रन्थों में एवं संस्कृत महाकाव्यों में भी बहुत से सुभाषित विभिन्न पात्रों के द्वारा कहे गये हैं।

• • •

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तृतीयः पाठः

लक्ष्यैकदृष्टिः

[इस पाठ में एक कल्पित पशुकथा दी गई है। इसमें यह संदेश दिया गया है कि एकमात्र अपने लक्ष्य पर ध्यान रखने वाला व्यक्ति लक्ष्य-प्राप्ति में सफल होता है। मार्ग के विघ्नों तथा लोगों द्वारा हतोत्साह किये जाने वाले वाक्यों पर उसका ध्यान नहीं जाता। जिस काम को शक्तिशाली मेढ़क नहीं कर सके उसे एक छोटे कृशकाय मेढ़क ने सम्पन्न कर लिया क्योंकि उसका ध्यान अपने लक्ष्य पर था। ऊँचे खम्भे पर चढ़ने की प्रतिस्पर्धा में वही विजयी हुआ। उसने अपनी सफलता का रहस्य बताया कि अन्य मेढ़कों की बात पर उसका ध्यान नहीं था। इसी से यह सन्देश मिलता है कि सभी लोग अपने लक्ष्य पर ध्यान रखकर निरन्तर उद्योग करते जाएँ तो सफलता उनके कदम चूमेगी।]

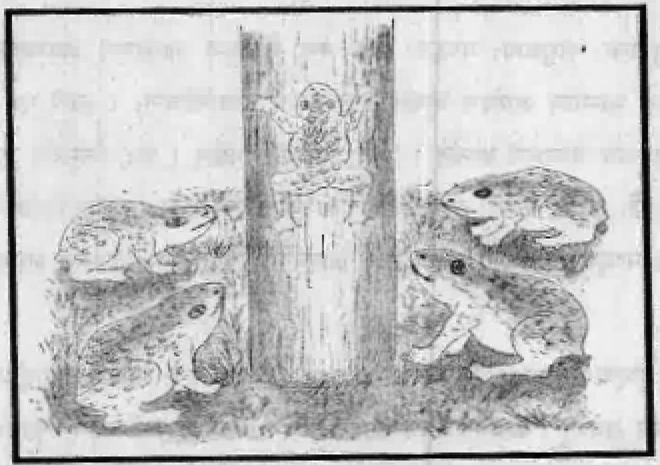

अथ कदाचित् मण्डूककुलेन काचित् स्पर्धा आयोजिता। यः समुच्चस्य स्तम्भस्य शिखरं सर्वादौ प्राप्नुयात् सः विजयी भवेत् इति सर्वैः मण्डूकैः निर्णीतम्।

स्पर्धायां भागं ग्रहीतुं बहवः मण्डूका अग्रे आगताः स्पर्धां द्रष्टुमपि असंख्याः मण्डूकाः तत्र

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सम्मिलिताः ।

स्पर्धा आरब्धा । मण्डूकाः स्तम्भस्य आरोहणम् आरब्धवन्तः । प्रेक्षकाः मण्डूकाः करताडनेन, 'अरे', 'अहो', 'हो', इत्यादिभिः शब्दैः च स्पर्धार्थिनः प्रोत्साहितवन्तः ।

स्तम्भः तु समुच्चः । अल्पस्य भागस्य आरोहणमात्रेण एव अनेके मण्डूकाः पतिताः । येषां मनोबलं सुदृढम् आसीत् ते उत्थाय पुनरपि आरोहणप्रयत्नं कृतवन्तः । तथापि केनापि मण्डूकेन स्तम्भस्य पादभागः अपि न प्राप्तः । दर्शकाः स्पर्धार्थिनः च परस्परम् अवदन् - "मण्डूककुलीयेन केनचिदपि स्तम्भस्य आरोहणं कर्तुं न शक्यम्" इति ।

एवं स्थिते अपि केचन पुनरपि प्रयत्नं कृतवन्तः । किन्तु अन्येषां मण्डूकानां निराशापूर्णं वचनं श्रुत्वा ते भीताः सन्तः अधः पतितवन्तः ।

किन्तु एकः लघुकायः मण्डूकः मन्दं मन्दं स्तम्भस्य आरोहणम् आरब्धवान् । एषः लघुकायः कथं स्तम्भस्य आरोहणं कुर्यात् ? इति सर्वे उपहसितवन्तः । अल्पे एव काले सः लघुकायः स्तम्भस्य मध्यभागं प्राप्नोत् । 'अये, पतिष्यति भवान् । भोः, किमर्थम् एतत् साहसं भवतः 'अयि भोः, भवतः प्रयासः व्यर्थः' इत्यादीनि वचनानि मण्डूकानां मुखात् निर्गतानि । तथापि सः लघुकायः मण्डूकः अग्रे अगच्छत् । सर्वेषु आश्चर्येण पश्यत्सु सः स्तम्भस्य अग्रभागम् अपि प्राप्नोत् ।

एतत् दृष्ट्वा सर्वे आश्चर्येण स्तब्धाः । कथम् एषः लघुकायः स्तम्भम् आरोढुं शक्तवान् ? इति ते परस्परम् अवदन् । केनचित् पृष्टः सः लघुमण्डूकः अवदत् - "अहम् एकाग्रः आसम् । लक्ष्यं मनसि निधाय अग्रे गतोऽस्मि । एकाग्रतायाः कारणतः मया कस्यापि नैराश्यपूर्णं वचनं न श्रुतम् । अन्ये तु तादृशानि वचनानि श्रुत्वा पराजयं प्राप्तवन्तः । लक्ष्यैकदृष्टिः निरन्तरः प्रयत्नः च मम साफल्यस्य कारणम्" इति ।

लक्ष्यपथे अस्माभिः एकाग्रता अवलम्बनीया ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थाः

लक्ष्यैकदृष्टिः	=	केवल लक्ष्य पर आँखें रखने वाला
दृष्टिः	=	आँख, ध्यान
अथ	=	प्रारंभ सूचक अव्यय, उसके बाद
कदाचित्	=	कभी
मण्डूककुलेन	=	मेढ़कों द्वारा
काचित्	=	कोई
स्पर्धा	=	प्रतियोगिता
आयोजिता	=	आयोजित की गई
यः	=	जो
समुच्चस्य स्तम्भस्य	=	बहुत ऊँचे खम्भे के
शिखरम्	=	शिखर, चोटी
सर्वादौ	=	सबसे पहले
प्राप्नुयात्	=	प्राप्त करेगा, प्राप्त करे
भवेत्	=	हो
इति	=	ऐसा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सर्वैः मण्डूकैः	=	सभी मेंढ़कों द्वारा
निर्णीतम्	=	निर्णय/फैसला किया गया
स्पर्धायाम्	=	प्रतियोगिता में
भागं ग्रहीतुम्	=	भाग लेने के लिए
बहवः मण्डूकाः	=	बहुत से मेंढ़क
अग्रे आगताः	=	आगे आये
स्पर्धां द्रष्टुमपि	=	स्पर्धा देखने के लिए भी
असंख्याः	=	असंख्य, अनेक
तत्र	=	वहाँ
सम्मिलिताः	=	शामिल हुए
आरब्धा	=	आरम्भ हुई
स्तम्भस्य आरोहणम्	=	खम्भे पर चढ़ना
आरब्धवन्तः	=	आरम्भ किया
प्रेक्षकाः	=	दर्शक, देखने वाले
करताडनेन,	=	तालियों से
स्पर्धार्थिनः	=	प्रतियोगियों को

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रोत्साहितवन्तः	=	प्रोत्साहित किया, उत्साह बढ़ाया
अल्पस्य	=	थोड़े का
आरोहणमात्रेण	=	केवल चढ़ने से
पतिताः	=	गिर गए
येषाम्	=	जिनके
मनोबलम्	=	मानसिक शक्ति, उत्साह
सुदृढम्	=	मजबूत
उत्थाय	=	उठकर
पुनरपि	=	फिर भी
कृतवन्तः	=	किया (बहुवचन)
पादभागः	=	एक चौथाई
परस्परम्	=	आपस में
अवदन्	=	बोले
केनचिदपि	=	किसी के द्वारा
कर्त्तुम्	=	करने के लिए
शक्यम्	=	संभव है

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

केचन	=	कोई-कोई
अन्येषाम्	=	दूसरे का
निराशापूर्णम्	=	निराशायुक्त, उदासी से भरा
श्रुत्वा	=	सुनकर
भीताः	=	डरे हुए
अधः	=	नीचे
पतितवन्तः	=	गिर गये
लघुकायः	=	छोटे शरीर वाला
मन्दं-मन्दम्	=	धीरे-धीरे
आरब्धवान्	=	शुरू किया, आरम्भ किया
एषः	=	यह
कथम्	=	कैसे
कुर्यात्	=	करना चाहिए
उपहसितवन्तः	=	उपहास किया
काले	=	समय पर
मध्यभागम्	=	मध्य भाग में

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्राप्नोत्	=	प्राप्त किया
अये	=	हे
पतिष्यति	=	गिरेगा
किमर्थम्	=	किसलिए
एतत्	=	यह
भवतः	=	आपका
व्यर्थः	=	बेकार
मुखात्	=	मुख से
निर्गतानि	=	निकले
अग्रे	=	आगे
अगच्छत्	=	गया
सर्वेषु	=	सब में, सभी में
आश्चर्येण	=	आश्चर्य से
सर्वेषु पश्यत्सु	=	सब लोगों के देखते-देखते
आरोढुम्	=	चढ़ने के लिए
पृष्टः	=	पूछा गया

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आसम्	=	(मैं) था
मनसि	=	मन में
निधाय	=	धारण करके, रखकर
गतोऽस्मि	=	(मैं) गया हूँ
एकाग्रतायाः	=	एकाग्रता (के कारण) से,
		एक स्थान पर टिके रहने का भाव
कारणतः	=	कारण से
नैराश्यपूर्णम्	=	निराशा भरी/भरा
श्रुतम्	=	सुना गया
तादृशानि	=	वैसे
वचनानि	=	वचन, बोली
साफल्यस्य	=	सफलता के
लक्ष्यपथे	=	लक्ष्य के मार्ग पर
अस्माभिः	=	हमारे द्वारा
अवलम्बनीया	=	धारण किया जाना चाहिए

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेद: –

इत्यादिभि:	=	इति + आदिभि: (यण्सन्धि:)
सर्वादौ	=	सर्व + आदौ (दीर्घसन्धि:)
पुनरपि	=	पुन: + अपि (विसर्गसन्धि:)
केनापि	=	केन + अपि (दीर्घसन्धि:)
तथापि	=	तथा + अपि (दीर्घसन्धि:)
कस्यापि	=	कस्य + अपि (दीर्घसन्धि:)

प्रकृति-प्रत्यय विभाग:

प्राप्नुयात्	=	प्र + √आप्, विधिलिङ्लकार:, प्रथम पुरुष:, एकवचनम्
निर्णीतम्	=	निर् + √नी + क्त, नपुं., एकवचनम्
ग्रहीतुम्	=	√ग्रह् + तुमुन्
आगता:	=	आ + √गम् + क्त (बहुवचनम्)
द्रष्टुम्	=	√दृश् + तुमुन्
आरब्धवन्त:	=	आ + √रभ् + क्तवतु, पुं., प्रथमा, बहुवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कृतवन्तः	= √कृ + क्तवतु, पुं., प्रथमा, बहुवचनम्
अवदन्	= √वद् +, लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
कर्तुम्	= √कृ + तुमुन्
श्रुत्वा	= √श्रु + क्त्वा
पतितवन्तः	= √पत् + क्तवतु, पुं., प्रथमा, बहुवचनम्
कुर्यात्	= √कृ , विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
उपहसितवन्तः	= उप + √हस् + क्तवतु, पुं., प्रथमा, बहुवचनम्
प्राप्नोत्	= प्र + √आप् , लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
अगच्छत्	= √गम् + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
दृष्ट्वा	= √दृश् + क्त्वा
स्तब्धाः	= √स्तम्भ् + क्त, पुं०, बहुवचनम्
आरोढुम्	= आ + √रुह् + तुमुन्
शक्तवान्	= √शक् + क्तवतु, पुं., प्रथमा, एकवचनम्
श्रुतम्	= √श्रु + क्त, नपुं., एकवचनम्
अवलम्बनीया	= अव + √लम्ब् + अनीयर्, स्त्री., प्रथमा, एकवचनम्
आसम्	= √अस् + लङ्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास:

मौखिक:

1. अस्या: कथाया आशय: क: ?

2. एकपदेन उत्तरं वदत –

(क) क: स्तम्भस्य अग्रभागं प्राप्नोत् ?

(ख) मण्डूका: किं द्रष्टुं सम्मिलिता: ?

(ग) के करताडनं कृतवन्त: ?

(घ) दर्शका: स्पर्धार्थिन: च परस्परं किम् अवदन् ?

(ङ) किं दृष्ट्वा सर्वे आश्चर्येण स्तब्धा: ?

3. "लक्ष्यैकदृष्टि:" इति कथां पठत कक्षायां श्रावयत च ।

लिखित:

1. पाठानुसारेण सत्यम् (√) असत्यं (×) वा निर्दिशत

(क) मण्डूककुलेन काचित् स्पर्धा आयोजिता । ( )

(ख) लक्ष्यपथे एकाग्रता न अवलम्बनीया । ( )

(ग) स्पर्धा द्रष्टुमपि असंख्या मण्डूका: सम्मिलिता: । ( )

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(घ) एकः लघुकायः मण्डूकः मन्दं-मन्दं स्तम्भस्य आरोहणम् आरब्धवान्। ( )

(ङ) मण्डूकाः स्तम्भस्य आरोहणम् न आरब्धवन्तः । ( )

2. पाठं पठित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत ।

(क) लक्ष्यपथे .... अवलम्बनीया (एकाग्रः/एकाग्रता)

(ख) बहवः .... अग्रे आगतवन्तः (अश्वाः/मण्डूकाः)

(ग) स्पर्धा .... । (आरब्धा/समाप्ता)

(घ) लक्ष्यं मनसि .... अग्रे गतोऽस्मि । (एकाग्र/निधाय)

(ङ) येषां मनोबलं .... आसीत् । (सुदृढम्/दुर्बलम्)

3. 'क' स्तम्भस्य वाक्यानि 'ख' स्तम्भस्य वाक्यैः सह मेलयत -

(क) अथ कदाचित् मण्डूककुलेन	(अ) ते उत्थाय पुनरपि आरोहणप्रयत्नं कृतवन्तः।
(ख) येषां मनोबलं सुदृढम् आसीत्	(आ) मन्द-मन्दं स्तम्भस्य आरोहणम् आरब्धवान्।
(ग) एकः लघुकायः मण्डूकः	(इ) काचित् स्पर्धा आयोजिता ।
(घ) कथम् एषः लघुकायः	(ई) एकाग्रता अवलम्बनीया ।
(ङ) लक्ष्यपथे अस्माभिः	(उ) स्तम्भम् आरोढुं शक्तवान् ।

4. शब्दानां धातुं प्रत्ययं च पृथक् कुरुत -

श्रुत्वा, कर्त्तुम्, स्तब्धाः, द्रष्टुम्, आगताः

5. शब्दानां विभक्तिं वचनं च लिखत -

अनेके, काले, सर्वेषु, मनसि, मुखात्

6. अव्ययैः वाक्यरचनां कुरुत -

कथम्, तथापि, श्रुत्वा, किन्तु, अद्य

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

योग्यता-विस्तार:

किसी कार्य को करने के समय साधन महत्त्वपूर्ण होता है या साध्य ? इस प्रश्न के समाधान के लिए दो मत आचारशास्त्र के इतिहास में प्रचलित हैं । कुछ विद्वान् साधन की शुद्धता पर बल देते हैं उनका कथन है कि उपाय यदि समुचित रहेंगे तो लक्ष्य या साध्य शुद्ध ही होगा, अवश्य मिलेगा । दूसरी ओर कुछ विद्वान् मानते हैं कि लक्ष्य ही मुख्य है । इसकी प्राप्ति के लिए कोई भी साधन अपनाया जा सकता है । किन्तु यह मत भारतीय संस्कृति और परम्परा से समर्थित नहीं है । साधन और साध्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं । सबसे पहले हमें साध्य पर दृष्टि डालनी चाहिए । उसके बाद साधनों का उपयोग करना चाहिए । साधन भी आवश्यक हैं किन्तु अपने लक्ष्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

भारतीय कथा-साहित्य में इस विषय पर अनेक कथाएँ प्रचलित हैं । मत्स्य के नेत्र का उसकी छाया देखकर वेधन करने से संबद्ध एक ऐसी ही कथा है । अर्जुन ने अपना ध्यान केवल मत्स्य के नेत्र पर ही केन्द्रित किया और वेधन में सफलता पाई । परिणामत: उनका विवाह द्रौपदी से हुआ था । छात्रों को स्वयं भी ऐसी कथाओं की खोज करनी चाहिए जिसमें केवल लक्ष्य पर अपना ध्यान केन्द्रित करके लोगों ने सफलता पाई ।

* * *

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चतुर्थः पाठः

वनस्पतिपरिचयः

{इस पाठ में हमारे दैनिक जीवन से सम्बद्ध कुछ वनस्पतियों का पद्यात्मक परिचय दिया गया है। ये अत्यन्त उपयोगी वनस्पति हैं । इन्हें ग्रामवासी तो प्रायः प्रतिदिन देखते हैं किन्तु नगरवासियों को इनका वनस्पति-रूप प्रायः प्राप्त नहीं होता । कुछ लोग अवश्य ही अपने उद्यानों में इन पेड़-पौधों को सौन्दर्य तथा उपयोगिता की दृष्टि से लगाए रहते हैं । इन वनस्पतियों में कुछ वृक्षाकार हैं तो कुछ छोटे पौधे के रूप में हैं । जैसे नीम, आँवला और बेल वृक्षाकार हैं किन्तु तुलसी, हल्दी, अदरख तथा घृतकुमारी छोटे पौधों के रूप में होते हैं । इनकी विशेषताएँ ध्यान देने योग्य हैं ।}

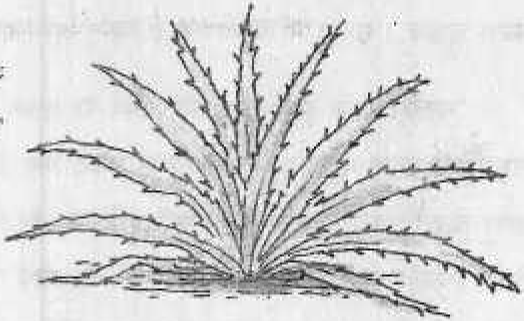

1. तुलसी – हरित्पर्णमयी वृन्दा मञ्जरीभिरलङ्कृता ।
   ज्वरकासादिशमनी तुलसी वन्दिता सर्वैः ॥
2. निम्बः – लम्बपर्णो गदं हन्ति काले याति विशालताम् ।
   तिक्तास्वादो लघुफलो निम्बः सुरभिपुष्पवान् ॥
3. आमलकी – त्रिदोषनाशिनी केशकृष्णिका स्वफलेन या ।
   अवलेहेन शक्तेश्च वर्धिन्यामलकी मता ॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. हरिद्रा – पीतवर्णा ग्रन्थिरूपा कृमिघ्ना व्रणघातिनी ।
सर्वत्र शुभकार्यार्था हरिद्रा स्वादवर्धिनी ॥

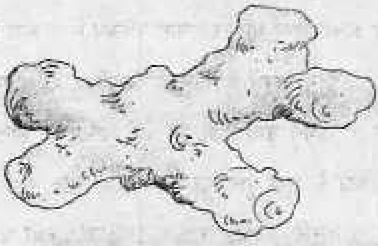
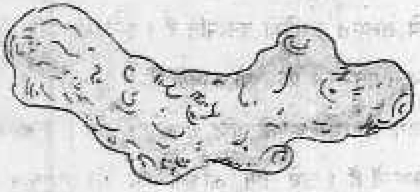

5. बिल्वम् – पर्णत्रयमयी शाखा तत्फलं कन्दुकोपमम् ।
नानारोगविनाशे च क्षमं बिल्वं बहुप्रियम् ॥

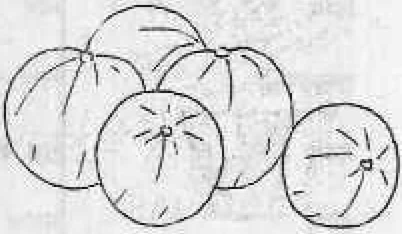

6. आर्द्रकम् – सर्वत्र लभ्यं सूपादौ स्वादाय परिकल्पते ।
कासादिनाशकं ग्रन्थिहरिद्राकारमार्द्रकम् ॥

7. घृतकुमारी – एलोवेरेतिविख्याता नानारोगप्रणाशिनी ।
शक्तिदात्री मृदुर्ग्राह्या सेव्या घृतकुमारिका ॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थाः

हरित्पर्णमयी	–	हरी पत्तियों वाली
वृन्दा	–	तुलसी
मञ्जरीभिः	–	मञ्जरियों से
अलङ्कृता	–	सुसज्जित
ज्वरकासादिशमनी	–	ज्वर (बुखार), खाँसी आदि को दूर करनेवाली
वन्दिता	–	वन्दनीया, पूजनीया
सर्वैः	–	सब के द्वारा
निम्बः	–	नीम
लम्बपर्णः	–	लम्बे पत्तों वाला
गदम्	–	रोग को
हन्ति	–	मारता है
याति	–	जाता है, प्राप्त करता है
विशालताम्	–	विशालता (बड़े आकार) को
तिक्तास्वादः	–	तीखे (कड़वे) स्वाद वाला
लघुफलः	–	छोटे फल वाला

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सुरभिपुष्पवान्	–	सुगन्धित फूल वाला
आमलकी	–	आँवला
त्रिदोषनाशिनी	–	त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को शान्त करने वाली
केशकृष्णिका	–	केश (बाल) को काला करनेवाली
स्वफलेन	–	अपने फल से
अवलेहेन	–	चाटकर खाये जाने (से)
शक्तेश्च	–	और, शक्ति का
वर्धिन्यामलकी	–	(वर्धिनी+आमलकी) बढ़ानेवाली, आँवला
हरिद्रा	–	हल्दी
पीतवर्णा	–	पीले रंग वाली
ग्रन्थिरूपा	–	गाँठ के रूप की
कृमिघ्ना	–	कीटाणुनाशक
व्रणघातिनी	–	घाव भरने वाली, घाव को समाप्त करनेवाली
सर्वत्र	–	सभी जगह
शुभकार्यार्था	–	शुभ कार्य में प्रयुक्त होनेवाली
स्वादवर्धिनी	–	स्वाद बढ़ानेवाली

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बिल्वम्	–	बेल का फल
पर्णत्रयमयी	–	तीन पत्तों वाली
तत्फलम्	–	उसका फल
कन्दुकोपमम्	–	गेन्द के समान
नानारोगविनाशे	–	अनेक प्रकार के रोगों के नाश में
क्षमम्	–	सक्षम, समर्थ
आर्द्रकम्	–	अदरख
लभ्यम्	–	उपलब्ध, प्राप्त होने योग्य
सूपादौ	–	सूप आदि में
परिकल्पते	–	कल्पना की जाती है, समझा जाता है
कासादिनाशकम्	–	खाँसी आदि नष्ट करनेवाला
घृतकुमारी	–	घृतकुमारी (ऐलोवेरा)
विख्याता	–	प्रसिद्ध है
नानारोगप्रणाशिनी	–	अनेक प्रकार के रोगों को नष्ट करनेवाली
शक्तिदात्री	–	शक्ति प्रदान करनेवाली
मृदुर्ग्राह्या	–	कोमल तथा उपयोगी
सेव्या	–	सेवन करने योग्य

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः

मञ्जरीभिरलङ्कृता	=	मञ्जरीभिः + अलङ्कृता (विसर्गसन्धिः)
तिक्तास्वादः	=	तिक्त + आस्वादः (दीर्घसन्धिः)
शक्तेश्च	=	शक्तेः + च (विसर्गसन्धि)
वर्धिन्यामलकी	=	वर्धिनी + आमलकी (यण्सन्धिः)
कन्दुकोपमम्	=	कन्दुक + उपमम् (गुणसन्धिः)
सूपादौ	=	सूप + आदौ (दीर्घसन्धिः)
एलोबेरेतिविख्याता	=	ऐलोबेरा + इतिविख्याता (गुणसन्धिः)

प्रकृति – प्रत्यय विभागः

कृता	=	√कृ + क्त, स्त्री०, एकवचनम्
वन्दिता	=	√वन्द् + क्त, स्त्री०, एकवचनम्
याति	=	√या, लट् लकार, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
पुष्पवान्	=	पुष्प + मतुप्, प्रथमा एकवचनम्, पुं०
वर्धिनी	=	√वृध् + णिनि + ङीप्, स्त्रीलिङ्गम्
परिकल्पते	=	परि + √कल्प + लट्लकारः आत्मनेपदी
ग्राह्या	=	√ग्रह् + ण्यत् + टाप्
सेव्या	=	√सेव् + ण्यत् + टाप्
लभ्यम्	=	√लभ् + यत्, नपुं
शक्तिदात्री	=	शक्ति + √दा + तृच + ङीप्,स्त्रीलिङ्गम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मौखिकः

1. अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत-

हरित्पर्णमयी, ज्वरकासादिशमनी, तिक्तास्वादः, सुरभिपुष्पवान्, केशकृष्णिका, पर्णत्रयमयी, कन्दुकोपमम्, ग्रन्थिहरिद्राकारमार्द्रकम्, एलोवेरेतिविख्याता ।

2. निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत-

निम्बः, आमलकी, हरिद्रा, बिल्वम्, आर्द्रकम्, घृतकुमारी, सर्वत्र, कासादिनाशकम्, लम्बपर्णः, पीतवर्णा ।

3. निम्नलिखितस्य पद्यस्य पाठं कुरुत-

लम्बपर्णो गदं हन्ति काले याति विशालताम् ।
तिक्तास्वादो लघुफलः निम्बः सुरभिपुष्पवान् ।।

लिखितः

1. पाठानुसारेण अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तरम् एकपदेन लिखत-

(क) कस्य फलं कन्दुकोपमम् ?

(ख) का पीतवर्णा अस्ति ?

(ग) का एलोवेरेति विख्याता ?

(घ) त्रिदोषनाशिनी केशकृष्णिका च का अस्ति ?

(ङ) कः लम्बपर्णः अस्ति ?

(च) कस्य शाखा पर्णत्रयमयी भवति ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. पाठ के आधार पर आँवला से क्या लाभ होते हैं ? लिखें

3. उचितं पदं चित्वा पूरयत–

(क) कासादिनाशकं ग्रन्थिहरिद्राकारम् ....। (आर्द्रकम्, बिल्वम्)

(ख) सर्वत्र शुभकार्यार्था .... स्वादवर्धिनी । (आमलकी, हरिद्रा)

(ग) ज्वरकासादिशमनी .... वन्दिता सभैः । (घृतकुमारी, तुलसी)

(घ) तिक्तास्वादो लघुफलः .... सुरभिपुष्पवान् । (ग्रीष्मे, शीते)

4. सन्धिं कुरुत–

(क) तिक्त + आस्वादः = ... ।

(ख) शक्तेः + च = ... ।

(ग) सूप + आदौ = ... ।

(घ) मञ्जरीभिः+अलङ्कृता = ... ।

(ङ) वर्धिनी + आमलकी = ... ।

5. सुमेलनं कुरुत

(क) तुलसी	(i) केशकृष्णिका
(ख) आमलकी	(ii) लम्बपर्णः
(ग) हरिद्रा	(iii) वृन्दा
(घ) बिल्वम्	(iv) एलोबेरेति
(ङ) निम्बः	(v) पर्णत्रयमयम्
(च) घृतकुमारी	(vi) पीतवर्णा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

6. निम्नलिखितपदानां पुंल्लिङ्गरूपाणि लिखत –

यथा – पीतवर्णा – पीतवर्णः

(क) शक्तिदात्री – .... ।

(ख) पर्णत्रयमयी – .... ।

(ग) त्रिदोषनाशिनी – .... ।

(घ) व्रणघातिनी – .... ।

(ङ) वन्दिता – .... ।

योग्यताविस्तारः

आधुनिक युग में वनस्पति-शास्त्र एक पृथक् विज्ञान के रूप में पढ़ा-पढ़ाया जाता है। इसमें सभी प्रकार के पेड़-पौधों, लताओं तथा पानी में होने वाले वनस्पतियों का भी सूक्ष्म विश्लेषण होता है । प्राचीन भारत में यह शास्त्र निघण्टु तथा वृक्षायुर्वेद-इन दो पृथक् शास्त्रों के रूप में पढ़ा जाता था । निघण्टु वनस्पतियों को पहचानने तथा उनके पर्यायवाची शब्दों से जुड़ा था जबकि वृक्षायुर्वेद का क्षेत्र बहुत व्यापक था । पेड़-पौधों के अंग-प्रत्यंग की जानकारी तथा उनकी जड़ (मूल) से लेकर पत्तों, फूलों और फलों तक के गुण-दोष इसके अन्तर्गत जाने जाते थे । इसके साथ ही पेड़-पौधों में लगने वाली बीमारियों तथा उनके निराकरण की शिक्षा भी इसी शास्त्र के अन्तर्गत थी । अमरकोश में अमरसिंह ने वृक्षों के नामों का विस्तृत उल्लेख "वनौषधि" वर्ग में किया है ।

संस्कृत भाषा में "ओषधि" शब्द सामान्य वनस्पति के लिए है । इसकी व्युत्पत्ति से

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ज्ञात होता है कि सभी वनस्पति ओष अर्थात् ऊष्मा, ऊर्जा या शक्ति को धारण करते हैं। उनसे बने हुए "भेषज" (दवा) को "औषधम्" कहते हैं। इस प्रकार वनस्पतियों से दवा बनाने का कार्यक्रम वैद्यों के द्वारा होता था। कुछ ओषधियों अर्थात् वनस्पतियों को हम आज के दैनिक जीवन में बहुत उपयोगी पाते हैं। न केवल पर्यावरण की शुद्धि के लिए अपितु अपने भोजन आदि में प्रयोग के लिए भी इनकी महत्ता हम स्वीकार करते हैं। इन्हें आस-पास के उद्यानों में तथा कुछ को तो घर में भी गमले आदि में लगाना शोभाजनक है।

• • •

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पञ्चमः पाठः

वणिग्वैद्ययोः वार्तालापः

[इस पाठ में एक व्यापारी तथा एक वैद्य के बीच संवाद प्रस्तुत किया गया है जो बीच में हास-परिहास से भरा है किन्तु बाद में गम्भीर होकर यह सन्देश देता है कि समाज में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक दुःख-सुख का समान भोक्ता होता है । यह नहीं कि समाज कष्ट में हो तो कोई वर्ग सुखी हो । सामाजिक सहानुभूति समान रूप से होती है । इस पाठ का अभिनय भी छात्र वर्ग में कर सकते हैं ।]

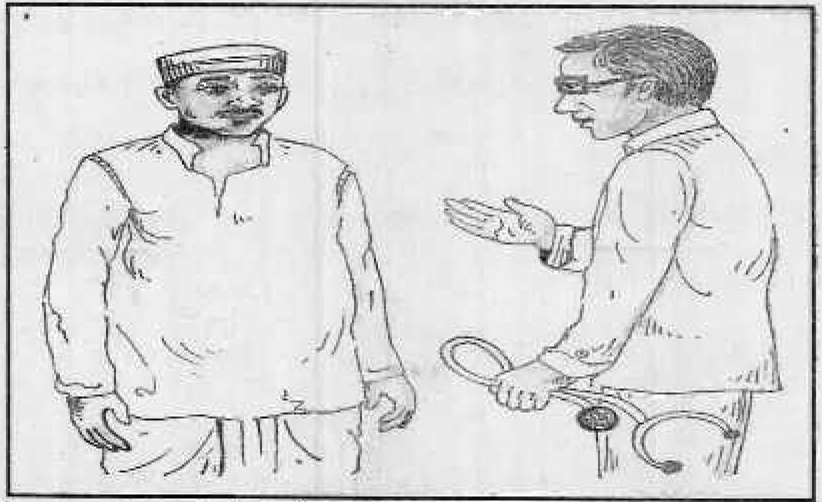

हरिः – नमस्कारः भानुमहोदय !

भानुः – नमस्कारः, अपि कुशली भवान् ?

हरिः – आम्, कुशली, बहुकालानन्तरं दृश्यते भवान् ।

भानुः – किं करोमि, वाणिज्यार्थम् इतस्ततः गन्तव्यं भवत्येव ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अव्ययों का निरूपण -

पिछले वर्ग में अव्ययों का परिचय देते हुए उन्हें तीन वर्गों में रखा गया था - मूल अव्यय, प्रत्ययान्त अव्यय तथा अव्ययीभाव समास । मूल अव्ययों को जोड़ने से संयुक्त अव्यय बनते हैं । उनका प्रयोग भी बहुत रोचक होता है तथा भाषा के प्रवाह को तेज बनाता है । यहाँ कुछ प्रयोग दिये जाते हैं -

यदा-कदा (कभी-कभी) : वर्षाकाले सूर्यः यदा कदा दृश्यते ।

त्वम् अधुना मम गृहे यदा-कदा आगच्छसि ।

यथा कथञ्चित् (किसी प्रकार) : रोगान्तेऽपि अहं यथा कथञ्चित् चलितुं शक्नोमि ।

अद्य केचित् शिक्षकाः आलस्येन यथा कथञ्चित् पाठयन्ति।

इतस्ततः (इधर-उधर) : अयं शिशुः स्वगृहे इतस्ततः भ्रमति ।

अस्मिन् प्राङ्गणे इतस्ततः वस्तूनि विकीर्णानि सन्ति ।

किमपि (कुछ) : अहं किमपि वक्तुम् इच्छामि ।

अपि च (इसके अतिरिक्त) : राजेन्द्र प्रसादः अत्यन्तं मेधावी आसीत् । अपि च स अतीव विनम्रः आसीत् ।

कभी-कभी अव्ययों की आवृत्ति से व्याप्ति का बोध होता है । जैसे -

यदा-यदा (जब-जब), तदा-तदा (तब-तब) : यदा-यदा त्वं गच्छसि, तदा-तदा किमपि शोभनं वस्तु आनयसि।

किमपि-किमपि (कुछ-कुछ) : स किमपि-किमपि वदति किन्तु स्पष्टं न ज्ञायते ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

7. निम्नलिखितक्रियापदानां धातुं पुरुषं वचनं लकारं च लिखत –

क्र.सं.	क्रियापदम्	धातुः	पुरुषः	वचनम्	लकारः
(क)	करोमि				
(ख)	भवन्ति				
(ग)	भविष्यति				
(घ)	चलेत्				
(ङ)	स्यात्				
(च)	आगच्छेत्				
(छ)	वदतु				

योग्यता-विस्तारः

पाठ के सम्बन्ध में –

यह व्यवसायों से सम्बद्ध सामाजिक वार्तालाप के रूप में अभिनयात्मक पाठ है । सामान्य शिष्टाचार की शिक्षा तो इसमें है ही, एक महत्त्वपूर्ण सन्देश दिया गया है कि सम्पूर्ण समाज के सुख-दुःख में एक-एक व्यक्ति की भागीदारी होती है । सामान्यतः समझा जाता है कि व्यापारी वर्ग तथा चिकित्सक वर्ग समाज का शोषण करते हैं । व्यापारी महँगाई को पसन्द करता है और चिकित्सक समाज को रुग्ण होने में ही अपनी भलाई समझता है । यहाँ तर्क द्वारा स्पष्ट किया गया है कि चिकित्सक रोगों का प्रसार नहीं चाहता क्योंकि उसके घर में भी रोग आ सकते हैं और उसे तनाव हो सकता है। व्यापारी भी महँगाई नहीं चाहता क्योंकि महँगे समान को लोग बहुत कम खरीदते हैं और उसका व्यापार प्रभावित होता है । इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था का चित्रण तर्कपूर्ण प्रक्रिया से इस संवाद में किया गया है । लोगों की भ्रान्तियाँ दूर की गयी हैं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. अधोलिखितेषु सन्धिविच्छेदं कुरुत

क्र.सं.	सन्धि-शब्द	विच्छेदः
(क)	एतदर्थम्	
(ख)	कदारभ्य	
(ग)	ग्रीष्मातपेन	
(घ)	तथापि	
(ङ)	नूतनौषधानि	

5. अधोलिखितेषु विभक्तिं वचनं च लिखत ।

क्र.सं.	शब्दः	विभक्तिः	वचनम्
(क)	अस्माकम्		
(ख)	भवतः		
(ग)	देहल्यां		
(घ)	जनाः		
(ङ)	वर्षायाः		

6. अधोलिखितानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत -

क्र.सं.	शब्द :	वाक्यम्
(क)	अपि	
(ख)	आम्	
(ग)	प्रायः	
(घ)	यदि	
(ङ)	अत्र	

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(घ) रमेशः कुत्र प्रशिक्षणं प्राप्नोति ?

(ङ) नूतनौषधानि कुतः आगतानि सन्ति ?

2. कोष्ठात् समुचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत -

(क) भानोः उद्योगः .... अस्ति । (शोभनः/कष्टकरः)

(ख) वाणिज्यार्थम् इतस्ततः .... भवति । (गन्तव्यं/पठनीयं)

(ग) सः तु .... प्रबन्धनस्य प्रशिक्षणं प्राप्नोति । (देहल्यां /पटनानगरे)

(घ) जनाः .... नितरां पीडिताः भवन्ति । (शीतातपेन/ग्रीष्मातपेन)

(ङ) वैद्याः तु प्रायः ईश्वरं प्रार्थयन्ते यत् जनाः .... भवेयुः । (रुग्णाः/स्वस्थाः)

3. पाठाधारेण सत्यम् (√) असत्यम् (×) वा चिह्नीकुरुत -

(क) उद्योगः शोभनः एव अस्ति । ( )

(ख) जनाः ग्रीष्मातपेन नितरां पीडिताः भवन्ति । ( )

(ग) वैद्याः तु प्रायः प्रार्थयन्ते यत् जनाः रुग्णाः भवेयुः । ( )

(घ) रमेशः देहल्यां प्रबन्धनस्य प्रशिक्षणं प्राप्नोति । ( )

(ङ) वणिजः प्रार्थयन्ते यत् महार्घता भवेत् तदा लाभः । ( )

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग) अस्ति, त्यजति, भवति, वद्तु

(घ) पत्रम्, मित्रम्, आम्रः, पुष्पम्

(ङ) व्याघ्रः, गजः, सिंहः, कपोतः

3. उदाहरणानुसारं अव्ययपदानि चिनुत -

यथा - राधा अपि नृत्यति । अपि

(क) शोभनः एव अस्ति उद्योगः । ....

(ख) भवतः अपि काचित् समस्या । ....

(ग) तथापि कष्टस्य कृते क्षमां याचे । ....

(घ) वैद्याः तु प्रायः ईश्वरं प्रार्थयन्ते । ....

(ङ) ननु कुशली भवान् ? ....

4. पञ्चसु संस्कृतवाक्येषु स्वपरिचयं वदत ।

लिखितः

1. एकपदेन उत्तरत -

(क) वैद्यस्य नाम किम् ?

(ख) वणिक् कः अस्ति ?

(ग) रमेशस्य जनकः कः अस्ति ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रसरति = प्र + $\sqrt{\text{सृ}}$, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

त्यजति = $\sqrt{\text{त्यज्}}$, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

इच्छन्ति = $\sqrt{\text{इष्}}$, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

याचे = $\sqrt{\text{याच्}}$, लट्लकारः, आत्मनेपदी, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

शक्नोति = $\sqrt{\text{शक्}}$, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. **उच्चारणं कुरुत –**

एतदर्थम्	कृतेऽपि	अल्पार्घता
नूतनौषधानि	क्रेष्यामः	यत्किमपि
सम्प्राप्तानि	अस्मादृशी	महार्घता
अस्मादृशानाम्		

2. **भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत –**

(क) जनाः, वैद्याः, भवन्तः, ईश्वरः

(ख) न, तर्हि, तु, एव, क्षमा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रकृति-प्रत्यय-विभाग:

दृश्यते = √दृश् + कर्मवाच्य, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

गन्तव्यम् = √गम् + तव्यत्, नपुं॰, एकवचनम्

प्रचलति = प्र + √चल् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

करोति = √कृ , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

प्राप्नोति = प्र + √आप् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

निवसति = नि + √वस् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

भवन्ति = √भू , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

भविष्यति = √भू , लृट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अस्ति = √अस् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

वदतु = √वद् , लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

भवेयुः = √भू , विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

चलेत् = √चल् , विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

प्रार्थयन्ते = प्र + √अर्थ + णिच्, लट्लकारः, बहुवचनम्

आगच्छेत् = आ + √गम् , विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

क्रेष्यामः = √क्री , लृट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वयमपि = हमलोग भी

जानीम: = जानते हैं

कष्टेन = कष्ट से

समाजाश्रित: = समाज पर आश्रित, सामाजिक

वास्तविकरूपेण = यथार्थ रूप में

शक्नोति = सकता है

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेद: पदविच्छेद: वा -

नमस्कार: = नम: + कार: (विसर्गसन्धि:)

बहुकालानन्तरम् = बहुकाल + अनन्तरम् (दीर्घसन्धि:)

इतस्तत: = इत: + तत: (विसर्गसन्धि:)

एतदर्थम् = एतत् + अर्थम् (व्यञ्जनसन्धि:)

कदारभ्य = कदा + आरभ्य (दीर्घसन्धि:)

ग्रीष्मातपेन = ग्रीष्म + आतपेन (दीर्घसन्धि:)

नूतनौषधानि = नूतन + औषधानि (वृद्धिसन्धि:)

निस्संकोचम् = नि: + संकोचम् (विसर्गसन्धि:)

कृतेऽपि = कृते + अपि (पूर्वरूपसन्धि:)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कुतः	=	कहाँ से
चिकित्सकानाम्	=	चिकित्सकों की
अस्मादृशी	=	हमारी जैसी
अंगभूताः	=	अंग स्वरूप
कश्चिद्	=	कोई
प्रसरति	=	फैलता है
पारिवारिकान्	=	परिवार से सम्बद्ध
त्यजति	=	छोड़ता है
कदापि	=	कभी भी
वचनं प्रमाणम्	=	बोली ही प्रमाण है
परिहासेन	=	परिहास से, मजाक से
यत्किमपि	=	जो कुछ भी
उक्तवन्तः	=	बोले
कृते	=	के लिए
याचे	=	माँगता हूँ
क्षमायाचनस्य	=	क्षमा-याचना का

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तथैव	=	वैसे ही
महार्घता	=	मूल्यवृद्धि, महँगाई
प्रभूतः	=	बहुत, प्रचुर मात्रा में
स्यात्	=	हो
नहि	=	न
कष्टकरी	=	कष्ट देनेवाली
सामान्यजनानाम्	=	सामान्य जनों के लिए
चिन्तयन्ति	=	सोचते हैं
अल्पार्घता	=	मूल्य में कमी, महँगाई में कमी
आगच्छेत्	=	आ जाए
तदैव	=	तभी
आवश्यकानि	=	आवश्यक
वस्तूनि	=	वस्तुएँ
क्रेष्यामः	=	खरीदेंगे
क्रयशक्त्याः	=	खरीदने की शक्ति का
अभावात्	=	अभाव से

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रभूतमात्रायाम् = बहुत अधिक मात्रा में

सम्प्राप्तानि = प्राप्त हुए हैं

साम्प्रतम् = आजकल, इस समय

चिन्तिताः = चिन्तित

तर्हि = तो

अस्मादृशानाम् = हमारे जैसों का

दशा = अवस्था, स्थिति

काचित् = कोई

चेत् = यदि

निस्संकोचम् = बिना संकोच के

वदतु = बोलिए, कहिए

वैद्याः = चिकित्सक

प्रार्थयन्ते = प्रार्थना करते हैं

भवेयुः = हों, होने चाहिए

अस्माकम् = हमलोगों का

चलेत् = चलना चाहिए

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जना:	=	लोग
ग्रीष्मातपेन	=	धूप से
नितराम्	=	बहुत अधिक
पीडिता	=	सताये हुए
वर्षाया:	=	वर्षा के
अभावात्	=	अभाव से, न होने से
रुग्णा:	=	बीमार, रुग्ण
तथापि	=	फिर भी
रोगनियन्त्रणस्य	=	रोग नियन्त्रण के
कृते	=	के लिए
कियान्	=	कितना
अपेक्षित:	=	जरूरी, आवश्यक
भविष्यति	=	होगा
देहरादूनत:	=	देहरादून से
नूतनौषधानि	=	नये औषध (जड़ी-बूटी से बनी दवाएँ)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शोभनः	=	सुन्दर
एव	=	ही
उद्योगः	=	उद्योग, रोजगार
देहल्याम्	=	दिल्ली में
स्थित्वा	=	रहकर
प्रबन्धनस्य	=	प्रबन्धन का
प्रशिक्षणम्	=	प्रशिक्षण, ट्रेनिंग
प्राप्नोति	=	प्राप्त करता है (कर रहा है)
एतदर्थम्	=	इसके लिए
बहुकालात्	=	लम्बे समय से
दृष्टवान्	=	देखा
कदारभ्य	=	कब से
अगस्तमासतः	=	अगस्त महीना से
निवसति	=	रहता है
अद्यत्वे	=	आजकल, इन दिनों

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यासः

शब्दार्थ :

अपि - भी

कुशली = कुशल, ठीक

भवान् = आप

आम् = हाँ

बहुकालानन्तरम् = लम्बे समय के बाद

दृश्यते = देखा जाता है, दिख रहे हैं

करोमि = करता हूँ

वाणिज्यार्थम् = वाणिज्य-व्यापार के लिए

इतस्ततः = इधर-उधर

गन्तव्यम् = जाना चाहिए, जाना पड़ता है

भवत्येव = (भवति + एव) होता ही है

भवतः = आपका

कथम् = कैसे

प्रचलति = चलता है

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भानु: – नहि नहि श्रीमन्, महार्घता तु वणिजां कृतेऽपि तथैव कष्टकरी भवति यथा सामान्यजनानां कृते ।

हरि: – तत् कथम् ?

भानु: – अस्माकं व्यवसाय: तु सामान्यजनान् आश्रित: भवति । जना: चिन्तयन्ति यत् अल्पार्घता आगच्छेत् तदैव आवश्यकानि वस्तूनि क्रेष्याम: । अत: क्रयशक्त्या: अभावात् वणिजां लाभ: कुत: ? किन्तु चिकित्सकानां स्थिति: अस्मादृशी न भवति ?

हरि: – कथं न भवति, वैद्या: अपि समाजस्य अंगभूता: एव सन्ति । यदि कश्चित् रोग: प्रसरति तर्हि स: रोग: चिकित्सकस्य पारिवारिकान् जनान् अपि न त्यजति । अत: वैद्या कदापि न इच्छन्ति यत् कश्चिद् रोग: प्रसरेत् तर्हि अस्माकं लाभ: भवेत् ।

भानु: – भवत: वचनं प्रमाणम् । वयं तु परिहासेन एव यत्किमपि उक्तवन्त: । तथापि भवत: कष्टस्य कृते क्षमां याचे ।

हरि: – अत्र क्षमायाचनस्य क: प्रसंग: ? वयमपि तु परिहासं कुर्वन्त: आस्म । वयं जानीम: यत् समाजस्य कष्टेन समाजाश्रित: वर्ग: कदापि वास्तविकरूपेण सुखी भवितुं न शक्नोति ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हरिः – भवतः उद्योगः कथं प्रचलति ?

भानुः – शोभनः एव अस्ति उद्योगः ।

हरिः – भवतः पुत्रः रमेशः किं करोति ?

भानुः – स तु देहल्यां स्थित्वा प्रबन्धनस्य प्रशिक्षणं प्राप्नोति ।

हरिः – एतदर्थम् एव बहुकालात् तं न दृष्टवान् अस्मि, कदारभ्य सः प्रशिक्षणं प्राप्नोति ?

भानुः – स तु अगस्तमासतः देहल्याम् एव निवसति? तस्य द्वितीयं सत्रं प्रचलति ।

हरिः – अद्यत्वे जनाः ग्रीष्मातपेन नितरां पीडिता भवन्ति ।

भानुः – आम्, वर्षायाः अभावात् प्रायः जनाः रुग्णाः भवन्ति तथापि रोगनियन्त्रणस्य कृते कियान् समयः अपेक्षितः भविष्यति ?

हरिः – देहरादूनतः नूतनौषधानि प्रभूतमात्रायां सम्प्राप्तानि सन्ति अतः साम्प्रतं चिन्ता नास्ति ।

भानुः – वैद्याः अपि चिन्तिताः भविष्यन्ति तर्हि अस्मादृशानां का दशा भविष्यति ?

हरिः – भवतः अपि काचित् समस्या अस्ति चेत् निस्संकोचं वदतु ।

भानुः – वैद्याः तु प्रायः ईश्वरं प्रार्थयन्ते यत् जनाः रुग्णाः भवेयुः तर्हि अस्माकम् उद्योगः चलेत् ।

हरिः – आम्, तथैव प्रार्थयन्ते यथा वणिजः प्रार्थयन्ते यत् महार्घता भवेत् तदा अस्माकं लाभः प्रभूतः स्यात् ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पुनः-पुनः (बार-बार) : अहं विश्वासं करोमि, पुनः-पुनः कथं कथयसि ?

शनैः-शनैः (धीरे-धीरे) : शनैः-शनैः सूर्यः अस्तंगतः ।

शिशुः शनैः-शनैः चलति ।

प्रत्ययान्त अव्यय :

कुछ कृत् प्रत्ययों तथा कुछ तद्धित प्रत्ययों से बने हुए शब्द अव्यय के रूप में होते हैं । इसलिए ऐसे अव्ययों के दो भेद हैं - कृदन्त तथा तद्धितान्त । कृदन्त अव्यय क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, णमुल् इत्यादि प्रत्ययों से बनते हैं । जैसे – पठित्वा, परित्यज्य, गन्तुम्, पाठं-पाठम् (पढ़-पढ़कर) इत्यादि ।

प्रयोग -

भोजनं कृत्वा स गतः (भोजन करके वह चला गया) ।

चिरं रुदित्वा शिशुः सुप्तः (देर तक रोकर बच्चा सो गया) ।

पुष्पाणि आनीय स कुत्र गतः (फूल लाकर वह कहाँ गया)?

अन्यान् उपदिश्य स स्वयं नाचरति (दूसरों को उपदेश देकर वह स्वयं व्यवहार नहीं करता।

व्याकरणं पठितुं वयं गच्छामः (व्याकरण पढ़ने के लिए हम जाते हैं) ।

णमुल् का प्रयोग आवृत्ति के साथ होता है -

पुस्तकानि पाठं-पाठं स विद्वान् बभूव (पुस्तकें पढ़-पढ़ कर वह विद्वान् हो गया)।

औषधं पायं-पायं उदविग्नः अस्मि (दवा पी-पीकर मैं व्याकुल हूँ)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तद्धितान्त अव्यय

पञ्चमी विभक्ति के अर्थ वाले तसिल्, सप्तमी के अर्थ वाले त्रल्, काल अर्थ वाले दा एवं प्रकार अर्थ वाले थाल् प्रत्यय से बने हुए शब्द अव्यय होते हैं। जैसे -

कुतः (किम्+तसिल्) क्यों, कहाँ से	:	त्वं कुतः आगच्छसि ?
ततः (तद्+तासिल) वहाँ से, तब	:	यतो धर्मस्ततो जयः। (जब धर्म आया तो विजय भी होगी)
परिवारतः (परिवार + तसिल्) परिवार से	:	अहं परिवारतः सम्पन्नः नास्मि।
सर्वत्र (सर्व+त्रल्) सब जगह	:	अद्य सर्वत्र वर्षा जाता।
कुत्र (किम्+त्रल्) कहाँ	:	त्वं कुत्र वससि ?
अत्र (इदम्+त्रल्) यहाँ	:	अत्र कोऽपि अशिक्षितः नास्ति।
कदा (किम्+दा) कब	:	शिक्षकः कदा आगतः ?
एकदा (एक+दा) एक समय	:	एकदा अहं दिल्लीं गतः।
सर्वथा (सर्व+थाल्) सब प्रकार से	:	त्वं सर्वथा योग्यः असि।
कथम् (किम् + थाल्) कैसे	:	त्वं कथं तत्र गमिष्यसि ?
इत्थम् (इदम् + थाल्) इस प्रकार	:	इत्थं व्याकरणं पठितम्।

•••

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

षष्ठः पाठः

दिवास्वप्नः

[प्रस्तुत पाठ में पञ्चतन्त्र की एक प्रसिद्ध कथा का पद्य रूपान्तर दिया गया है। इसमें यह कहा गया है कि जो व्यक्ति वर्तमान को छोड़कर दूर भविष्यत् की असम्भव कल्पना करता है अर्थात् दिवास्वप्न देखता है, उसकी दुर्गति होती है। वह उपहास का पात्र बनता है। स्वभावकृपण नामक एक भिक्षुक ब्राह्मण ने ऐसी ही असम्भव कल्पना की तथा हास्यास्पद बन गया। इसमें सन्देश है कि हम वर्तमान से धीरे-धीरे आगे बढ़ें। एक ही साथ चिन्तन की शृंखला न बना लें। आगे बढ़ना हो तो उद्यम करें, कल्पना लोक में न रहें। अंग्रेजी में कहावत है– Look far, but not too far.]

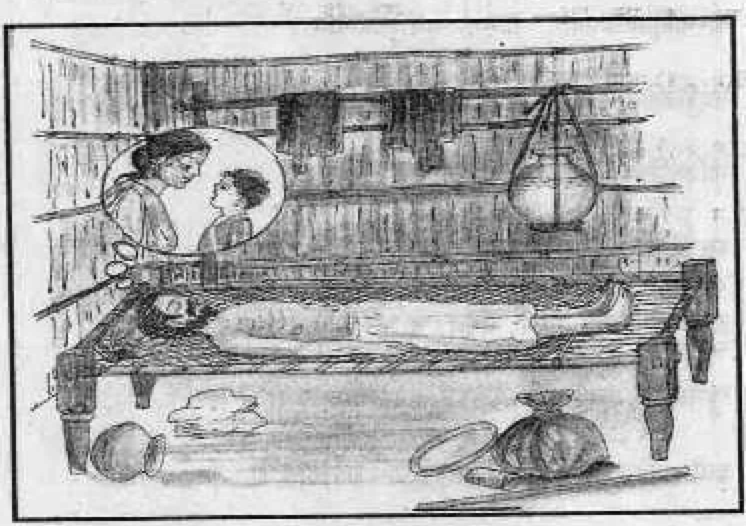

वर्तमानं परित्यज्य सल्लोकं व्यावहारिकम्।
ये जनाः कल्पनालोके रमन्ते ते न पण्डिताः ॥ 1 ॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

स्वभावकृपणो विप्रो भिक्षयार्जितसक्तुभिः ।

जीवनं पालयन्नासीत्कदाचिच्चिन्तने रतः ॥ 2 ॥

सक्तुभिः परिपूर्णोऽयं घटः सम्प्रति विद्यते ।

यदा दुर्भिक्षमायाति मूल्यमेषां भवेद् बहु ॥ 3 ॥

सक्तूनां विक्रयेणाहं रूप्यकाणां शतं लभे ।

तेन क्रेष्याम्यहं नूनमजाद्वयमिहात्मनः ॥ 4 ॥

षाण्मासिकात्प्रसववतः ताभ्यां यूथं भविष्यति ।

तद्विक्रयेण क्रमशः प्रभूतं गोधनं भवेत् ॥ 5 ॥

गोभिर्महिष्यः ताभिश्च वडवानां क्रयो भवेत् ।

प्रसवैर्वडवानां मे नूनमश्वाः भवन्ति हि ॥ 6 ॥

अश्वविक्रयणात् स्वर्णं प्रभूतं मे भविष्यति ।

स्वर्णसत्त्वे चतुःशालं भवनं स्यादसंशयम् ॥ 7 ॥

ततो विवाहो नूनं मे रूपवत्या भवेत्खलु ।

विवाहे सति समये बालको जायते मम ॥ 8 ॥

यदा स पञ्चवर्षीयः मत्सकाशं गमिष्यति ।

व्यस्तोऽहं भिन्नकार्येषु रुष्टः शय्यासमुत्थितः ॥ 9 ॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

इत्थं चिन्तयतस्तस्य सम्भ्रमेण घटो हत: ।
सक्तवो भूमिसाज्जाता भग्ना सर्वापि कल्पना ॥ 10 ॥

यथा मूर्खस्य विप्रस्य कल्पना हानिकारिणी ।
तथाचापि दिवास्वप्नमसंभाव्यं न कल्पयेत् ॥ 11 ॥

शब्दार्था :

परित्यज्य	=	छोड़कर
सल्लोकम्	=	वास्तविक जगत्
रमन्ते	=	प्रसन्न होते हैं, मग्न रहते हैं
स्वभावकृपण:	=	स्वभाव से कंजूस
विप्र:	=	ब्राह्मण
भिक्षयार्जितसक्तुभि:	=	भिक्षा से प्राप्त सत्तू से
कदाचित्	=	कभी
रत:	=	लगा हुआ, मग्न
घट:	=	घड़ा
सम्प्रति	=	इस समय
विद्यते	=	है

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

यदा	=	जब
दुर्भिक्षमायाति (दुर्भिक्षम् + आयाति)	=	अकाल आयेगा
भवेत्	=	होगा
बहु	=	अधिक
एषाम्	=	इनका
विक्रयेण	=	बेचने से
शतम्	=	सौ
लभे	=	पाऊँगा
क्रेष्यामि	=	खरीदूँगा, क्रय करूँगा
नूनम्	=	निश्चय ही
अजाद्वयम्	=	दो बकरियाँ
इह	=	यहाँ
षाण्मासिकात्प्रसवतः	=	छह-छह महीने के बाद प्रसव से
यूथम्	=	झुंड (बकरियाँ)
प्रभूतम्	=	बहुत ही
गोधनम्	=	[illegible] रूपी धन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गोभिर्महिष्य:	=	गायों से भैंसें
वडवानाम्	=	घोड़ियों का
अश्वविक्रयणात्	=	घोड़ों के बेचने से
स्वर्णसत्त्वे	=	सोना रहने पर
चतु:शालम्	=	घर का आँगन जिसके सभी ओर कमरे हों
भवनम्	=	भवन
असंशयम्	=	बिना सन्देह के, निश्चय ही
तत:	=	तब
रूपवत्या	=	रूपवती स्त्री से
जायते	=	उत्पन्न होगा
मत्सकाशम्	=	मेरे समीप
शय्यासमुत्थित:	=	बिछावन से उठकर
इत्थम्	=	इस प्रकार
सम्भ्रमेण	=	घबराहट से
भूमिसाज्जाता:	=	पृथ्वी पर गिर गये
भग्ना	=	टूट गयी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सर्वापि	=	सभी
अद्यापि	=	आज भी
असंभाव्यम्	=	नहीं होने वाला
कल्पयेत्	=	कल्पना करें

सन्धिविच्छेदः/पदविच्छेदः

सल्लोकम्	=	सत् + लोकम् (व्यञ्जनसन्धिः)
भिक्षयार्जितसक्तुभिः	=	भिक्षया + अर्जितसक्तुभिः (दीर्घसन्धिः)
पालयन्नासीत्कदाचिच्चिन्तने	=	पालयन्+आसीत्, कदाचित्+चिन्तने (व्यञ्जनसन्धिः)
परिपूर्णोऽयम्	=	परिपूर्णः + अयम् (विसर्गसन्धिः, पूर्वरूप)
दुर्भिक्षम्	=	दुः + भिक्षम् (विसर्गसन्धिः)
क्रेष्याम्यहम्	=	क्रेष्यामि + अहम् (यणसन्धिः)
गोभिर्महिष्यः	=	गोभिः + महिष्यः (विसर्गसन्धिः)
ताभिश्च	=	ताभिः + च (विसर्गसन्धिः)
प्रसवैर्वडवानाम्	=	प्रसवैः + वडवानाम् (विसर्गसन्धिः)
भवेत्खलु	=	भवेत् + खलु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

व्यस्तोऽहम् = व्यस्तः + अहम् (विसर्गसन्धिः)

भूमिसाज्जाता = भूमिसात् + जाता (व्यञ्जनसन्धिः)

तथाद्यापि = तथा + अद्य + अपि (दीर्घसन्धिः)

प्रकृति – प्रत्यय – विभागः

परित्यज्य = परि + √त्यज् + ल्यप्

पालयन् = √पाल् + णिच् + शतृ

रतः = √रम् + क्त, पुं०

आयाति = आ + √या, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

क्रेष्यामि = √क्री, लृट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

भविष्यति = √भू, लृट्लकारः, प्रथमपुरुषः,एकवचनम्

भग्ना = √भञ्ज् + क्त + टाप् (स्त्री०)

हतः = √हन् + क्त, पुं०

भवन्ति = √भू, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यासः

मौखिकः

1. निम्नलिखितपदानाम् उच्चारणं कुरुत–

सल्लोकम्, पालयन्नासीत्कदाचिच्चिन्तने, नूनमजाद्यमिहात्मनः, षाण्मासिकात्प्रसवतः, गोभिर्महिष्यः, ताभिश्च, अश्वविक्रयणात्, शय्यासमुत्थितः ।

2. अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत–

दुर्भिक्षम्, अद्यापि, सम्प्रति, प्रभूतम्, रतः, सल्लोकम्, विप्रः, क्रेष्यामि, शतम्, वहवानाम् ।

3. निम्नलिखितानां पदानां पाठं कुरुत–

गम् + शतृ = गच्छत्, गच्छन्, गच्छन्ती

भू + शतृ = भवत्, भवन्, भवन्ती

दृश् + शतृ = पश्यत्, पश्यन्, पश्यन्ती

हस् + शतृ = हसत्, हसन्, हसन्ती

पठ् + शतृ = पठत्, पठन्, पठन्ती

लिखितः

1. समुचितविभक्तिप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत–

यथा–सः कलमेन लिखति । (कलम)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

6. सन्धिं सन्धि–विच्छेदं वा कुरुत–

(क) परिपूर्णोऽयम् = ...+ .... ।

(ख) ________ = दुः + भिक्षम् ।

(ग) ताभिश्च = ...+ ....

(घ) सल्लोकम् = ...+ ....

(ङ) .... = भूमिसात् + जाता ।

(च) ________ = क्रेष्यामि + अहम् ।

योग्यताविस्तारः

संस्कृत वाङ्मय में नीतिकथाओं की लम्बी परम्परा रही है जिसका आरम्भ विष्णुशर्मा के पञ्चतन्त्र से प्राप्त होता है । विष्णुशर्मा ने राजा अमरशक्ति के मूर्ख पुत्रों को कुशल राजनीतिज्ञ बनाने के लिए कथासंग्रह के रूप में पञ्चतन्त्र की रचना की थी । वर्तमान पञ्चतन्त्र अपने मूल से बहुत दूर हो चुका है । मूल ग्रन्थ के रूपान्तर विभिन्न विदेशी भाषाओं में पहले ही हो चुके थे तथा मूल की प्राप्ति नहीं होती । वर्तमान पञ्चतन्त्र की रचना किसी जैन कथाकार ने ग्यारहवीं शताब्दी ई. में की थी । इसमें पाँच तन्त्र (खण्ड) मिलते हैं – मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक । प्रत्येक खण्ड में एक मुख्य कथा तथा अनेक अवान्तर कथाएँ हैं । बीच–बीच में अनेक नीतिपरक तथा संक्षिप्तार्थक श्लोक दिये गये हैं । कुल 70 कथाएँ तथा 900 श्लोक इसमें मिलते हैं । मूल पञ्चतन्त्र का पहला अनुवाद चौथी शताब्दी ई. में ईरान की पहलवी भाषा में हुआ था । इसी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(क) पण्डिताः .... न रमन्ते । (कल्पनालोक)

(ख) अहम् ....क्रेष्यामि । (अजाद्वय)

(ग) अयं घटः .... परिपूर्णः अस्ति ।(सक्तु)

(घ) मम विवाहः .... भवेत् । (रूपवती)

(ङ) अहं .... व्यस्तः अस्मि ।(कार्य)

2. वाक्यानि रचयत–

(क) अहम् .... ।

(ख) बालकः .... ।

(ग) विद्यते .... ।

(घ) घटः .... ।

(ङ) गोधनम् .... ।

(च) विप्रः .... ।

3. पाठानुसारेण कोष्ठात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) ह्यः .... पुस्तकं क्रेष्यामि । (त्वम्/अहम्)

(ख) .... जनस्य कल्पना हानिकारिणी भवति । (चतुरस्य/मूर्खस्य)

(ग) विप्रस्य घटः .... परिपूर्णः आसीत् । (सक्तुभिः, जलैः)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(घ) विप्रः ______ आसीत् । (भिक्षुकः/धनिकः)

(ङ) सक्तूनां विक्रयेणाहं रूप्यकाणां ______ लभे । (शतम्/पञ्चशतम्)

(च) विप्रस्य सम्भ्रमेण घटः ______ अभवत् । (भग्नः/संयुक्तः)

4. पाठानुसारेण एतेषु किं 'सत्यम्' 'असत्यम्' वा लिखत –

(क) पण्डिताः कल्पनालोके रमन्ते । ( )

(ख) मूर्खाः कल्पनालोके रमन्ते । ( )

(ग) विप्रः स्वभावकृपणः आसीत् । ( )

(घ) विप्रः उदारचरितः आसीत् । ( )

(ङ) घटः सक्तुभिः परिपूर्णः आसीत् । ( )

(च) दिवास्वप्नः असंभाव्यो भवति । ( )

5. संस्कृतभाषायाम् एकपदेन उत्तराणि लिखत –

(क) स्वभावकृपणः कः आसीत् ?

(ख) सक्तुभिः परिपूर्णः कः आसीत् ?

(ग) अश्वविक्रयणात् प्रभूतं किं भविष्यति ?

(घ) मूर्खस्य कल्पना कीदृशी भवति ?

(ङ) कः असंभाव्यः भवति ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

के आधार पर अरबी, तुर्की, लैटिन आदि पश्चिमी भाषाओं में यह रूपान्तरित हुआ था। दुर्भाग्य की बात है कि मूल पञ्चतन्त्र के साथ पहलवी अनुवाद भी नष्ट हो गया।

अपरीक्षितकारक में ऐसी कथाएँ संकलित हैं जो बिना बिचारे हुए काम करने के परिणामों को दिखाती हैं। पाठक को इनसे मनोरंजन होता है किन्तु जीवन की शिक्षा भी मिलती है। प्रस्तुत पाठ इसी खण्ड से "सोमशर्मपिता" की कथा का ही नवीन पद्यरूपान्तर है।

◆◆◆

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

डॉ॰ राजेन्द्रप्रसादः

[इस पाठ में भारतीय गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद का संक्षिप्त परिचय है। वे बिहार राज्य के ही थे। उनका छात्र-जीवन अत्यन्त गौरवपूर्ण था। सभी परीक्षाओं में प्रथम स्थान पाने वाले डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने बिहार, बंगाल, असम तथा बर्मा इन समस्त प्रदेशों के छात्रों में मैट्रिक परीक्षा में प्रथम स्थान पाया था। यह गौरव अत्यन्त विरल था। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.ए. और एम.एल. - दोनों ही परीक्षाओं में सर्वोच्च स्थान पाने के बाद भी अपनी सरलता के लिए नेताओं के बीच ये प्रतिष्ठित थे। समाज सेवा, भारतीय संस्कृति से प्रेम, सादगी भरा जीवन तथा सभी कार्यों में ईमानदारी राजेन्द्र बाबू की विशेषताएँ थीं। राष्ट्रपति भवन में भी इनके सरल जीवन को पीढ़ियों तक याद किया जाता है।]

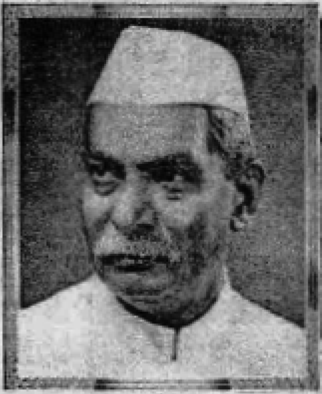

स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमो राष्ट्रपतिः भारतरत्न राजेन्द्रप्रसादः। तस्य जन्म 1884 तमे ख्रीष्टाब्दे दिसम्बरमासस्य तृतीयदिनांके बिहारप्रान्तस्य सारणमण्डले (सम्प्रति सिवानमण्डले) 'जीरादेई' इति ग्रामे अभवत्। स बाल्यादेव परममेधावी आसीत्। बालावस्थायां स छपरानगरे अधीतवान्। तदनन्तरं पटनानगरस्य टी. के. घोष-अकादमीतः प्रवेशिका

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(मैट्रिकुलेशन)-परीक्षायां सम्मिलितः । कलकत्ताविश्वविद्यालयस्य सर्वेषु प्रवेशिकाछात्रेषु सर्वोत्तमं स्थानं प्राप्तवान् । ततः कलकत्तानगरं गत्वा कालेजशिक्षां विधिशास्त्रशिक्षां प्राप्य सर्वासु परीक्षासु मूर्धन्यं पदं लब्धवान् । ततः अध्यापनकार्ये संलग्नः । पश्चात् अधिवक्तृवृत्तिं गृहीतवान् ।

राजेन्द्रप्रसादः महान् बुद्धिमान् व्यावहारिकः च आसीत् । तस्य मनः अधिवक्तृवृत्तौ संलग्नं नासीत् । बालावस्थायामेव तस्मै स्वदेशभक्तिः रोचते स्म । स सदैव राष्ट्रियभावनया अभिभूतः आसीत् । महात्मनो गान्धिनः मार्गम् आश्रित्य स्वतन्त्रतासमरे योगदानं कृतवान् । 1917 तमे खीष्टाब्दे 'चम्पारण-आन्दोलने' महात्मनो गान्धिनः सम्पर्कं समायातः । ततः सर्वं कार्यं विहाय देशसेवायां संलग्नः ।

1934 तमे वर्षे बिहारप्रान्ते भयावहो भूकम्पः अजायत । मार्गाः भग्नाः, भवनानि विशीर्णानि, क्षेत्राणि विनष्टानि, जले स्थलं स्थले च जलं जातम् । अवरुद्धो यातायातः । प्रसृताः रोगाः, सर्वत्र हाहाकारः सञ्जातः । तदा राजेन्द्रप्रसादः स्वकीयैः सहचरैः सह जनानां प्रभूतां सहायतां कृतवान् । नगराद् नगरम्, ग्रामाद् ग्रामं गतवान् यथाशक्ति स सहायताकार्यं सम्पादितवान् । कासरोगेण ग्रस्तोऽपि राजेन्द्रप्रसादः शरीरचिन्तामुपेक्ष्य परोपकारे संलग्नः ।

स्वतन्त्रतान्दोलने सर्वदा अयम् अग्रणीः । बहूनि वर्षाणि कारागारेऽपि व्यतीतवान् । स्वतन्त्रे भारते विधाननिर्माणस्य कार्यं प्रथमम् आसीत् । 1946 तमे खीष्टाब्दे एकादशदिनाङ्के दिसम्बरमासे भारतीयसंविधान-सभायाः प्रथमः कार्यकारी अध्यक्षः अभवत् । किञ्च 1950 तमे खीष्टाब्दे स भारतीयगणतन्त्रस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः स्वीकृतः अभूत् । तदनन्तरं राष्ट्रपतिपदस्य कृते द्वयोः निर्वाचनयोः स एव विजयं प्राप्तवान् ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राजेन्द्रप्रसादाय बहवः विश्वविद्यालयाः डॉक्टर इत्यादीन् उपाधीन् दत्तवन्तः । सः बहूनि पुस्तकानि अलिखत् । संस्कृतभाषायाः महत्त्वविषयेऽपि स पुस्तकं लिखितवान् । तस्य भारतीयसंस्कृतौ महती श्रद्धा आसीत् । तस्य सर्वेषु धर्मेषु सहानुभूतिरपि आसीत् । स आडम्बररहितः सरलस्वभावः निःस्वार्थदेशसेवी इति सर्वत्र प्रसिद्धः । 1963 तमे खीष्टाब्दे फरवरीमासस्य अन्तिमतिथौ स स्वपार्थिवं शरीरं त्यक्तवान् । बिहारराज्यस्य सम्पूर्णस्य देशस्य च गौरवरूपः राजेन्द्रप्रसादः सदा स्मरणीयः ।

शब्दार्थाः

खीष्टाब्दे	=	ईस्वी सन् में
सम्प्रति	=	इस समय, वर्तमान में
अभवत्	=	हुआ
आसीत्	=	था
परममेधावी	=	अत्यधिक प्रतिभा सम्पन्न
बालावस्थायाम्	=	बाल अवस्था में
अधीतवान्	=	अध्ययन किया, पढ़ा
तदनन्तरम्	=	उसके बाद
अकादमीतः	=	अकादमी से (वैसा संस्थान जहाँ कई विशेषज्ञ या विद्वान् अध्यापन करते हैं, अकादमी कहलाता है ।)
परीक्षायाम्	=	परीक्षा में

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सम्मिलितः	=	शामिल हुए
सर्वेषु	=	सब में, सभी में
प्रवेशिकाछात्रेषु	=	प्रवेशिका (मैट्रिक/माध्यमिक) के छात्रों में
प्राप्तवान्	=	प्राप्त किया
ततः	=	उसके बाद
गत्वा	=	जाकर
विधिशास्त्रशिक्षाम्	=	कानून की शिक्षा को
प्राप्य	=	प्राप्त करके
सर्वासु परीक्षासु	=	सभी परीक्षाओं में
मूर्धन्यं पदम्	=	शीर्षस्थ स्थान को, श्रेष्ठ स्थान को
लब्धवान्	=	पाया
अध्यापनकार्ये	=	अध्यापन कार्य में
संलग्नः	=	जुड़ गए, शामिल हुए
पश्चात्	=	बाद में, पीछे
अधिवक्तृवृत्तिम्	=	अधिवक्ता (lawyer) के कार्य को
गृहीतवान्	=	ग्रहण किया, अपनाया

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

महान्	=	बड़ा (great)
व्यावहारिकः	=	समुचित आचरण करने वाला
अधिवक्तृवृत्तौ	=	अधिवक्ता (वकील) के कार्य (व्यवसाय, पेशा) में
तस्मै	=	उसके लिए
स्वदेशभक्तिः	=	अपने राष्ट्र के प्रति भक्ति, प्रेम, लगाव
रोचते स्म	=	अच्छा लगता था
सदैव	=	हमेशा, सर्वदा, हर समय
राष्ट्रियभावनया	=	राष्ट्रीय भावना से
अभिभूतः	=	ओत-प्रोत, अत्यधिक प्रभावित
मार्गम् आश्रित्य	=	मार्ग का अनुसरण करके
स्वतन्त्रतासमरे	=	स्वतन्त्रता संग्राम में, आजादी की लड़ाई में
योगदानम्	=	भागीदारी, सहयोग
कृतवान्	=	किया
समायातः	=	आये
विहाय	=	छोड़कर, त्यागकर
भयावहः	=	भयानक

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अजायत	=	उत्पन्न हुआ, आया
भग्नाः	=	टूट गये
क्षेत्राणि	=	खेत
विशीर्णानि	=	छिन्न-भिन्न हो गये, बिखर गये, टूट गये
विनष्टानि	=	नष्ट हो गये
जातम्	=	हो गया
अवरुद्धः	=	बन्द हो गया
प्रसृताः	=	फैल गये
हाहाकारः	=	शोक, विलाप, रोना-धोना (शोक की प्रबलता)
सञ्जातः	=	फैल गया, हो गया
स्वकीयैः	=	अपने
सहचरैः	=	सहयोगियों, सहकर्मियों के साथ
जनानाम्	=	लोगों का
प्रभूताम्	=	प्रचुर, विपुल, अनेक
कृतवान्	=	किया

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नगराद्-नगरम् = नगर से नगर में

ग्रामाद्-ग्रामम् = गाँव से गाँव में

यथाशक्ति = शक्ति, क्षमता के अनुसार

सम्पादितवान् = पूरा किया

कासरोगेण = अस्थमा (दमा) रोग से

ग्रस्तोऽपि (ग्रस्तः + अपि) = ग्रसित होने पर भी

शरीरचिन्तामुपेक्ष्य (शरीरचिन्ताम्+उपेक्ष्य) = शरीर की (स्वास्थ्य की) चिन्ता की अनदेखी करके

अग्रणीः = आगे चलने वाले, मार्गदर्शक

कारागारेऽपि = जेल में भी

विधिनिर्माणस्य = कानून बनाने का

प्रथमम् = पहला (first)

भारतीयसंविधानसभायाः = भारतीय संविधान सभा के

स्वीकृतः = स्वीकृत

द्वयोः = दोनों में

अभूत् = हुए

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राष्ट्रपतिपदस्य कृते	=	राष्ट्रपति पद के लिए
निर्वाचनयोः	=	निर्वाचनों में
बहवः	=	अनेक
इत्यादीन् उपाधीन्	=	इत्यादि उपाधियों को
दत्तवन्तः	=	दिए
अलिखत्	=	लिखा
लिखितवान्	=	लिखा
तस्य	=	उसका
भारतीयसंस्कृतौ	=	भारतीय संस्कृति में
महती	=	बड़ी, बहुत
श्रद्धा	=	विश्वास के साथ सम्मान का भाव
सर्वेषु	=	सब, सभी में
धर्मेषु	=	धर्मों में
सहानुभूतिः	=	उदारता का भाव
आडम्बररहितः	=	बाह्य ताम-झाम, दिखावा से अलग
स्वपार्थिवम्	=	अपने नश्वर (शरीर) को
त्यक्तवान्	=	छोड़ दिया
स्मरणीयः	=	याद रखने योग्य

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सन्धिविच्छेदः पदविच्छेदः वा -

बाल्यादेव	=	बाल्यात् + एव (व्यञ्जनसन्धिः)
ग्रस्तोऽपि	=	ग्रस्तः + अपि (विसर्गसन्धिः, पूर्वरूपसन्धिः)
शरीरचिन्तामुपेक्ष्य	=	शरीरचिन्ताम् + उपेक्ष्य
कारागारेऽपि	=	कारागारे+अपि (पूर्वरूपसन्धिः)
इत्यादीन्	=	इति+आदीन् (यण्सन्धिः)
महत्त्वविषयेऽपि	=	महत्त्वविषये + अपि (पूर्वरूपसन्धिः)
सहानुभूतिरपि	=	सहानुभूतिः + अपि (विसर्गसन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

अभवत्	=	√भू (धातु), लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
आसीत्	=	√अस् , लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
प्राप्तवान्	=	प्र+ √आप् +क्तवतु, पुं०
गत्वा	=	√गम् +क्त्वा
संलग्नः	=	सम् + √लस्ज् + क्त, पुं०
व्यावहारिकः	=	वि + अव + √हृ + घञ् = व्यवहारः;
		व्यवहार + ठक् = व्यावहारिकः

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रोचते = √रुच्, आत्मनेपदी, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभिभूतः = अभि + √भू + क्त

आश्रित्य = आ + √श्रि + ल्यप्

कृतवान् = √कृ + क्तवतु, पुं॰

समायातः = सम् + आ + √या + क्त

अजायत = √जन् + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

भग्नाः = √भञ्ज् + क्त, पुं॰, बहुवचनम्

विशीर्णानि = वि + √शॄ + क्त, नपुं॰, बहुवचनम्

विनष्टानि = वि + √नश् + क्त, नपुं॰, बहुवचन

जातम् = √जन् + क्त, नपुं॰, एकवचनम्

अवरुद्धः = अव + √रुध् + क्त, नपुं॰, एकवचनम्

सञ्जातः = सम् + √जन् + क्त, पुं॰, एकवचनम्

कृतवान् = √कृ + क्तवतु, पुं॰, एकवचनम्

गतवान् = √गम् + क्तवतु, पुं॰, एकवचनम्

सम्पादितवान् = सम् + √पद् + णिच् + क्तवतु, पुं॰, एकवचनम्

ग्रस्तः = √ग्रस् + क्त, पुं॰, एकवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उपेक्ष्य = उप + √ईक्ष् + ल्यप्

व्यतीतवान् = वि + अति + √इ + क्तवतु, पुं०

स्वीकृतः = स्व + च्वि + √कृ + क्त, पुं०, एकवचनम्

अभूत् = √भू + लुङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

दत्तवन्तः = √दा + क्तवतु, पुं०, बहुवचनम्

अलिखत् = √लिख् , लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

लिखितवान् = √लिख् + क्तवतु, पुं०

वर्धितम् = √वृध् + णिच् + क्त, नपुं०, एकवचनम्

विराजते = वि+√राज् , आत्मनेपदी, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं वदत –

(क) भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः कः ?

(ख) सारणमण्डलः कुत्र अस्ति ?

(ग) सः कुतः प्रवेशिकापरीक्षाम् उत्तीर्णः ?

(घ) चम्पारण-आन्दोलनस्य नेतृत्वं कः कृतवान् ?

(ङ) भारतीयसंविधानसभायाः प्रथमः कार्यकारी-अध्यक्षः कः अभवत् ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. सन्धिविच्छेदं कुरुत -

(क) प्रस्तोऽपि

(ख) तदनन्तरम्

(ग) सर्वोत्तमम्

(घ) बाल्यादेव

(ङ) सदैव

3. प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत -

गत्वा, प्राप्य, गृहीतवान्, कृतवान्, स्मरणीयः, त्यक्तवान्

4. अधोलिखितानां पदानां विभक्तिं वदत -

ग्रामे, सर्वेषु, तस्मै, स्वतन्त्रे, तस्य, देशस्य, धर्मेषु, बहूनि, सहचरैः, परीक्षासु ।

लिखितः

1. एकपदेन उत्तरम् लिखत ।

(क) डॉ. राजेन्द्रप्रसादस्य जन्म कदा अभवत् ?

(ख) बालावस्थायां सः कुत्र अधीतवान् ?

(ग) कस्यां परीक्षायां सर्वोत्तमं स्थानं प्राप्तवान् ?

(घ) चम्पारण-आन्दोलनं कदा अभवत् ?

(ङ) डॉ. राजेन्द्रप्रसादः कस्याः सभायाः अध्यक्षः अभवत् ?

(च) कस्मिन् वर्षे डॉ. राजेन्द्रप्रसादः भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः जातः ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. पाठानुसारं सुमेलनं कुरुत -

'क'	'ख'
(क) भयावहो भूकम्पः	(i) मार्गाः
(ख) भग्नाः	(ii) यातायातः
(ग) अवरुद्धः	(iii) 1934 तमे ख्रीष्टाब्दे
(घ) रोगाः	(iv) क्षेत्राणि
(ङ) विनष्टानि	(v) प्रसृताः

3. पाठानुसारं कोष्ठकात् शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

(क) सः बाल्यादेव ....आसीत् । (मूर्खः/परममेधावी)

(ख) तस्य जन्म ....मण्डले अभवत् । (सारण/पटना)

(ग) तस्य .... संस्कृतौ महती श्रद्धा आसीत् । (पाश्चात्य/भारतीय)

(घ) सः .... तमे ख्रीष्टाब्दे प्रथमः राष्ट्रपतिः स्वीकृतः अभूत्। (1952/1950)

(ङ) तस्य सर्वेषु .... सहानुभूतिरपि आसीत् । (धर्मेषु/अधर्मेषु)

4. अधोलिखितानां शुद्धकथनानां समक्षं (√) अशुद्धानां च समक्षं (×) इति चिह्नांकनं कुरुत -

(क) सः टी. के. घोष-अकादमीतः प्रवेशिकापरीक्षायां सम्मिलितः । ( )

(ख) तस्य मनः अधिवक्तृवृत्तौ संलग्नं नासीत् । ( )

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग) सर्वं कार्यं विहाय देशसेवायां संलग्नः । ( )

(घ) स्वतन्त्रतान्दोलने सर्वदा अयम् अग्रणीः । ( )

(ङ) तस्य सर्वेषु धर्मेषु सहानुभूतिः नासीत् । ( )

5. संधिं कुरुत -

तत्+अनन्तरम्, बाल्यात्+एव, सदा+एव, इति+आदि, बाल+अवस्था ।

6. रिक्तस्थानानि उचितपदेन पूरयत -

(क) गत्वा = √गम् + ... (ग) लिखितवान् = ... + क्तवतु

(ख) .... = प्र + √आप् + क्तवतु

(घ) स्मरणीयः = √स्मृ + ... (ङ) दत्तवन्तः = √दा + ...

योग्यता-विस्तारः

स्वतन्त्र भारत के नेताओं में डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे । अपनी प्रतिभा तथा मेधाविता के कारण छात्रावस्था में ही ये अत्यधिक प्रसिद्ध हो चुके थे। कलकत्ता उच्च न्यायालय तथा बाद में पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में इनकी प्रसिद्धि हो चुकी थी तथापि महात्मा गाँधी के चम्पारण सत्याग्रह के समय इन्होंने सब कुछ त्यागकर गाँधीजी का साथ दिया तथा वहाँ के किसानों को निलहे गोरों से मुक्ति दिलाई । शरीर से कुछ अस्वस्थ रहने पर भी (क्योंकि इन्हें सांस की बीमारी थी) इन्होंने समाजसेवा के लिए कभी अपने रोग की चिन्ता नहीं की । 1934 ई॰ में बिहार

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

में आए भीषण भूकम्प के समय इनकी संगठन-शक्ति तथा सेवा-भावना अत्यन्त श्लाघनीय थी । कांग्रेस दल में इन्होंने बहुत ऊँची प्रतिष्ठा पाई थी । दूसरे नेताओं को आगे बढ़ाने में अपनी क्षमता तथा योग्यता की प्रायः इन्होंने सर्वत्र उपेक्षा की । "सादा जीवन उच्च विचार" इनके जीवन-दर्शन का मुख्य सूत्र था । परिणामतः राष्ट्रपति भवन में रहते हुए इन्होंने भारतीय संस्कृति का स्वरूप प्रदर्शित किया और विदेशी संस्कृति को सर्वथा परिवर्तित कर दिया था । यदि आधुनिक नेताओं में कोई अनुकरणीय हैं तो पहला नाम डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद का ही होगा। भारतीय गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में स्वीकार करके भारत ने इनका उचित सम्मान किया ।

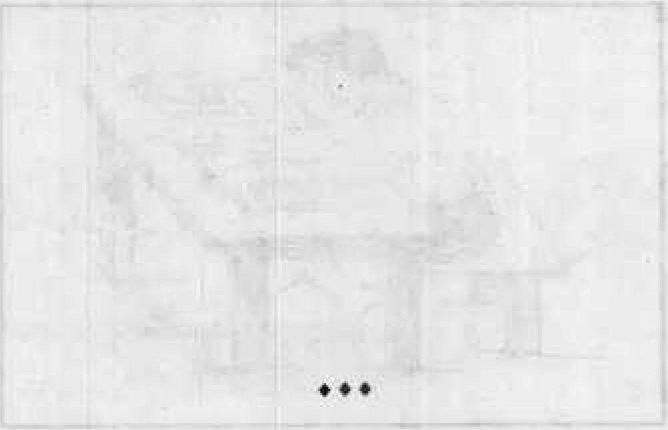

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अष्टमः पाठः

विभक्तिश्लोकाः

{इस पाठ में मूल रूप से संस्कृत के प्रसिद्ध नीतिश्लोक संकलित हैं किन्तु इन श्लोकों की एक विशिष्टता ध्यान देने योग्य है। इनमें क्रमशः प्रथमा से लेकर सप्तमी तक की विभक्तियाँ मुख्य रूप से प्रयुक्त हैं। प्रथम श्लोक में प्रथमा विभक्ति, द्वितीय श्लोक में द्वितीया, तृतीय श्लोक में तृतीय इत्यादि। इसका यह अर्थ नहीं कि उन श्लोकों में अन्य विभक्तियाँ नहीं हैं, अन्वय के लिए तो उनका प्रयोग होना ही था किन्तु प्रधानता एक-एक श्लोक में एक-एक विभक्ति को दी गयी है। यह मनोरञ्जक प्रयोग है जो छात्रों को कण्ठाग्र रखना चाहिए।}

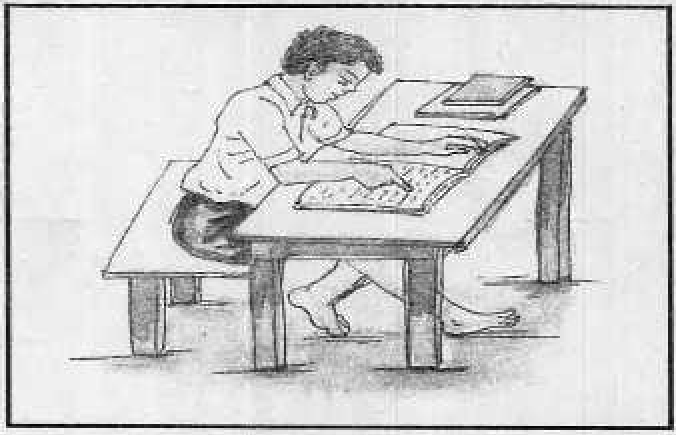

उद्यमः साहसं धैर्यं, बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् ॥1॥

विनयो वंशमाख्याति, देशमाख्याति भाषितम्।
सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम् ॥2॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मृगाः मृगैः संगमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः ।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः, समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ॥3॥

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥4॥

क्रोधात् भवति संमोहः संमोहात् स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥5॥

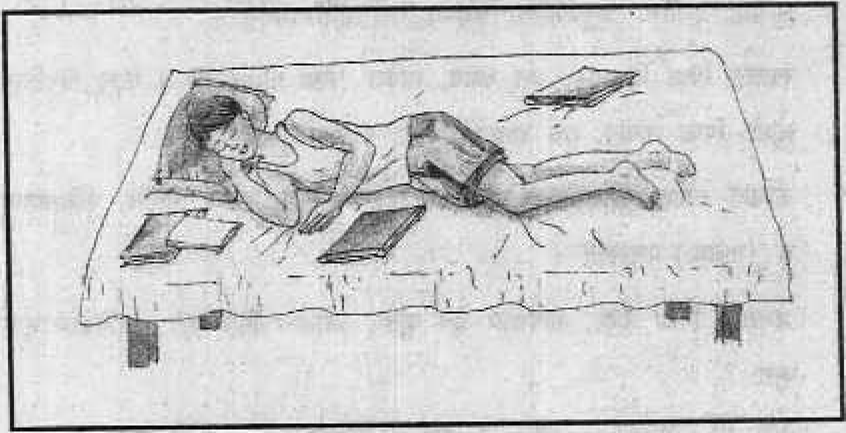

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥6॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो न हि सर्वत्र, चन्दनं न वने वने ॥7॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अन्वयः

1. यत्र उद्यमः, साहस, धैर्य, बुद्धिः, शक्तिः पराक्रमः एते षड् वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् (भवति)।

2. विनयः वंशम् आख्याति, भाषितं देशम् आख्याति, सम्भ्रमः स्नेहम् आख्याति, वपुः भोजनम् आख्याति ।

3. मृगाः मृगैः संगम् अनुव्रजन्ति, गावः गोभिः, तुरंगाः तुरंगैः अनुव्रजन्ति, मूर्खैः मूर्खे, सुधियः सुधीभिः अनुव्रजन्ति, सख्यम् समानशीलव्यसनेषु ।

4. खलस्य विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय । एतद् विपरीतम् साधोः विद्या ज्ञानाय, धनं दानाय, शक्तिः रक्षणाय (भवति) ।

5. क्रोधात् संमोहः संमोहात् स्मृतिविभ्रमः, स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशः भवति, बुद्धिनाशात् च (मानवः) प्रणश्यति ।

6. अलसस्य विद्या कुतः, अविद्यस्य धनं कुतः, अधनस्य मित्रं कुतः, अमित्रस्य सुखं कुतः ?

7. शैले-शैले माणिक्यं न, गजे-गजे मौक्तिकं न, सर्वत्र साधवः न हि, वने-वने चन्दनं न भवति ।

शब्दार्थाः

उद्यमः	=	परिश्रम
धैर्यम्	=	धैर्य, संतोष, धीरज
पराक्रमः	=	पराक्रम

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

षडेते (षड्+एते)	=	ये छ:
वर्तन्ते	=	रहते हैं
सहायकृत्	=	सहायता करने वाले
विनय:	=	नम्रता, विनय
वंशमाख्याति	=	वंश को बताती है
(वंशम् + आख्याति)		
देशमाख्याति (देशम् + आख्याति)	=	देश को बताती है
भाषितम्	=	भाषण, बोली, वाणी
सम्भ्रम:	=	हाव-भाव
स्नेहमाख्याति	=	प्रेम को बताती है
वपुराख्याति	=	शरीर को बताती है
मृगा:	=	हिरण (बहुवचन)
संगमनुव्रजन्ति	=	साथ अनुसरण करते हैं
मूर्खाश्च	=	और मूर्ख
मूर्खै:	=	मूर्खों के साथ
सुधिय:	=	बुद्धिमान
समानशील	=	समान आचरण और आदत वालों में
सख्यम्	=	मित्रता

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विवादाय	=	विवाद/झगड़ा के लिए
मदाय	=	घमंड के लिए
परेषाम्	=	दूसरों के
परिपीडनाय	=	सताने के लिए
खलस्य	=	दुष्ट की
साधोर्विपरीतमेतद्	=	इसके विपरीत साधु की
ज्ञानाय	=	ज्ञान के लिए
दानाय	=	दान के लिए
रक्षणाय	=	रक्षा के लिए
संमोहः	=	अज्ञान
स्मृतिविभ्रमः	=	स्मृति का भ्रमित होना
स्मृतिभ्रंशाद्	=	स्मरण शक्ति नष्ट होने से
प्रणश्यति	=	नष्ट हो जाता है
अलसस्य	=	आलसी का/की
माणिक्यम्	=	माणिक्य
मौक्तिकम्	=	मोती

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सन्धि-विच्छेदः/पदविच्छेदः

वंशमाख्याति	=	वंशम् + आख्याति
देशमाख्याति	=	देशम् + आख्याति
स्नेहमाख्याति	=	स्नेहम् + आख्याति
वपुराख्याति	=	वपुः + आख्याति (विसर्गसन्धिः)
मूर्खाश्च	=	मूर्खाः + च (विसर्गसन्धिः)
षडेते	=	षट् + एते
गावश्च	=	गावः + च (विसर्गसन्धिः)
गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः	=	गोभिः + तुरगाः + तुरङ्गैः (विसर्गसन्धिः)
साधोर्विपरीतमेतद्	=	साधोः + विपरीतम् + एतत् (विसर्गसन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

अनुव्रजन्ति	=	अनु + √व्रज् + प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्,
प्रणश्यति	=	प्र + √श् + प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
आख्याति	=	आ + √ख्या + प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यासः

मौखिकः

1. एकपदेन उत्तरं वदत–

(क) विनयः किमाख्याति ?

(ख) भाषितं किमाख्याति ?

(ग) सम्भ्रमः किमाख्याति ?

(घ) वपुः किमाख्याति ?

(ङ) खलस्य विद्या किं करोति ?

2. श्लोकं श्लोकांशं वा वदत–

(क) विद्या विवादाय धनं मदाय,
शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।

(ख) अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ।।

लिखितः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) कस्य धनं मदाय भवति ?

(ख) साधोः विद्या किमर्था भवति ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग) साधोः शक्तिः किमर्था भवति ?

(घ) कस्मात् स्मृतिविभ्रमः भवति ?

(ङ) विनयः किमाख्याति ?

(च) वपुः किमाख्याति ?

2. अधोलिखितानि रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) शैले-शैले .... मौक्तिकं .... ।

.... सर्वत्र, चन्दनं न .... ॥

(ख) .... संमोहः सम्मोहात् .... ।

स्मृतिभ्रंशाद् .... प्रणश्यति ॥

3. सुमेलनं कुरुत–

'क'	'ख'
(i) देशमाख्याति	(अ) भोजनम्
(ii) वपुराख्याति	(आ) भाषितम्
(iii) स्नेहमाख्याति	(इ) सम्भ्रमः
(iv) वंशमाख्याति	(ई) संमोहः
(v) क्रोधात्	(उ) मानवः प्रणश्यति
(VI) बुद्धिनाशात्	(उफ) विनयः

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. संधि–विच्छेदं / पदविच्छेदं कुरुत –

(क) मूर्खाश्च = ______ + ______।

(ख) देशमाख्याति = ______ + ______।

(ग) स्नेहमाख्याति = ______ + ______।

(घ) वपुराख्याति = ______ + ______।

(ङ) वंशमाख्याति = ______ + ______।

5. उदाहरणानुसारं लिखत रेखाङ्कितपदे का विभक्ति प्रयुक्ता

यथा – सः <u>विद्यालयं</u> गच्छति । द्वितीया विभक्ति ।

(क) <u>अग्नये</u> स्वाहा । ______

(ख) वपुः <u>भोजनम्</u> आख्याति । ______

(ग) <u>अलसस्य</u> विद्या कुतः । ______

(घ) <u>खलस्य</u> विद्या विवादाय । ______

(ङ) सः <u>अश्वात्</u> पतति । ______

(च) बालस्य <u>मुखे</u> सरस्वती निवसति । ______

6. निम्नलिखितानाम् अव्ययानां वाक्ये प्रयोगं कुरुत –

यत्र, तत्र, च, सर्वत्र, अपि, किम् ।

7. देवः कदा सहायकः अस्ति ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

योग्यता–विस्तारः

संस्कृत भाषा में सात विभक्तियाँ होती हैं। विभक्तियों का प्रयोग वाक्य–रचना के लिए अत्यन्त उपयोगी है। कभी–कभी मनोरंजन के लिए अथवा अनायास ही कुछ श्लोक ऐसे बन जाते हैं जिनमें किसी एक विभक्ति के प्रयोग को प्रमुखता दी जाती है। महाकाव्यों में ऐसे प्रयोग बहुधा मिलते हैं। जैसे किसी देवता को नमस्कार करना हो तो एक ही श्लोक में चतुर्थी विभक्ति के बहुत से ऐसे पद रखे जाते हैं जो विशेषण–विशेष्य के रूप में हों। जैसे–

"नमः सर्वविदे तस्मै व्यासाय कविवेधसे।"

उस श्लोक में अन्य विभक्तियाँ केवल वाक्य–सम्बन्ध के निर्वाह के लिए रहती हैं किन्तु प्रमुखता एक ही विभक्ति को दी जाती है। सातों विभक्तियों से संम्बद्ध सात पद्य इस पाठ में दिये गये हैं। इनका महत्त्व नीतिश्लोक के रूप में ही है। इसलिए ये सभी मुक्तक (पृथक्–पृथक्) हैं।

वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड (सर्ग 15) में अशोकवनिका में जब हनुमान् सीता को देखते हैं तो दस से अधिक पद्यों में इसी प्रकार द्वितीया विभक्ति वाले शब्द आते हैं जो सीता के विशेषण या उपमान के रूप में हैं। कुछ श्लोक देखें –

अश्रुपूर्णमुखीं दीनां कृशामनशनेन च।
शोकध्यानपरां दीनां नित्यं दुःखपरायणाम्॥
सुखार्हां दुःखसंतप्तां व्यसनानामकोविदाम्।
तां विलोक्य विशालाक्षीमधिकं मलिनां कृशाम्।
तर्कयामास सीतेति कारणैरुपपादिभिः॥

* * *

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

द्रुतवाचनम्

1. राजगृहम्

[आधुनिक भारत के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में राजगृह का स्थान अनेक कारणों से महत्त्वपूर्ण है । यहाँ का प्राकृतिक परिवेश युगों से यात्रियों को आकृष्ट करता रहा है । अनेक तप्त कुण्डों की स्थिति के कारण जाड़े के मौसम में यहाँ एक प्रकार का मेला लग जाता है । मलमास के समय लगनेवाला मेला तो पूरे बिहार में विख्यात है । धार्मिक दृष्टि से वैदिक, बौद्ध तथा जैन धर्मों के पवित्र स्थान के रूप में यह हजारों वर्षों से विख्यात रहा है । भारतीय इतिहास में मगध जनपद का प्राय: एक सहस्र वर्षों तक सम्पूर्ण उत्तरापथ पर शासन रहा था । इसका अवसर इसी नगरी से आरम्भ हुआ । वायुपुराण में मगध के चार प्रसिद्ध पुण्यस्थलों में यह एक है –

मगधेषु गया पुण्या नदी पुण्या पुन:पुना ।
च्यवनस्याश्रम: पुण्य: पुण्यं राजगृहं वनम् ॥]

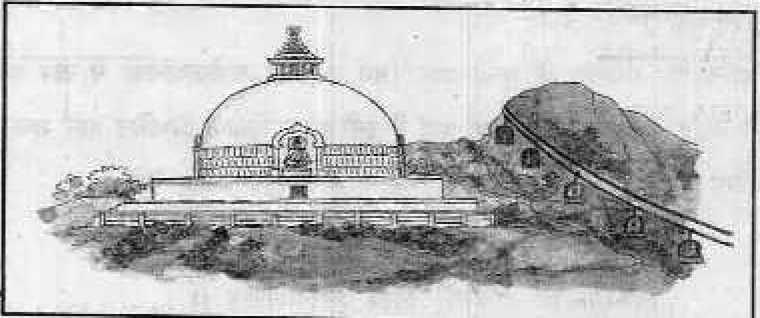

अहो मनोरमं राजगृहं नाम आरोग्यस्थलं बिहारराज्ये । मगधप्रदेशस्य प्राचीना राजधानी राजगृहमेव बभूव । महाभारते जरासन्धस्य राज्ञ: अत्र राजधानी आसीदिति कथा प्राप्यते । जरासन्धस्य भयात् कृष्ण: मथुरां परित्यज्य द्वारिकां पलायित: इत्यपि कृष्णकथा श्रूयते । तदानीं राजगृहस्य नाम गिरिव्रज: इति आसीत् । इतिहासे ईसापूर्व षष्ठशतके अत्र

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बिम्बिसारः मगधनरेशः प्रथमो राजा आसीत् । तस्य पुत्रः अजातशत्रुः बुद्धकाले कठोरशासकरूपेण प्रसिद्धः । मगधस्य प्रभावं स भारते वर्षे प्रसारितवान् आसीत् । कालान्तरे पाटलिपुत्रे मगधराजधानी प्रतिष्ठापिता । यत् प्राचीरं राजगृहे अद्य प्राप्यते तत् अजातशत्रुकृतस्य दुर्गस्य एव मन्यते ।

राजगृहस्य धार्मिकं महत्त्वं तस्मादेव कालात् वर्धितम् । भगवान् बुद्धः महावीरश्च राजगृहे स्व-स्व प्रवासं कृतवन्तौ । राजगृहे सिद्धार्थः दार्शनिकज्ञानाय समागतः आसीत् । कथ्यते यत् स आचार्यस्य अराडकलामस्य शिष्यरूपेण सांख्यदर्शनस्य ज्ञानं लब्धवान् । ततः पश्चादेव सिद्धार्थः बोधगयां गतः, बोधिं च प्राप्तवान् । पुनः बुद्धरूपेण इह राजगृहे स अनेकान् वर्षावासान् व्यतीतवान् । बुद्धस्य महानिर्वाणात् अनन्तरं सप्तपर्णीगुहायां तस्य वचनानि संगृहीतानि । तत्र प्रथमा बौद्धसंगीतिः आयोजिता ।

जैनानामपि तीर्थस्थलं राजगृहं वर्तते । विपुलपर्वते अद्य प्रसिद्धं जैन मन्दिरं विद्यते । भगवान् महावीरः जैनतीर्थंकरः राजगृहे भूयोभूयः समागतः आसीत् । अतएव जैनाः राजगृहस्य यात्रां पवित्रां मन्यन्ते । अद्य अतिप्रसिद्धं जैनसंस्थानं राजगृहे पुष्पितं फलितं वर्तते । वैदिकधर्मस्य कृतेऽपि राजगृहे त्रैवार्षिकी मलमासमेला आयोजिता भवति । तत्र अपूर्वं दृश्यं जायते ।

राजगृहस्य प्राकृतिकः परिवेशः सौन्दर्यपूर्णः वर्तते । तत्र विशालः परिसरः सप्तभिः हरितैः पर्वतैः अलंकृतः । सर्वे पर्वताः पूजनीयाः । केन्द्रस्थाने तप्तकुण्डानि सर्वदा उष्णं जलं धारयन्ति । ब्रह्मकुण्डे तीर्थयात्रिणः स्नात्वा आरोग्यं लभन्ते । एवमेव सप्तनलिकाभिः प्रवहत् उष्णं जलं च आरोग्यप्रदम् । जापानदेशीयेन बौद्धविदुषा फूजी गुरुणा निर्मितं विश्वशान्तिस्तूपं (निर्माणकालः 1969 ई०) राजगृहस्य प्रतिष्ठां वर्धयति । तत् स्तूपं प्राप्तुं

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रज्जुमार्गोऽपि वर्तते । वेणुवनस्य समीपे जापानीयं बौद्धमन्दिरमपि विद्यते ।

बिम्बिसारस्य कारागारम्, स्वर्णभाण्डागारम्, मखदूमकुण्डम् - इत्यादीन्यपि राजगृहे दर्शनीयानि सन्ति । राजगृहे यात्रिणां निवासाय धर्मशाला: अन्यानि भवनानि च प्रभूतानि सन्ति । पर्यटनविभागेन राजगृहस्य कृते महान् उद्यम: क्रियते ।

शब्दार्था: -

मनोरमम्	=	सुन्दर
प्राप्यते	=	प्राप्त होती है
अद्यापि	=	आज भी
केचित्	=	कुछ
परित्यज्य	=	छोड़कर
पलायित:	=	भाग गये
श्रूयते	=	सुनी जाती है
तदानीम्	=	उस समय
प्रसारितवान्	=	फैलाया
कालान्तरे	=	बाद में, दूसरे काल में
प्रतिष्ठापिता	=	स्थापित की गयी
प्राचीरम्	=	किले की
तस्मादेव	=	उस समय से ही

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वर्धितम्	=	बढ़ा
प्रवासम्	=	अस्थायी निवास
समागतः	=	आया
लब्धवान्	=	पाया
बोधिम्	=	ज्ञान, सच्चा ज्ञान
इह	=	यहाँ
वर्षावासान्	=	वर्षा ऋतु में निवास करना (चातुर्मास)
व्यतीतवान्	=	बिताया
महानिर्वाणात्	=	मृत्यु के (बाद)
अनन्तरम्	=	बाद
संगृहीतानि	=	संकलित हुए
बौद्धसंगीतिः	=	बौद्धसम्मेलन
विपुलपर्वते	=	विपुल नामक पहाड़ पर
भूयोभूयः	=	बार-बार
समागतः	=	आया
कृतेऽपि	=	के लिए भी
उष्णम्	=	गर्म

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

स्नात्वा = नहा कर

प्राप्तुम् = पहुँचने के लिए

कारागारम् = जेल

स्वर्णभाण्डागारम् = सोन भण्डार (सोना आदि रखने का खजाना)

परिसरः = आँगन, क्षेत्र

रज्जुमार्गोऽपि = रोपवे भी, लोहे की रस्सी से लटकी हुई ट्राली का रास्ता

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः/पदविच्छेदः –

राजगृहमेव = राजगृहम् + एव

आसीदिति = आसीत् + इति (व्यञ्जनसन्धिः)

अद्यापि = अद्य + अपि (दीर्घसन्धिः)

इत्यपि = इति + अपि (यण्सन्धिः)

तस्मादेव = तस्मात् + एव (व्यञ्जनसन्धिः)

समागतः = सम् + आगतः (व्यञ्जनसन्धिः)

वर्षावासः = वर्षा + आवासः (दीर्घसन्धिः)

कृतेऽपि = कृते + अपि (पूर्वरूपसन्धिः)

पश्चादेव = पश्चात् + एव (व्यञ्जनसन्धिः)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भूयोभूयः = भूयः + भूयः (विसर्गसन्धिः)

रज्जुमार्गोऽपि = रज्जुमार्गः + अपि (विसर्गसन्धिः)

इत्यादीन्यपि = इति + आदीनि + अपि (यण्सन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः –

परित्यज्य = परि + √त्यज् + ल्यप्

समागतः = सम + आ + √गम् + क्त

स्नात्वा = √स्ना + क्त्वा

बभूव = √भू + लिट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

लभन्ते = √लभ् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

क्रियते = √कृ कर्मवाच्यम्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

आसीत् = √अस् + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

मन्यते = √मन् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं वदत –

(क) राजगृहं कस्मिन् राज्ये अस्ति ?

(ख) अजातशत्रुः कस्य पुत्रः आसीत् ?

(ग) अजातशत्रुः कीदृशः राजा आसीत् ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(घ) राजगृहे क: दार्शनिकज्ञानाय समागत: आसीत् ?

(ङ) सिद्धार्थ: कस्य शिष्यरूपेण सांख्यदर्शनस्य ज्ञानं लब्धवान् ?

2. अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत -

परित्यज्य, पलायित:, बभूव, केचित्, प्रसारितवान्, आसीत्, प्रवासम्, प्राचीरम्

3. सन्धिविच्छेदं पदविच्छेदं वा कुरुत -

इत्यादीन्यपि, कृतेऽपि, समागत:, अद्यापि, इत्यपि

लिखित:

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन/द्विपदेन वा लिखत -

(क) मगधप्रदेशस्य प्राचीना राजधानी का बभूव ?

(ख) कस्य भयात् कृष्ण: मथुरां परित्यज्य द्वारिकां पलायित: ?

(ग) "गिरिव्रज:" इति कस्य नाम आसीत् ?

(घ) सिद्धार्थ: दार्शनिकज्ञानाय कुत्र समागत: आसीत् ?

(ङ) सिद्धार्थ: कुत्र बोधिं प्राप्तवान् ?

(च) प्रथमा बौद्धसंगीति: कुत्र आयोजिता ?

2. सन्धि-विच्छेदं पदच्छेदं वा कुरुत -

(क) इत्यादीन्यपि = ...

(ख) पश्चादेव = ...

(ग) कृतेऽपि = ...

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(घ) रज्जुमार्गोऽपि = ...

(ङ) भूयोभूयः = ...

(च) आसीदिति = ...

3. अधोलिखितेषु क्रियापदेषु लकारं पुरुषं वचनं च लिखत ।

बभूव, मन्यते, आसीत्, लभन्ते, क्रियते ।

4. **वाक्यनिर्माणं कुरुत -**

आसीत्, विद्यते, महान्, सन्ति, जलम्, पर्वतः

5. अधोलिखितेषु रेखांकितपदेषु विभक्तिं लिखत -

(क) पर्यटनविभागेन महान् उद्यमः क्रियते ।

(ख) राजगृहस्य प्राकृतिक परिवेशः सौन्दर्यपूर्णः वर्तते ।

(ग) वेणुवनस्य समीपे जापानीयं बौद्धमन्दिरमपि विद्यते ।

(घ) तत्र विशालः परिसरः सप्तभिः हरितैः पर्वतः अलंकृतः ।

(ङ) मगधस्य प्रभावं भारतवर्षे प्रसारितवान् आसीत् ।

6. सुमेलनं कुरुत -

(क) सिद्धार्थस्य गुरुः	(अ) बोधगयायाम्
(ख) सिद्धार्थः बोधिं प्राप्तवान्	(आ) सर्वदा उष्णं जलं धारयन्ति
(ग) तप्तकुण्डानि	(इ) कृष्णः पलायितः
(घ) जरासन्धस्य भयात्	(ई) अजातशत्रुः
(ङ) बिम्बिसारस्य पुत्रः	(उ) अराडकलामः

•••

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

द्रुतवाचनम्

21 हास्यकणिका:

[मानव जीवन में हास-परिहास की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इससे जीवन में उत्साह तथा नयी ऊर्जा का संचार होता है। जो लोग इससे दूर रहते हैं वे तनाव में जीते हैं। इसलिए हास्य को एक रस माना गया है क्योंकि यह आनन्द प्रदान करता है। हास्य से सम्बद्ध रचनाएँ बड़ी और छोटी दोनों प्रकार की होती हैं। छोटी रचनाओं को हास्यकणिका के रूप में प्रतिपादित किया जाता है। इन्हें हिन्दी में चुटकुला कहा जाता है। अपने लघु आकार में होने पर भी ये मुस्कुराहट उत्पन्न करके जीवन के तनाव को शिथिल करते हैं। यहाँ ऐसे ही कुछ प्रसंग दिये गये हैं।]

1. मानचित्रे न नदी

अध्यापक: – मोहन ! गंगानदी कुत्र विद्यते ?

मोहन: – आचार्य ! भूमौ अस्ति।

अध्यापक: – हसित्वा वदति 'मानचित्रे कुत्र अस्ति इति वदतु।'

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मोहनः – श्रीमन् ! मानचित्रे कथं भवितुम् अर्हति सा नदी ? यदि तत्र स्यात् तर्हि मानचित्रम् आर्द्रं भवेत् खलु ?

2. तदर्थं चेत्

भार्या – कुत्र गच्छति भवान् ?

पतिः – आत्मदाहं कर्तुं गच्छामि । किमर्थम् ?

भार्या – अस्तु, तर्हि पुरातनं वस्त्रं धृत्वा गच्छतु, यतो हि नूतनं दग्धं भविष्यति चेत् वृथा हानिः ।

3. ज्योतिषिणः उपदेशः

पुरुषः – (ज्योतिषिणः समीपे आगत्य) मम हस्ते कण्डूतिः भवति ।

ज्योतिषी – तदा धनम् आगमिष्यति ।

पुरुषः – मम कर्णे अपि कण्डूतिः ।

ज्योतिषी – कर्णाभरणम् अपि प्राप्स्यसि ।

पुरुषः – मम कण्ठे अपि ....

ज्योतिषी (कोपेन)– धावित्वा वैद्यं प्रति गच्छ । त्वं चर्मरोगेण ग्रस्तः ।

4. अहम् एव आनयामि

(आरक्षकः चौरं मार्गे नयन् अस्ति)

चौरः – स्वामिन् ! कृपया माम् एकं क्षणं मोचयतु ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आरक्षक: – किं कार्यम् ? किमर्थं विमोचनम् ?

चौर: – शिरोवेदनया पीडित: अस्मि । महती पीडा वर्तते । एकां पीडानाशिनीं गोलिकां क्रीत्वा शीघ्रम् आगच्छामि ।

आरक्षक: – भो:, किम् अहं भवत: चातुर्यं न जानामि ? अहं भवन्तं त्यजामि चेत् भवान् तथैव पलायनं कुर्यात् । पुन: न आगच्छेत् एव । मां वञ्चयितुं भवान् न शक्नोति । भवान् अत्रैव तिष्ठतु । अहमेव गत्वा भवते गोलिकाम् आनयामि ।

5. यथा लिखितं तथैव कृतम्

वैद्य: – इदानीं कथम् अस्ति भवत: आरोग्यम् ?

रोगी – सम्यक् जातम् ।

वैद्य: – मया उक्तं सर्वम् औषधं भवता स्वीकृतं खलु !

रोगी – नैव खलु । कूप्यां यथा लिखितम् अस्ति तथा कृतम् ।

वैद्य: – कूप्यां किं लिखितम् आसीत् ।

रोगी – कूपीम् आवरणेन सम्यक् पिधाय शीतके स्थापनीयम् इति लिखितम् आसीत् तत्र । अहं तथैव कृतवान् ।

शब्दार्था: –

अध्यापक: = शिक्षक

कुत्र = कहाँ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भूमौ	=	धरती पर
हसित्वा	=	हँसकर
वदति	=	बोलता है
मानचित्रे	=	मानचित्र में, पर
वदतु	=	बोलिए
श्रीमान्	=	महाशय, महोदय
कथम्	=	कैसे
स्यात्	=	होगा, हो
आर्द्रम्	=	गीला
भवेत्	=	हो जाएगा
खलु	=	निश्चित ही
तदर्थम्	=	उसके लिए
चेत्	=	यदि
किमर्थम्	=	किसलिए, क्यों
पुरातनम्	=	पुराना
वस्त्रं धृत्वा	=	वस्त्र धारण करके
गच्छतु	=	जाइए

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

यत:	=	क्योंकि
नूतनम्	=	नया
दग्धं भविष्यति	=	जल जाएगा
वृथा	=	व्यर्थ
ज्योतिषिण:	=	ज्योतिषी के
हस्ते	=	हाथ में
कण्डूति:	=	खुजलाहट
कर्णे	=	कान में
कर्णाभरणम्	=	कान का आभूषण
प्राप्स्यसि	=	प्राप्त करोगे
कण्ठे	=	गले में
कोपेन	=	क्रोध से
धावित्वा	=	दौड़कर
वैद्यं प्रति	=	वैद्य के पास
चर्मरोगेण	=	त्वचा की बीमारी से
आनयामि	=	लाता हूँ
आरक्षक:	=	सिपाही

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नयन्	=	ले जाता हुआ
स्वामिन्	=	हे मालिक
माम्	=	मुझको
एकं क्षणम्	=	एक पल
मोचयतु	=	छोड़ दीजिए
किमर्थम् विमोचनम्	=	किसलिए छोड़ना
शिरोवेदनया	=	सिर दर्द से
महती पीडा	=	बहुत ज्यादा दर्द
एकाम्	=	एक (को)
पीडानाशिनीम्	=	दर्द नाशक (को)
गोलिकाम्	=	गोली (tablet)
चातुर्यम्	=	चालाकी
जानामि	=	जानता हूँ
भवन्तम्	=	आपको
त्यजामि	=	छोड़ता हूँ
तथैव	=	वैसे ही
पलायनम्	=	भाग जाना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कुर्यात्	=	किया जाना चाहिए
आगच्छेत्	=	आ जाना चाहिए
वञ्चयितुम्	=	ठगने के लिए
भवान्	=	आप
शक्नोति	=	सकता है
अत्रैव	=	यहीं
तिष्ठतु	=	ठहरिए
अहमेव	=	मैं ही
गत्वा	=	जाकर
भवते	=	आपके लिए
आनयामि	=	लाता हूँ
लिखितम्	=	लिखा हुआ
कृतम्	=	किया गया
इदानीम्	=	इस समय
भवतः	=	आपका
आरोग्यम्	=	स्वास्थ्य
सम्यक्	=	ठीक

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जातम्	=	हो गया है
उक्तम्	=	कहा गया
सर्वम्	=	सभी
औषधम्	=	औषध, दवा
स्वीकृतम्	=	ग्रहण/स्वीकार/किया गया
कूप्याम्	=	शीशी पर
आवरणेन	=	ढक्कन से
पिधाय	=	बन्द करके
शीतके	=	ठण्डा करने वाले यन्त्र (फ्रीज) में
स्थापनीयम्	=	रखना चाहिए

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः/पदविच्छेदः -

कर्णाभरणम्	=	कर्ण + आभरणम् (दीर्घसन्धिः)
तथैव	=	तथा + एव (वृद्धिसन्धिः)
अत्रैव	=	अत्र + एव (वृद्धिसन्धिः)
नैव	=	न + एव (वृद्धिसन्धिः)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः -

धृत्वा	=	√धृ + क्त्वा
आगत्य	=	आ + √गम् + ल्यप्
आगमिष्यति	=	आ + √गम् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
प्राप्स्यसि	=	प्र + √आप् , लट्लकारः, मध्यमपुरुषः, एकवचनम्
धावित्वा	=	√धाव् + क्त्वा
ग्रस्तः	=	ग्रस् + क्त, पुं॰, एकवचनम्
आनयामि	=	आ + √नी , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्
नयन्	=	√नी + शतृ, पुं॰, एकवचनम्
मोचयतु	=	√मुच् + णिच् + लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
क्रीत्वा	=	√क्री + क्त्वा
जानामि	=	√ज्ञा , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्
त्यजामि	=	√त्यज् , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्
कुर्यात्	=	√कृ , विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
तिष्ठतु	=	√स्था , लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
लिखितम्	=	√लिख् + क्त, नपुं॰, एकवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कृतम् = √कृ + क्त, नपुं०, एकवचनम्

जातम् = √जन् + क्त, नपुं०, एकवचनम्

आसीत् = √अस् , लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

स्थापनीयम् = √स्था + णिच् + अनीयर्, नपुं०, एकवचनम्

कृतवान् = √कृ + क्तवतु, पुं०, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत -

अध्यापकः, गंगानदी, आर्द्रम्, किमर्थम्, ज्योतिषिणः, आगत्य, कर्णाभरणम्, चर्मरोगेण, कण्डूतिः, मोचयतु, शिरोवेदनया, पीडानाशिनीम् ।

2. अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत -

श्रीमान्, वदति, भूमौ, कथम्, आरक्षकः, स्वामिन्, जानामि , गत्वा, भवान्, त्यजामि, भार्या, नूतनम् ।

3. अपने स्मरण से कोई चुटकुला सुनाइए ।

लिखितः

1. संस्कृतभाषायां वाक्यनिर्माणं कुरुत -

गत्वा, जानामि, कृतवान्, आसीत्, अस्ति, गच्छामि ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. अधोलिखितानां पदानां सन्धि-विच्छेदं कुरुत –

(क) कर्णाभरणम् = ...

(ख) अत्रैव = ...

(ग) नैव = ...

(घ) इत्यादि = ...

(ङ) तथैव = ...

(च) यद्यपि = ...

3. सुमेलनं कुरुत –

(क) धृत्वा	(अ) √क्री + क्त्वा
(ख) क्रीत्वा	(आ) √कृ + क्तवतु
(ग) धावित्वा	(इ) √धृ + क्त्वा
(घ) कृतवान्	(ई) √धाव् + क्त्वा
(ङ) दत्त्वा	(उ) √ग्रस् + क्त
(च) ग्रस्तः	(ऊ) √दा + क्त्वा

4. निम्नलिखितानां पदानां बहुवचनरूपं लिखत –

आगमिष्यति = ...

आनयामि = ...

जानामि = ...

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

त्यजामि = ...

आसीत् = ...

अस्ति = ...

भवति = ...

वदामि = ...

गच्छामि = ...

5. **कोष्ठात् चित्वा उचितपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत -**

[आत्मदाहम्, समीपे, कण्डूतिः, पीडितः, कृतवान्, गोलिकाम्]

(क) ज्योतिषिणः .... आगत्य ।

(ख) मम कर्णे अपि .... ।

(ग) .... कर्तुं गच्छामि ।

(घ) शिरोवेदनया .... अस्मि ।

(ङ) अहमेव गत्वा भवते .... आनयामि ।

(च) अहं तथैव .... ।

6. **उदाहरणानुसारं अव्ययपदानि चिनुत -**

यथा - कुत्र गच्छति भवान् ? ...कुत्र...

(क) मानचित्रे कथं भवितुम् अर्हति सा नदी ? ....

(ख) तदा धनम् आगमिष्यति । ....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग) मम कर्णे अपि कण्डूतिः । ....

(घ) अहं तथैव कृतवान् । ....

(ङ) कर्णाभरणम् अपि प्राप्स्यसि । ....

7. अधोलिखितानि अशुद्धानि पदानि शुद्धानि कृत्वा लिखत -

(क) हसीत्वा = ...

(ख) मानचीत्रम् = ...

(ग) गङ्गानदि = ...

(घ) स्वामीन् = ...

(ङ) अरोग्यम् = ...

(च) सम्यक = ...

(छ) शक्नोती = ...

(ज) कूपिम् = ...

◆◆◆

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

द्रुतवाचनम्

3. छात्रचर्या

[मनुष्यों का आरम्भिक जीवनकाल छात्रावस्था के रूप में अपेक्षित है। प्राचीनकाल में जीवन चार आश्रमों में विभक्त था – ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम को ही छात्र जीवन कहा जाता है। इस अवस्था में ज्ञान और बल दोनों का अर्जन करने से पूरा जीवनकाल अच्छा होता है। इसीलिए इस आश्रम पर प्राचीन भारत में बहुत बल दिया गया है। आज तो स्थान-स्थान पर शिक्षालय सुलभ हैं किन्तु प्राचीन समय में ज्ञानार्जन के लिए छात्रों को घर छोड़कर दूर जाना पड़ता था। गुरु के आश्रम में ज्ञान और बल का अर्जन एवं उचित अनुशासन की शिक्षा मिलती थी। आज के आवासीय विद्यालय कुछ इसी प्रकार की गतिविधि रखते हैं। यही कारण है कि गृहत्याग पर बल दिया जाता था।]

छादयति छत्रवत् गुरोः दोषान् इति छात्रः कथ्यते। विद्यार्थी, शिक्षार्थी, ब्रह्मचारी इत्यपि तस्यैव नामान्तरं कथ्यते। गुरोः सम्बन्धेन स शिष्यः इत्यपि कथ्यते। गुरुशिष्यौ इति सापेक्षौ शब्दौ। शिष्येण एव गुरुः भवति, गुरुणा एव शिष्यः भवति। शासनात् अर्थात्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गुरोः अनुशासनग्रहणेन शिष्यः उच्यते (शास् + क्यप्) । 'चर्या' शब्दः चर् धातोः यत् प्रत्ययेन निष्पन्नः । अस्यार्थः आचरणं व्यवहारः नियमाः इति यावत् । एवं छात्राणां ये नियमाः सन्ति, या च दिनचर्या भवेत् सा एव छात्रचर्या ।

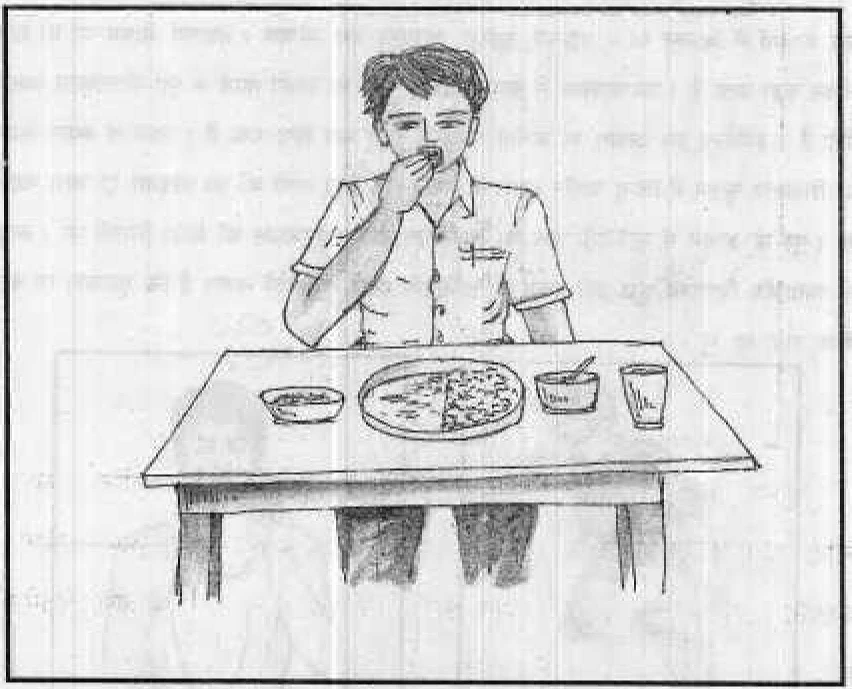

छात्राः शिक्षार्थं यां जीवनचर्यां गृह्णन्ति सा जीवनचर्या तपस्यारूपा । अतएव कथ्यते – छात्राणां अध्ययनमेव छात्राणां तपस्या इति भावः । छात्राः यत्र निवसेयुः तत्र ब्राह्ममुहूर्ते अर्थात् सूर्योदयात् पर्याप्तं पूर्वं जागृयुः । ब्राह्मे मुहूर्ते जागरणेन बुद्धिः सम्यक् प्रकाशते इति कथयन्ति आयुर्विदः । बुद्धिशुद्धौ तु शरीरमपि शुध्यति । कार्येषु उत्साहः जायते । अतः प्रातरेव जागरणं छात्रस्य कर्तव्यम् । यथायोग्यम् अभिवादनं च प्रातःकाले

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सहाध्यायिनां गुरूणां च करणीयम् । तदनु नित्यकर्माणि कर्तव्यानि । शरीरस्य यथासाध्यं शोधनं कर्तव्यम् । प्रातःकाले स्मरणशक्तिः प्रकृष्टा भवति । अतः निर्धारितं पाठं स्मरेत् । यः पाठः स्मरणे कालान्तरे पर्याप्तं कालम् अपेक्षते, स प्रातःकाले अल्पमेव कालमपेक्षते ।

गुरूणां सहायतया छात्राः स्व-स्व-पाठस्य बोधमपि अल्पसमयेन कुर्वन्ति । अतः गुरुसेवा छात्राणां धर्मः कथ्यते । सेवया प्रसन्नाः गुरवः स्वकीयम् अनुभवं छात्रेभ्यः प्रयच्छन्ति । पाठशालायां बहूनि कार्याणि छात्रेभ्यः दीयन्ते । तैः कार्यैः छात्राणां हितमेव भवति । अतः कार्यसम्पादने कदापि आलस्यं न कुर्यात् ।

यथासमयं प्राप्तेन आहारेण संतोषं कुर्यात् । छात्राः अल्पाहाराः स्युः इति प्राचीना नीति । उक्तं च -

काकचेष्टा वकध्यानं निद्रा चैव शुनः समा ।
अल्पाहारः गृहत्यागः विद्यार्थी पञ्चलक्षणः ॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

एतानि छात्राणां लक्षणानि सन्ति । कथम् ? काक इव चेष्टा भवेत् । यथा काकः निरन्तरं प्रयत्नशीलः दृश्यते तथैव छात्रोऽपि सततमुद्यमशीलः भवेत् । एवं वकः इव ध्यानमपि कुर्यात् । तस्य निद्रा शुनः इव क्षणिका भवेत् । अर्थात् बहुकालं यावत् स न शयीत । तस्य भोजनम् अल्पं स्यात् । तथा गृहस्य ममत्वस्य त्यागेऽपि उत्साहितः स भवेत्। अनेन अध्ययनं प्रति तस्यानुरागः प्रवर्धेत । अत्र छात्रस्य सम्पूर्णा चर्या निरूपिता वर्तते ।

शब्दार्थाः –

छादयति	=	ढँकता है
छत्रवत्	=	छाता की तरह
गुरोः	=	गुरु के
कथ्यते	=	कहा जाता है
इत्यपि	=	यह भी
तस्यैव	=	उसका भी
नामान्तरम्	=	दूसरा नाम
सम्बन्धेन	=	सम्बन्ध के कारण
सापेक्षौ	=	एक दूसरे से जुड़े हुए
शिष्येण	=	शिष्य द्वारा
शासनात्	=	शासन से

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अनुशासनग्रहणेन	=	अनुशासन ग्रहण करने से
उच्यते	=	कहा जाता है
प्रयत्नेन	=	प्रयास से
निष्पन्नः	=	निकला हुआ, सम्पन्न
अस्यार्थः	=	इसका अर्थ
आचरणम्	=	आचरण, व्यवहार
यावत्	=	जबतक
भवेत्	=	होना चाहिए
छात्रचर्या	=	छात्र का क्रिया-कलाप
शिक्षार्थम्	=	शिक्षा ग्रहण करने के लिए
जीवनचर्याम्	=	जीवन के क्रिया-कलाप को
गृह्णन्ति	=	ग्रहण करते हैं
तपस्यारूपा	=	तपस्या जैसी
अध्ययनमेव	=	अध्ययन ही
निवसेयुः	=	निवास करें
ब्राह्ममुहूर्त	=	ब्राह्ममुहूर्त (सुबह 4 बजे से सूर्योदयपूर्व का समय-ब्राह्मवेला)
जागरणेन	=	जागने से

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सम्यक्	=	ठीक से
प्रकाशते	=	प्रकाशित होता है
आयुर्विदः	=	आयुर्वेद के जानकार
बुद्धिशुद्धौ	=	बुद्धि के शुद्ध होने पर
शुध्यति	=	शुद्ध होता है
कार्येषु	=	कार्यों में
जायते	=	उत्पन्न होता है
प्रातरेव	=	प्रातः काल में ही, सुबह में ही
जागरणम्	=	जागना
यथायोग्यम्	=	जहाँ तक योग्य हो
अभिवादनम्	=	अभिवादन, प्रणामादि
सहाध्यायिनाम्	=	साथ में अध्ययन करने वालों का
करणीयम्	=	करना चाहिए
तदनु	=	उसके बाद
नित्यकर्माणि	=	नित्यकर्म, प्रतिदिन के कार्य
कर्तव्यानि	=	करना चाहिए
यथासाध्यम्	=	जहाँ तक हो सके

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शोधनम्	=	सफाई
प्रकृष्टा	=	अच्छी
स्मरेत्	=	याद करें
स्मरणे	=	याद करने में
कालान्तरे	=	बाद में
अपेक्षते	=	अपेक्षा रखता है
अल्पमेव	=	थोड़ा ही
कालमपेक्षते	=	समय चाहता है
स्व-स्व-पाठस्य	=	अपने-अपने पाठ का
बोधमपि	=	ज्ञान भी
अल्पसमयेन	=	थोड़ा समय से
सेवया	=	सेवा से
प्रसन्नाः	=	खुश
स्वकीयम् अनुभवम्	=	अपने अनुभव को
प्रयच्छन्ति	=	प्रदान करते हैं
पाठशालायाम्	=	पाठशाला में, विद्यालय में
बहूनि कार्याणि	=	अनेक कार्य

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दीयन्ते	= दिये जाते हैं
तैः	= उन
हितमेव	= हित, कल्याण ही
कार्य-सम्पादने	= कार्य पूरा करने में
कदापि	= कभी
कुर्यात्	= करना चाहिए
यथासमयम्	= सही समय पर, जिसे जब होना चाहिए तब
प्राप्तेन आहारेण	= प्राप्त भोजन से
अल्पाहारः	= थोड़ा भोजन करनेवाला, जलपान
स्युः	= होना चाहिए
काकचेष्टा	= कौए की तरह सावधानी
वकध्यानम्	= बगुले के समान ध्यान रखना
निद्रा	= नींद
शुनः	= कुत्ते का
समा	= समान
गृहत्यागः	= घर का परित्याग
एतानि लक्षणानि	= ये लक्षण

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निरन्तरम्	=	लगातार
प्रयत्नशील:	=	प्रयासरत
दृश्यते	=	देखा जाता है
तथैव	=	वैसे ही
छात्रोऽपि	=	छात्र भी
सततमुद्यमशील:	=	लगातार काम करनेवाला
बक:	=	बगुला
क्षणिका	=	अत्यन्त कम समय तक रहनेवाली
भवेत्	=	होना चाहिए
बहुकालं यावत्	=	लम्बे समय तक
शयीत	=	सोना चाहिए
अल्पम्	=	थोड़ा
स्यात्	=	होना चाहिए
गृहस्य	=	घर का
ममत्वस्य	=	मोह का
त्यागेऽपि	=	छोड़ने पर भी
अनेन	=	इससे
तस्यानुराग:	=	उसका लगाव

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रवर्धेत	=	बढ़ना चाहिए
निरूपिता	=	प्रकट की गई

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः/पदविच्छेदः –

इत्यपि	=	इति + अपि (यण्सन्धिः)
तस्यैव	=	तस्य +एव (वृद्धिसन्धिः)
नामान्तरम्	=	नाम + अन्तरम् (दीर्घसन्धिः)
अस्यार्थः	=	अस्य + अर्थः (दीर्घसन्धिः)
अध्ययनमेव	=	अध्ययनम् +एव
आयुर्विदः	=	आयुः + विदः (विसर्गसन्धिः)
शरीरमपि	=	शरीरम् + अपि
प्रातरेव	=	प्रातः + एव (विसर्गसन्धिः)
सहाध्यायिनाम्	=	सह + अध्यायिनाम् (दीर्घसन्धिः)
कदापि	=	कदा + अपि (दीर्घसन्धिः)
कालान्तरे	=	काल + अन्तरे (दीर्घसन्धिः)
अल्पाहारः	=	अल्प + आहारः (दीर्घसन्धिः)
छात्रोऽपि	=	छात्रः + अपि (विसर्गसन्धिः)
तस्यानुरागः	=	तस्य + अनुरागः (दीर्घसन्धिः)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः -

छादयति	=	√छद् + णिच्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
कथ्यते	=	√कथ् + कर्मवाच्य, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
उच्यते	=	√वच् , कर्मवाच्य, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
गृह्णन्ति	=	√ग्रह् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
जागृयुः	=	√जागृ , विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
प्रकाशते	=	प्र + √काश् , आत्मनेपदी, लट्लकारः
कथयन्ति	=	√कथ् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
शुष्यति	=	√शुष् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
जायते	=	√जन् , आत्मनेपदी, लट्लकारः, एकवचनम्
कर्तव्यम्	=	√कृ + तव्यत्, एकवचनम्
करणीयम्	=	√कृ + अनीयर्, एकवचनम्
प्रकृष्टा	=	प्र + √कृष् + क्त, स्त्री०, एकवचनम्
कुर्वन्ति	=	√कृ , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
दीयन्ते	=	√दा + कर्मवाच्य, आत्मनेपदी, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
शयीत	=	√शीङ् + विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत –

गुरोः, कथ्यते, सम्बन्धेन, शिष्येण, यावत्, दिनचर्या, छात्रचर्या, ब्राह्ममुहूर्ते, अल्पाहारः, काकचेष्टा ।

2. निम्नलिखितानां पदानाम् एकवचनरूपं वदत –

गुरोः, शब्दौ, सन्ति, कुर्वन्ति, प्रयच्छन्ति, भवन्ति, स्तः ।

लिखितः

1. एकपदेन उत्तरत –

(क) छात्रः गुरोः दोषान् किं करोति ?

(ख) विद्यार्थी, शिक्षार्थी इति कस्य नामान्तरम् ?

(ग) 'चर्या' शब्दः कस्मात् धातोः निष्पन्नः ?

(घ) छात्रस्य जीवनचर्या किंरूपा ?

(ङ) छात्राः कदा जागृयुः ?

2. सन्धि-विच्छेदं पदच्छेदं वा कुरुत –

(क) कालान्तरे = ...

(ख) कदापि = ...

(ग) अल्पाहारः = ...

(घ) विद्यार्थी = ...

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ङ) त्यागेऽपि - ....

3. संस्कृतभाषायां वाक्यनिर्माणं कुरुत -

काकः, आलस्यम्, विद्यार्थी, इव, अध्ययनम्

4. प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत -

कर्तव्यम्, शुध्यति, करणीयम्, भवति, कुर्यात्

5. कोष्ठात् उचितं शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

तपः, लक्षणानि, छात्राणां, पूर्वम्, प्रकाशते

(क) एतानि छात्राणां .... सन्ति ।

(ख) अतः प्रातरेव जागरणं .... कर्तव्यम् ।

(ग) छात्राणाम् अध्ययनं .... ।

(घ) ब्राह्मे मुहूर्ते जागरणेन बुद्धिः सम्यक् .... ।

(ङ) सूर्योदयात् पर्याप्तं .... जागृयुः ।

◆◆◆

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

व्याकरणं रचना च

(क) सन्धिः – हलृसन्धिः, विसर्गसन्धिः

(अ) हलृसन्धिः (व्यञ्जनसन्धिः) :

हल् (व्यञ्जन) के बाद स्वर या व्यञ्जन के आने पर व्यञ्जन में जो विकार (परिवर्तन) होता है उसे हल् सन्धि कहते हैं। यहाँ इस सन्धि के कुछ प्रमुख सूत्र सरल भाषा में समझाये जाते हैं।

1. स्तोः श्चुना श्चुः – स् तथा तवर्ग (तु) के स्थान में श् तथा चवर्ग हो जाता है यदि इनका योग श् और चवर्ग से हो।

उदाहरण – स् का श् – रामस् (रामः) + चकार = रामश्चकार

रवेः (रवेस्) + छटा = रवेश्छटा।

त् का च् – उत् + चारणम् = उच्चारणम्।

द् का ज् – तद् + जलम् = तज्जलम्।

उत् (उद्)+ज्वलः = उज्ज्वलः।

न् का ञ् – शत्रून् + जयति = शत्रूञ्जयति।

त् का च् – तत् + शास्त्रम् = तच्छास्त्रम्।

(यहाँ श् का छ् शश्छोऽटि से हो गया है)

2. झलां जशोऽन्ते – वर्ग के प्रथम वर्ण (क् च् ट् त् प्) का तृतीय वर्ण (ग् ज् ड् द् ब्) हो जाता है यदि बाद में स्वर वर्ण अथवा वर्ग का तृतीय वर्ण, चतुर्थ वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् रहे।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उदाहरण - दिक् + अम्बर: = दिगम्बर:

वाक् + ईश: = वागीश:

अच् + अन्त: = अजन्त:

षट् + आनन: = षडानन:

जगत् + ईश: = जगदीश:

सुप् + अन्त: = सुबन्त:

तत् + यश: = तद्यश:

दिक् + गज: = दिग्गज:

3. **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा** - वर्ग के प्रथम वर्ण का विकल्प से तृतीय या पञ्चम वर्ण हो जाता है यदि बाद में पञ्चम वर्ण आये । जैसे -

दिक् + नाग: = दिग्नाग:, दिङ्नाग:

(टिप्पणी - यद्यपि व्याकरण की दृष्टि से तृतीय और पञ्चम दोनों वर्णों का विधान है किन्तु व्यवहार में पञ्चम वर्ण ही प्रयुक्त होता है ।)

उत् + नति: = उन्नति:

षट् + मुख: = षण्मुख:

प्राक् + मुख: = प्राङ्मुख: (पूर्व मुँह वाला)

जगत् + नाथ: = जगन्नाथ:

सत् + मित्रम् = सन्मित्रम्

4. **तोर्लि** - तवर्ग के बाद ल आये तो तवर्ग का भी ल् हो जाता है । जैसे -

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तत् + लाभः = तल्लाभः

तद् + लक्षणम् = तल्लक्षणम्

महान् + लाभः = महाँल्लाभः

विपद् + लवः = विपल्लवः (विपत्ति का अल्पमात्र)

5. मोऽनुस्वारः – पद के अन्त में अवस्थित म् का अनुस्वार हो जाता है यदि बाद में कोई व्यञ्जन रहे । जैसे –

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे

सम् + वादः = संवादः

प्रियम् + वदा = प्रियंवदा

(यदि पदान्त म् के बाद वर्गों के वर्ण हों – क् से लेकर म् तक – तो उन वर्गों का अन्तिमाक्षर भी हो जाता है) । जैसे –

शम् + करः = शङ्करः

गृहम् + जगाम = गृहञ्जगाम

(पद के भीतर यह अनिवार्य है ।)

6. शश्छोऽटि – तवर्ग के बाद श् का छ् हो जाता है यदि उस श् के बाद कोई स्वर वर्ण हो । जैसे –

तत् + शिवः = तच्छिवः

तत् + शास्त्रम् = तच्छास्त्रम्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

महान् + शब्दः = महाञ्छब्दः

धावन् + शशः = धावञ्छशः

7. खरि च – वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण का प्रथम वर्ण हो जाता है यदि बाद में वर्ग का प्रथम या द्वितीय वर्ण हो अथवा श् ष् स् हो ।

जैसे –

दिग् + पालः = दिक्पालः

विपद् + कालः = विपत्कालः

सम्पद् + समयः = सम्पत्समयः

(आ) विसर्गसन्धिः

विसर्ग का परिवर्तन यदि स्वर या व्यञ्जन के संयोग से होता है, तो इसे विसर्ग सन्धि कहते हैं इसके कुछ प्रमुख सूत्र दिये जाते हैं ।

1. विसर्जनीयस्य सः – खर् प्रत्याहार के पूर्व विसर्ग का स् हो जाता है किन्तु यह केवल त् थ् के पूर्व ही होता है । च् छ् के पूर्व उस स् का श् और ट् ठ् के पूर्व उसका ष् होता है । जैसे –

रामः + तिष्ठति = रामस्तिष्ठति

इतः + ततः = इतस्ततः

नद्याः + तीरम् = नद्यास्तीरम्

गौः + चलति = गौश्चलति

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः

2. हशि च – अकार के बाद रु (स् या विसर्ग) का "उ" हो जाता है यदि बाद में हश् प्रत्याहार (ह् य् व् र् ल्, वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण) के वर्ण आयें। बाद में अ + उ = ओ हो जाता है। जैसे –

मनः + रथः = मनोरथः

सरः + वरः = सरोवरः

यशः + धनः = यशोधनः

पुरः + हितः = पुरोहितः

रामः + गच्छति = रामो गच्छति

तपः + वनम् = तपोवनम्

3. अतो रोरप्लुतादप्लुते – अकार के बाद रु (स् या विसर्ग) का 'उ' कार हो जाता है यदि बाद में अ हो। यहाँ अ + उ = ओ हो जाता है तथा स्वरसन्धि के पूर्वरूप एकादेश के अनुसार ओ ही बच जाता है। जैसे –

रामः + अस्ति = रामोऽस्ति

बालकः + अयम् = बालकोऽयम्

सिंहः + अपि = सिंहोऽपि

सः + अवदत् = सोऽवदत्

4. रो रि – विसर्ग के स्थान में आए हुए र् का लोप हो जाता है यदि बाद में भी र्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हो । ऐसी स्थिति में विसर्ग के पूर्ववर्ती स्वर का दीर्घ हो जाता है । जैसे -

निः + रवः = नीरवः

निः + रोगः = नीरोगः

पुनः + रमते = पुनारमते

शम्भुः + राजते = शम्भू राजते

अभ्यासः

1. निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या करें -

झलां जशोऽन्ते, हशि च, मोऽनुस्वारः, तोर्लि, खरि च, रो रि ।

2. निम्नलिखित पदों का सन्धिविच्छेद करें -

रामस्तिष्ठति, धनुष्टंकारः, उन्नतिः, जगन्नाथः, सन्मित्रम्, शङ्करः, तच्छिवः, मनोरथः, दिग्गजः, वागीशः ।

3. हल् सन्धि किसे कहते हैं ? सोदाहरण लिखें ।

4. विसर्ग सन्धि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखें ।

5. निम्नलिखित पदों की सन्धि करें -

अच् + अन्तः = ... ।

षट् + आननः = ... ।

तत् + यशः = ... ।

इतः + ततः = ... ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गौः + चलति = ... ।

सरः + वरः = ... ।

पुरः + हितः = ... ।

तपः + वनम् = ... ।

सः + अवदत् = ... ।

निः + रोगः = ... ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ख) शब्दरूपाणि

सकारान्त 'विद्वस्' (विद्वान्)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पंचमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः !

'अस्मद्' (मैं) शब्द

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

'युष्मद्' (तुम) शब्द

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

'किम्' (कौन, क्या)

पुंल्लिंग

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

'किम्' (कौन, क्या)

स्त्रीलिंग

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

'किम्' (कौन, क्या)

नपुंसकलिंग

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

'इदम्' (यह)

पुंल्लिंग

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

'इदम्' (यह)

स्त्रीलिंग

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

'इदम्' (यह)

नपुंसकलिंग

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

(ग) धातुरूपाणि

कृ धातु (करना, to do) परस्मैपदी

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चि धातु (चुनना) परस्मैपदी

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति
मध्यम पुरुष	चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ
उत्तम पुरुष	चिनोमि	चिनुवः, चिन्वः	चिनुमः, चिन्मः

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ
उत्तम पुरुष	चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतनभूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
मध्यम पुरुष	अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत
उत्तम पुरुष	अचिनवम्	अचिनुव, अचिन्व	अचिनुम, अचिन्म

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः
मध्यम पुरुष	चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात
उत्तम पुरुष	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु
मध्यम पुरुष	चिनु	चिनुतम्	चिनुत
उत्तम पुरुष	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम

'प्रच्छ्' = पूछना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लङ्लकारः (अनद्यतनभूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

'ग्रह्' धातु (लेना, to take) (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गृह्णाति	गृह्णीत:	गृह्णन्ति
मध्यम पुरुष	गृह्णासि	गृह्णीथ:	गृह्णीथ
उत्तम पुरुष	गृह्णानि	गृह्णीव:	गृह्णीम:

लृट्लकार: (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यत:	ग्रहीष्यन्ति
मध्यम पुरुष	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथ:	ग्रहीष्यथ
उत्तम पुरुष	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्याव:	ग्रहीष्याम:

लङ्लकार: (अनद्यतनभूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
मध्यम पुरुष	अगृह्णा:	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उत्तम पुरुष	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
मध्यम पुरुष	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उत्तम पुरुष	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
मध्यम पुरुष	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उत्तम पुरुष	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

हन् = मारना, पीटना (to kill, assault)

लट्लकारः (परस्मैपदी) वर्तमान काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हंसि	हथ	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लृट्लकार: (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लङ्लकार: (अनद्यतनभूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लोट्लकार: (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(घ) कारकाणि

1. **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** – कर्ता किसी कर्म के द्वारा जिस वस्तु या व्यक्ति को संयोजित करता है (अभिप्रैति) वह सम्प्रदान है। जिसके उद्देश्य से कोई क्रिया होती है वह सम्प्रदान है। जैसे –

विप्राय गां ददाति। विप्र के उद्देश्य से गाय (कर्म) को दिया जा रहा है। शिशवे कथां कथयति। मूर्खाय उपदेशो न दातव्यः। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है (चतुर्थी सम्प्रदाने)। इसीलिए यहाँ चतुर्थी विभक्ति लगी है।

2. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः** – रुचि (अनुराग या प्रीति) के अर्थ वाली क्रियाओं के प्रयोग में प्रसन्न होने वाला व्यक्ति सम्प्रदान कहा जाता है। अतः उससे भी चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे – बालकाय मोदकः रोचते (लड़के को मिठाई अच्छी लगती है)। नारदाय कलहः रोचते (नारद को विवाद पसन्द है)।

3. **ध्रुवमपायेऽपादानम्** – विच्छेद की स्थिति में जहाँ से विच्छेद आरम्भ होता है उस स्थान को अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे –

वृक्षात् पतति पत्रम्। यह अपादान कभी-कभी अस्थिर भी हो सकता है। जैसे – धावतः अश्वात् पतति। यहाँ दौड़ता हुआ घोड़ा अपादान है क्योंकि वहीं से विच्छेद आरम्भ हो रहा है। अन्य उदाहरण – अहं ग्रामात् आगतः अस्मि।

4. **भीत्रार्थानां भयहेतुः** – भय और त्राण (रक्षा) अर्थ वाली क्रियाओं के प्रयोग में भय का हेतुरूप कारक अपादान है। उससे पञ्चमी विभक्ति होती है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जैसे -

चौरात् भीतः अस्ति (चोर से डरा हुआ है)।

धर्मः नरकात् त्रायते। ज्ञानं पापात् रक्षति।

5. आख्यातोपयोगे - आख्याता = उपदेशकः। उपयोगः = नियमपूर्वक-विद्या-स्वीकारः।

यदि नियमपूर्वक उपदेश ग्रहण करने का अर्थ हो तो उपदेशक को अपादान कारक कहा जाता है। इसलिए इससे पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे - शिक्षकात् व्याकरणं शृणोति। उपाध्यायात् अधीते। कभी-कभी सुनने का अर्थ हो (नियमपूर्वक नहीं) तो षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध सामान्य के कारण) होती है। जैसे - नटस्य गाथां शृणोति (नट से लोकगीत सुनता है)।

6. षष्ठी शेषे - कारकों तथा प्रातिपदिकार्थ से भिन्न स्व-स्वामिभाव आदि सम्बन्ध को 'शेष' कहा गया है (उक्तादन्यः शेषः)। इसलिए सम्बन्ध सामान्य में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे -

राज्ञः पुत्रः (राजा का पुत्र)। रामस्य कथा (राम की कथा)।

मूर्खस्य उपहासः। दुग्धस्य माधुर्यम् (दूध की मिठास)।

7. कर्तृकर्मणोः कृति - कृत् प्रत्यय से बने हुए शब्द (कृदन्त शब्द) का प्रयोग हो तो उसके कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे - दुग्धस्य पानम्। यहाँ पान शब्द कृदन्त है, उसके कर्म दुग्ध से षष्ठी लगी है। आचार्यस्य अध्यापनम्। यहाँ कर्ता आचार्य से षष्ठी है। संसारस्य गतिः (यहाँ कर्ता संसार में षष्ठी है)।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

8. **यतश्च निर्धारणम्** – जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा द्वारा किसी एक को पूरे समुदाय से पृथक् करना "निर्धारण" कहलाता है । ऐसे निर्धारण अर्थ में समुदायवाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है । जैसे – नराणां नरेषु वा क्षत्रियः शूरतमः (जाति द्वारा पृथक्करण) । गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा (यहाँ गुण द्वारा निर्धारण है कि गायों में काली गाय बहुत दूध देती है) ।

9. **सप्तम्यधिकरणे च** – अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है । अधिकरण एक पारिभाषिक शब्द है । व्याकरण में क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं । क्रिया का आधार वस्तुतः उसके कर्ता या कर्म का आधार होता है । इसलिए कर्ता और कर्म साधनरूप माने जाते हैं । जैसे – वृक्षे वानरः तिष्ठति । यहाँ वानर (कर्ता) का आधार वृक्ष है । स्थाल्याम् ओदनं पचति । यहाँ ओदन (कर्म) का आधार स्थाली (बटलोही) है ।

अभ्यासः

1. **निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या करें –**

   रुच्यर्थानां प्रीयमाणः, भीत्रार्थानां भयहेतुः, षष्ठी शेषे, यतश्च निर्धारणम्, सप्तम्यधिकरणे च ।

2. **अधोरेखाङ्कित पदों की विभक्ति का निर्णय करें –**

   विप्राय धनं ददाति । प्रासादात् चौरः पतितः । मह्यं फलं रोचते । रक्ष मां दुष्टात् । निबन्धस्य लेखनम् । कविषु कालिदासः श्रेष्ठः । पफलस्य माधुर्यम् ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. सुमेलन करें –

(क) नराणां क्षत्रियः शूरतमः — (अ) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ।

(ख) रामाय पफलं रोचते — (आ) ध्रुवमपायेऽपादानम्

(ग) शिक्षकात् अधीते — (इ) भीत्रार्थानां भयहेतुः

(घ) चौरात् बिभेति — (ई) आख्यातोपयोगे

(ङ) सः वृक्षात् पतति — (उ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

(च) भिक्षुकाय वस्त्रं ददाति — (ऊ) यतश्च निर्धारणम्

(ङ) प्रत्ययाः

शब्दों से बाद में जोड़े जाने वाले शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं । प्रातिपदिकों से सुप् प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय तथा स्त्रीप्रत्यय जोड़े जाते हैं । धातुओं से तिङ् प्रत्यय तथा कृत् प्रत्यय जुड़ते हैं । यहाँ जिन प्रत्ययों को हम पढ़ेंगे वे कृत्, तद्धित तथा स्त्रीप्रत्यय हैं ।

1. कृत् प्रत्ययों में यहाँ तव्यत्, अनीयर्, शतृ और शानच् निर्धारित हैं । ये धातुओं से लगते हैं । तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय 'चाहिए' 'योग्यता' के अर्थ में होते हैं ।

जैसे - पठ् + तव्यत् = पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए या पढ़ने योग्य)

इसका प्रयोग निम्न वाक्यों में देखें -

अस्माभिः व्याकरणं पठितव्यम् (हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए) ।

इदं पुस्तकं पठितव्यम् अस्ति (यह पुस्तक पढ़ने योग्य है) ।

अन्य उदाहरण - गम् + तव्यत् = गन्तव्यम् (जाना चाहिए)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

श्रु + तव्यत् = श्रोतव्यम् (सुनना चाहिए)

भुज् + तव्यत् = भोक्तव्यम् (खाने योग्य या खाना चाहिए)

दृश् + तव्यत् = द्रष्टव्यम् (देखने योग्य या देखना चाहिए)

वच् + तव्यत् = वक्तव्यम् (कहने योग्य या कहना चाहिए)

हन् + तव्यत् = हन्तव्यम् (मारने योग्य या मारना चाहिए)

यह प्रत्यय विशेषण के रूप में होता है। इसलिए सभी लिंगों और वचनों में इसके रूप होते हैं। जैसे –

पठितव्यं पुस्तकम्, पठितव्या कथा, पठितव्यः ग्रन्थः।

इसी अर्थ में अनीयर् प्रत्यय भी होता है।

उदाहरण – पठ् + अनीयर् = पठनीयम्।

कृ + अनीयर् = करणीयम् (करने योग्य)।

शी + अनीयर् = शयनीयम् (सोने योग्य या शय्या)।

पूज + अनीयर् = पूजनीयम्, पूजनीयः, पूजनीया।

कथ + अनीयर् = कथनीयम्, कथनीयः, कथनीया।

ग्रह + अनीयर् = ग्रहणीयम्, ग्रहणीयः, ग्रहणीया।

शतृ और शानच् – ये दोनों वर्तमान काल के बोधक प्रत्यय हैं। इनका अर्थ 'करते हुए', 'कहते हुए' इत्यादि होता है। इन दोनों में अन्तर यही है कि शतृ प्रत्यय केवल परस्मैपदी धातुओं से होता है। दूसरी ओर शानच् प्रत्यय केवल आत्मनेपदी धातुओं से होता है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दोनों ही विशेषण के रूप में शब्दनिर्माण करते हैं, इसलिए सभी लिंगों में इनके रूप होते हैं। जैसे -

गम् + शतृ = गच्छन् (पुं॰), गच्छत् (नपुं॰), गच्छन्ती (स्त्री॰)

अर्थ है - जाता हुआ, जाती हुई।

उदाहरण - पठ् + शतृ = पठन्, पठन्ती (यह ङीप् प्रत्यय से बना है)।

दृश् + शतृ = पश्यन्, पश्यन्ती (देखती हुई)।

कथ + शतृ = कथयन्, कथयन्ती।

धाव् + शतृ = धावन्, धावन्ती।

लभ् + शानच् = लभमानः (पाता हुआ), लभमाना (स्त्री॰)

सह् + शानच् = सहमानः (सहता हुआ), सहमाना (सहती हुई)

वृत् + शानच् = वर्तमानः, वर्तमाना

विद् + शानच् = विद्यमानः, विद्यमाना

वृध् + शानच् = वर्धमानः, वर्धमाना (बढ़ती हुई)

शी + शानच् = शयानः, शयाना (सोती हुई)

मतुप् प्रत्यय - यह तद्धित प्रत्यय है, इसलिए प्रातिपदिक से लगता है। इसका अर्थ है - धारण करने वाला। इसमें मत् या वत् बचता है। इसके भी तीनों लिंगों में रूप होते हैं क्योंकि इससे बने शब्द विशेषण होते हैं। जैसे - गुण + मतुप् = गुणवत् (नपुं॰), गुणवान् (पुं॰), गुणवती (स्त्री॰) (गुणधारण करनेवाला/वाली)।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उदाहरण - धन + मतुप् = धनवान् (पुं०), धनवती (स्त्री०)

श्री + मतुप् = श्रीमान्, श्रीमती

शक्ति + मतुप् = शक्तिमान्, शक्तिमती

रूप + मतुप् = रूपवान्, रूपवती

ठक् प्रत्यय - यह भी तद्धित प्रत्यय है । अतः प्रातिपदिक से लगता है । "से सम्बद्ध" इस अर्थ में यह प्रत्यय लगता है । इस प्रत्यय का "इक" रूप हो जाता है (ठस्येकः) ।

उदाहरण - संसार + ठक् = सांसारिकम् (संसार से सम्बद्ध)

परिवार + ठक् = पारिवारिकम्

वेद + ठक् = वैदिकम्

साहित्य + ठक् = साहित्यिकम्

इस प्रत्यय से बने शब्द तीनों लिंगों में होते हैं । जैसे -

भौतिकम्, भौतिकः, भौतिकी (भूत + ठक्) ।

टाप् प्रत्यय - यह स्त्रीप्रत्यय है । प्रातिपदिकों से यह स्त्रीलिंग का बोध कराने के लिए लगता है । इसमें "आ" बचता है ।

उदाहरण - बाल + टाप् = बाला (लड़की)

अज + टाप् = अजा (बकरी)

अश्व + टाप् = अश्वा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सुशील + टाप् = सुशीला

मनोहर + टाप् = मनोहरा

मधुर + टाप् = मधुरा

प्रथम + टाप् = प्रथमा

ज्येष्ठ + टाप् = ज्येष्ठा

पाठक + टाप् = पाठिका

सेवक + टाप् = सेविका

नायक + टाप् = नायिका

ङीप् प्रत्यय – यह भी स्त्रीप्रत्यय है । अतः प्रातिपदिक शब्दों से लगता है । इसमें 'ई' बचता है । कई प्रकार के शब्दों से यह लगाया जाता है । जैसे –

1. नकारान्त शब्द से – कारिन् + ङीप् = कारिणी (करने वाली)

ग्राहिन् + ङीप् = ग्राहिणी (ग्रहण करने वाली)

शोभिन् + ङीप् = शोभिनी (शोभायुक्त)

धनिन् + ङीप् = धनिनी

गृहिन् + ङीप् = गृहिणी

यशस्विन् + ङीप् = यशस्विनी

2. ऋकारान्त शब्द से – धातृ + ङीप् = धात्री (धारण करने वाली)

दातृ + ङीप् = दात्री (देने वाली)

कर्तृ + ङीप् = कर्त्री (करने वाली)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. वत्-मत् वाले शब्द से- श्रीमत् + ङीप् = श्रीमती

गुणवत् + ङीप् = गुणवती

कृतवत् + ङीप् = कृतवती (किया)

गतवत् + ङीप् = गतवती (गयी)

बुद्धिमत् + ङीप् = बुद्धिमती

अभ्यासः

1. प्रत्यय किसे कहते हैं ? तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय से बने कुछ शब्दों को लिखें ।
2. शतृ और शानच् प्रत्ययों में क्या अन्तर है ?
3. स्त्रीप्रत्यय किसे कहते हैं ? टाप् और ङीप् प्रत्ययों से बने कुछ पदों को लिखें ।
4. रिक्त स्थान की पूर्ति करें -

भवन् = भू + ... ।

कथयन्ती = कथ + ... ।

.... = शी + शानच् ।

धनवान् = धन + ... ।

रूपवती = रूप + ... ।

.... = वेद + ठक् ।

* * *

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

.... = साहित्य + ठक् ।

.... = अज + टाप् ।

पठनीयम् = पठ् + ...

कथनीयम् = ... + ... ।

.... = हन् + तव्यत् ।

द्रष्टव्यम् = ... + ... ।

5. निम्नलिखित पदों का प्रकृति–प्रत्यय–विभाग करें –

गन्तव्यम् = ... ।

शयनीयम् = ... ।

गच्छन्ती = ... ।

धावन्ती = ... ।

कर्त्री = ... ।

शयाना = ... ।

रूपवान् = ... ।

सांसारिकम् = ... ।

भौतिकः = ... ।

पारिवारिकम् = ... ।

नायिका = ... ।

ज्येष्ठा = ... ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निबन्धाः

1. बिहारस्य विशिष्टता

भारतस्य राज्येषु बिहारराज्यम् अन्यतमम् अस्ति । प्राचीनकाले बौद्धानां बहवो विहाराः अस्मिन क्षेत्रे आसन् । ततः एवास्य नामेदं बभूव । अस्मिन् प्रदेशे भगवान् बुद्धः निर्वाणं प्राप्तवान् । तस्य कर्मक्षेत्रम् अत्रैव मुख्यतः आसीत् । अपि च जैनतीर्थंकरः महावीरः इहैव वैशाल्याम् अजायत, अत्रैवास्य निधनं पावापुरीनामके स्थाने जातम् । किञ्च सिखधर्मगुरोः गोविन्दसिंहस्य जन्म पटनानगरेऽभवत् । गयानगरं प्रसिद्धं धर्मस्थलमपि बिहारे वर्तते । बिहारस्य राजधानी पटनानगरे वर्तते । बिहारस्य जनाः कर्मठाः सरलप्रकृतयः च सन्ति । अस्य राज्यस्य भूमिः उर्वरा नदीजलैः सिक्ता भवति । गङ्गा नदी प्रदेशस्य मध्ये पश्चिमतः पूर्वां दिशं वहति । तस्याः सहायिकाः अनेका नद्यः गण्डकी, बागमती, कोशी, शोणः पुनः-पुना इत्यादयो वामतो दक्षिणतो वा तस्यां पतन्ति । राज्येऽस्मिन् अशोकः, समुद्रगुप्तः, शेरशाहः इत्यादयः प्रसिद्धाः नृपतयो बभूवुः । आधुनिकयुगे राजेन्द्रप्रसादः, जयप्रकाशनारायणः इत्यादयो नेतारो जाताः ।

2. संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संसारस्य वर्तमानासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा वर्तते । सर्वाङ्गपूर्णेयं भाषा । अस्याम् एकैकस्य वर्णस्य व्याख्या भवति । व्याकरणपुष्टा साहित्यराशिपरिपूर्णा भाषेयं स्वस्थिरतया अमरभाषा सुरभारती देवभाषा वा कथ्यते । प्रायेण चतुःसहस्रवर्षेभ्यः इयं प्रचलिता वर्तते । अस्या भाषाया रूपद्वयं वर्तते-वैदिकं लौकिकं च । वैदिकरूपे वेदाः उपनिषदश्च वर्तन्ते । लौकिके रूपे रामायणं महाभारतं काव्य-नाटक-गद्यादीनि सन्ति । इह शब्दसम्पत्तिर्विशाला, नूतनाः शब्दाः अपि निर्मातुं शक्यन्ते । भाषाविज्ञानदृष्ट्या इयं भाषा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

महत्त्वपूर्णा गण्यते । अस्या एव भारतस्य अनेका भाषा निर्गता: । काश्चन अस्या: प्रभावं स्वीकुर्वन्ति । किञ्च यूरोपीय-ईरानीभाषाश्च सर्वा: संस्कृतभाषया पारिवारिक-सम्बन्धेन संयुक्ता: सन्ति इति भाषाशास्त्रिण: मन्यन्ते ।

3. दीपावली

कार्तिकमासस्य अमावास्यातिथौ दीपावली-महोत्सव: भारते आयोजितो भवति । अस्मिन् महोत्सवे गृहं-गृहं स्वच्छीक्रियते, रात्रौ च गृहस्य परिसरे दीपमाला प्रज्वालिता भवति । अपूर्वं दृश्यं सर्वत्र प्रतिभाति । दीपज्वालनम् आनन्दस्य उत्कर्षं दर्शयति । रावणं विजित्य यदा राम: अयोध्यामागत:, तदा नगरवासिन: दीपान् प्रज्वाल्य हर्षं प्रकटितवन्त: । तस्मात् समयात् अयं महोत्सव: प्रतिवर्षम् आयोजितो जायते । दीपावल्या: समीपे अन्येऽपि उत्सवदिवसा: सन्ति । यथा धन्वन्तरिजयन्ती (कार्तिकत्रयोदश्यां), हनुमज्जन्मोत्सव: (चतुर्दश्याम्), नरकचतुर्दशी, लक्ष्मीपूजनम्, अन्नकूट:, गोवर्धनपूजा, चित्रगुप्तपूजा - यमद्वितीया चेति । एवं दीपावली वस्तुत: उत्सवावली वर्तते ।

4. परोपकार:

परोपकार: मानवस्य महान् गुण: वर्तते । अनेन मानवस्य सामाजिकता सिध्यति । परस्य हिताय कृतं कर्म परोपकार: इति कथ्यते । स्वकीयं सुखं तु सर्वे प्राणिनो वाञ्छन्ति किन्तु परस्य सुखं कामयमान: पुरुष: वास्तविक: पुरुष: । आत्मन: हितमपि विहाय परस्य सेवाकरणे निरता: जना: धन्या: कथ्यन्ते, सर्वे तान् कालान्तरे देशान्तरे च स्मरन्ति । अयं दैविको गुण: वर्तते । परोपकारं विना क्षणमपि समाज: देश: वा न तिष्ठेत् । तदा समाजस्य देशस्य च कल्पनैव न भवेत् । अचेतना अपि परोपकारव्रते लग्ना: सन्ति । नद्य: परस्यार्थे जलं वहन्ति, वृक्षा: परस्यार्थे फलानि प्रयच्छन्ति । मेघा: अपि भूमे: हिताय वर्षन्ति । अत:

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कथ्यते "परोपकाराय सतां विभूतय:" । संसारस्य सर्वेषु धर्मेषु परोपकारस्य प्रशंसा अनिवार्यता च दर्शिता ।

5. छात्रजीवनम्

मानवस्य जीवनकाले प्रथम: काल: छात्रजीवनम् । अस्मिन् समये मनुष्य: ज्ञानार्जनं बलार्जनञ्च करोति । अपि च अनुशासनं प्रति अस्य प्रवृत्ति: उत्पाद्यते । छात्रावस्थायां गुरो: महत्त्वं भवति । गुरु: शिक्षालये छात्रं समुचितान् विषयान् शिक्षयति । तेषु छात्रस्य गति: भवति । किञ्च छात्रजीवने योग्यतानुसारेण शारीरिक: श्रम: अपि शिक्ष्यते । प्राचीनकाले छात्रा: गुरुगृहं गत्वा तत्र निवसन्ति स्म । एतेन सहजीवनस्य शिक्षा लभ्यते स्म । छात्रजीवने प्राप्तम् अनुशासनम् आजीवनं लाभप्रदं भवति । अस्मिन् काले स्मृतिशक्ति: तीक्ष्णा भवति । अत: ज्ञातव्यविषयाणाम् अभ्यास: फलीभूतो जायते । छात्रा: निर्धारितानां नियमानां गृहे पाठशालायां च पालनं कुर्वन्ति चेत् तेषां जीवनं सुखदं सफलं च भविष्यति।

6. गणतन्त्रदिवस:

1950 ई॰ वर्षे जनवरीमासस्य षड्विंशतितमे दिवसे भारतवर्षस्य नवीनं संविधानं कार्यरूपेण प्रारभत । तदनुसारेण अस्माकं देश: गणतन्त्रराज्यमिति अभवत् । तस्मिन् राष्ट्रपतिपदस्य व्यवस्था जाता । अस्माकं प्रथमो राष्ट्रपति: डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद: आसीत् । तदनन्तरं प्रतिवर्षं जनवरीमासस्य षड्विंशतितम: दिवस: गणतन्त्रदिवस: इति आयोजितो भवति । महान् उत्सव: तस्मिन् दिने दृश्यते । राजधान्यां दिल्लीनगर्यां भारतीयसैन्यविभागस्य प्रदर्शनं राष्ट्रस्य महत्त्वं दर्शयति । राष्ट्रपति: तेषां सैनिकानाम् अभिवादनं स्वीकरोति । बहवो जना: दर्शका: तद्दृश्यं पश्यन्ति । अपरे च दूरदर्शनद्वारा अवलोकयन्ति । सम्पूर्णे भारते शिक्षालयेषु नानासंस्थासु च अयमुत्सव: आयोज्यते । कश्चिद् गणमान्य: सभां संबोधयति । वस्तुत: देशस्य गौरववर्धक: अयं दिवस: ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

7. उद्यानभ्रमणम्

उद्याने प्रकृतिः स्वरूपे वर्त्तमाना दृश्यते । नगरेषु उद्यानानि स्वास्थ्यपूर्णानि स्थलानि भवन्ति । तत्र वृक्षाः लताः वनस्पतयश्च पुष्पैः सर्वान् आकर्षयन्ति । क्वचित् जलपूर्णः सरोवरः अपि वर्तते । उद्यानेषु प्रातःकाले सायंकाले च नगरवासिनः यथाशक्ति भ्रमन्ति, स्वास्थ्यलाभं च कुर्वन्ति । उद्यानेषु भ्रमणाय संकीर्णाः मार्गाः कृताः भवन्ति । तान् उभयतः पुष्पिताः वनस्पतयः सौरभं दत्त्वा जनान् प्रमुदितान् कुर्वन्ति । उद्यानभ्रमणेन शुद्धः वायुः श्वासग्रहणाय लभ्यते । अतः उद्यानानि नगरस्य प्राणाः इति कथ्यन्ते । उद्यानेषु नाना पक्षिणः अपि निवसन्ति, तेन पर्यावरणस्य रक्षा भवति । पर्यावरणं शुद्धं भवेत् इति नागरिकाणां परमं कर्तव्यम् । नगरे-नगरे खण्डे-खण्डे च उद्यानानि निर्मातव्यानि । तत्र च सर्वथा निर्मलतायाः रक्षा कर्तव्या ।

8. विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः

अस्माकं विद्यालयः नगरे (ग्रामे) वर्तते । विद्यालये शिक्षायाः प्रकृष्टा व्यवस्था वर्तते । शिक्षकाः छात्राश्च परस्परं सहयोगिनः सन्ति । प्रतिवर्षं विद्यालये वार्षिकोत्सवः आयोजितः भवति । तदा एकः विशालः वितानः क्रियते । तत्र सभाध्यक्षः, अतिथिः प्रधानाध्यापकः, उद्घोषकश्च सर्वे आसीनाः भवन्ति । अन्येषां जनानां कृते आसनव्यवस्था वितानस्य निम्नभागे क्रियते । वार्षिकोत्सवे वार्षिकं प्रतिवेदनं विद्यालयस्य नवीना उपलब्धिश्च प्रस्तूयेते । मान्यः अतिथिः स्वभाषणे विद्यालयविषये स्वानुभवान् प्रकाशयति । सभापतिः अध्यक्षीयं वक्तव्यं प्रस्तौति । कार्यक्रमे छात्राः सांस्कृतिकं कार्यक्रमं प्रस्तुवन्ति । तेन सर्वेषां मनोरञ्जनं जायते । पुरस्कारवितरणं च क्रियते । अन्ततः सर्वेभ्यः मिष्टान्नवितरणं क्रियते ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पत्रलेखनम्

1. परीक्षायां साफल्यविषये -

(स्थाननाम)

दिनाङ्कः ....

पूज्यवर्येषु पितृचरणेषु

सादरं प्रणतयः ।

अहमत्र सर्वथा सकुशलः । तथापि सर्वे कुशलिनः सन्तीति वर्तते मम विश्वासः । विशेषतः इदमेव सूचयितुं पत्रमिदं लिखामि यत् मम कक्षायाः परीक्षापरिणामः प्रकाशितः तत्र स्वकक्षायां प्रथमं स्थानं मया लब्धम् । इदानीमधिकेन परिश्रमेणाहं पठामि । अस्मिन् वर्षे दशमकक्षायाः बोर्डपरीक्षा भविष्यति । अतएव तत्रैव उत्कृष्टपरिणामलाभाय परिश्रम अपेक्षितः अस्ति ।

मातृचरणेषु मम प्रणामाः ।

भवतामात्मजः

.... (नाम) ....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. छात्रावासजीवनविषये

(स्थाननाम)

दिनाङ्कः ....

प्रियमित्र रमेश,

सादरम् अभिवादये ।

आशा वर्तते त्वं कुशलः असि । अहम् अपि स्वस्थः प्रसन्नः अस्मि । अस्मिन् वर्षे नामाङ्कनात् पश्चात् मह्यं छात्रावासे स्थानं दत्तं विद्यालयेन । मम उत्कृष्टः परीक्षापरिणामः तस्य कारणम् । छात्रावासे मम जीवनं सुखकरं वर्तते । सर्वे सहवासिनः सहयोगिनः सन्ति। प्रतिदिनं मम अभिवादनं कुर्वन्ति कुशलं च पृच्छन्ति । अत्र अध्ययने सुविधा अस्ति, भोजनं स्वास्थ्यकरं लभ्यते, प्रकाशव्यवस्था संतोषप्रदा विद्यते ।

अन्येभ्यः मित्रेभ्यः नमस्काराः ।

तव मित्रवरः

(.........नाम.........)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. रेलयात्राविषये

(स्थाननाम)

दिनाङ्कः ....

पूज्येषु मातृचरणेषु

मम वत्सलस्य पुत्रस्य प्रणामाः ।

आशासे त्वं कुशलासि । ममापि कुशलं वर्तते । विगतमासे विद्यालयेन रेलयात्रा आयोजिता । रेलयानेन वयं पटनातः वाराणसीं गताः । रेलयानं द्रुतयानम् आसीत् । तत्र एकस्मिन् कक्षे अस्माकं स्थानानि आरक्षितानि आसन् । अतएव यात्रा सुखप्रदा । अन्येषु कक्षेषु आरक्षणाभावे महान् अव्यवस्थितश्च जनसम्मर्दः आसीत् । यत्र-यत्र यानं स्थानकेषु विरमति स्म तत्र-तत्र दृश्यानि मोहकानि आसन् । वाराणस्यां त्रीणि दिनानि स्थित्वा वयं बहूनि मनोहराणि स्थलानि अभ्रमाम ।

तव वत्सलः तनयः

.... नाम ....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. सान्त्वनापत्रम्

(स्थाननाम)

दिनाङ्कः ....

प्रियमित्र नवीन,

सस्नेहम् अभिवादनम् ।

अद्य मया श्रुतं यत् विगतपरीक्षायां तव परिणामः अनुकूलः नासीत् । तदर्थं त्वं बहु उद्विग्नः असि । प्रियवर ! अस्मिन् विषये मम निवेदनं वर्तते यत् जीवने सर्वदा सर्वथा च अनुकूलता न भवति । प्रतिकूला परिस्थितिः अपि यदा-कदा आगच्छति । तदर्थं निराशः न भवेत् । सदा परिश्रमः कर्तव्यः । परिश्रमेण प्रतिकूलतापि नश्यति । आशासे आगामिनी परीक्षा तव परिश्रमानुकूला भविष्यति । धैर्यं रक्षणीयम् । निराशा शक्तिं नाशयति । स्वमातरं पितरं च प्रति मम अभिवादनं निवेदय ।

तव अभिन्नः सखा

.... नाम ....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5. वर्धापनपत्रम्

(स्थाननाम)

दिनाङ्कः ....

प्रियानुजे शाम्भवि !

सस्नेहम् आशीर्वादः ।

अद्यैव मया ज्ञातं यत् विद्यालयस्य निबन्धप्रतियोगितायां प्रथमं पुरस्कारं त्वं प्राप्तवती वार्षिकोत्सवे च पुरस्कृतासि । समाचारपत्रे प्रकाशितः समाचारः तत् वर्णयति । एतदर्थं मम बहुशः वर्धापनं स्वीकुरु । वस्तुतः त्वं परिवारस्य स्वग्रामस्य च गौरवं वर्धितवती । आशासे यत् एतादृशं समाचारं त्वं सदा जीवने दर्शयिष्यसि । छात्रावासे स्वजीवनविषये यदा-कदा त्वं लिख । अनेके साधुवादाः ।

तवाग्रजः

.... नाम ....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

. स्वग्रामस्य समस्याविषये आवेदनपत्रम्

(ग्रामनाम)

दिनाङ्कः ....

ीमान् प्रखण्ड विकास पदाधिकारी महोदयः

.... प्रखण्डनाम ....

ः - स्वग्रामस्य समस्या

दय !

निवेद्यते यत् मम ग्रामे प्रायेण एकसहस्रजनाः निवसन्ति । ते निर्धनाः धनिकाश्च न्ति । तेषां सम्पर्कः विभिन्नैः ग्रामै नगरैश्च वर्तते । किन्तु ग्रामाद् बहिः गन्तुं मार्गः भग्नः र्तते । अनेन ग्रामजनानां गमनागमने महत् कष्टं भवति । विशेषतः वर्षासु मार्गः पङ्किलः ायते । अतः मम भवत्सकाशं सविनयं निवेदनं वर्तते यत् मार्ग-निर्माणस्य व्यवस्थां वान् करोतु । एतदर्थं सर्वे ग्रामजनाः भवतः कृतज्ञाः स्थास्यन्ति ।

भवतः विश्वासभाजनम्

.... नाम ....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना-1
BIHAR STATE TEXT BOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक : बब्लू बाईंडिंग हाउस, पटना कोल्ड स्टोरेज, शाहगंज, पटना-800 006

https://www.studiestoday.com